सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ...	... ६) रु०
छः माही चन्दा	... ५) रु०
तिमाही चन्दा ...	... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य	... ≈)

Annas Three Per Copy

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—
'भविष्य' इलाहाबाद

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार : १५ जनवरी, १९३१ | संख्या ४, पूर्ण संख्या १६

कूटनीति की बलिवेदी पर भारत का लोमहर्षण बलिदान



सर जॉन साइमन—कहो दोस्त मैक (मि० रामज़े मैकडॉनल्ड प्रधान-सचिव) क्या मेरी रिपोर्ट का दूसरा खण्ड यों ही पड़ा सड़ता रहेगा?
मि० मैकडॉनल्ड—तुम भी अजब अहमक़ हो यार! चीनी चाहे कितनी अधिक लपेटी गई हो, पर है तो कुनैन ही न? कड़वी दवा धीरे-धीरे देना ही बुद्धिमानी है, नहीं तो हिन्दोस्तानी तोते उड़ जायँगे!!

हास्यकला का चमत्कार ! हास्योपन्यासों का लकड़दादा !!

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव

छप रहा है ! की छप रहा है !!

हास्यमयी लेखनी का अलौकिक चमत्कार !



लतखोरी लाल



छः खण्डों में

यह वही उपन्यास है, जिसके लिए हिन्दी-संसार मुद्दतों से छटपटा रहा था, जिसके कुछ अंश हिन्दी-पत्रों में निकलते ही अङ्गरेज़ी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद हो गए। क्योंकि इसके एक-एक शब्द में वह जादू भरा है कि एक तरफ़ हँसाते-हँसाते पेट में बल डालता है, तो दूसरी तरफ़ नौजवानी की मूर्खताओं और गुमराहियों की खिल्ली उड़ा कर उनसे बचने के लिए पाठकों को सचेत करता है। तारीफ़ है प्लाट-बन्धन की, कि कोई भी बात, जो नवयुवकों पर अपना बुरा प्रभाव डालती है, "श्रीवास्तव जी" के कटाक्ष से बचने नहीं पाई है। हँसी-हँसी में बुराइयों की सुन्दरता और सफ़ाई से धज्जियाँ उड़ा कर ज्ञान और सुधार की धारा बहा देना, कला की गोद में शिक्षा का छिपाए हुए ले चलना बस "श्रीवास्तव जी" ही की महत्वपूर्ण लेखनी का काम है। कहीं फ़ैशन और शान की छीछालेदर है, कहीं स्कूली बदकारियों पर फटकार है, कहीं वेश्यागमन का उपहास है, कहीं एक से एक रहस्यमय गुप्त लीलाओं का इतना सच्चा, स्वाभाविक और रोचक भण्डाफोड़ है कि सैकड़ों बार पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती। प्रकृति की अनोखी छटा निरखनी हो तो इसे पढ़िए, हास्य का आनन्द लूटना हो तो इसे पढ़िए, कला की बहार देखनी हो तो इसे पढ़िए, स्वाभाविकता और सरसता का मज़ा लेना हो तो इसे पढ़िए, बुराइयों से बचना हो तो इसे पढ़िए, गुप्त लीलाओं का रहस्य जानना हो तो इसे पढ़िए, उत्कण्ठा और कुतूहल के समुद्र में डूबना हो तो इसे पढ़िए, भावों पर मुग्ध होना हो तो इसे पढ़िए और ज्ञान पर चकित होना हो तो इसे पढ़िए। इससे बढ़ कर हास्यमय, कौतूहलपूर्ण, आश्चर्य-जनक, रोचक, स्वाभाविक और शिक्षाप्रद उपन्यास कहीं भी ढूँढ़ने से न मिलेगा। फ़ौरन ऑर्डर भेजिए, हज़ारों ही ऑर्डर रजिस्टर हो चुके हैं। जल्दी कीजिए, वरना बाद को पछताना होगा।

छहो खण्ड एक ही पुस्तक में; मूल्य ४) मात्र ! स्थायी ग्राहकों से ३)

देवताओं के गुलाम

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामों को एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं, तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं; इन कृत्यों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। मूल्य ३); स्थायी ग्राहकों से २।)

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका वर्णन इसमें बहुत ही रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा। मूल्य ॥)

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

भविष्य

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार—१५ जनवरी, १९३१ | संख्या ४, पूर्ण संख्या १६

लाहौर के फ़ौजी कप्तान की स्त्री की निर्मम हत्या !

मुन्शीगञ्ज के फ़ौजदारी अदालत का बोर्ड जला डाला गया !!

शोलापुर वाली ४ फाँसियों के कारण देश भर में हड़तालें !!!

क्या कर-बन्दी आन्दोलन दिन-दिन भीषण होता जा रहा है ?

इलाहाबाद में दमन का दौरा :: किसानों की सभाएँ भङ्ग की गईं

१७ वर्षीय बालक गोली का शिकार :: सूरत में क़ानून की धज्जियाँ उड़ाई गईं !

(१४ वीं जनवरी की रात तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—हुबली का समाचार है, कि मैजिस्ट्रेट ने १४४ धारा शहर में लगा दी, परन्तु लोगों ने क़ानून भङ्ग करके एक सभा की और यह प्रस्ताव पास किया। "यह सभा शोलापुर के अभियुक्तों को सर्वथा निरपराध समझती है, तथा देश के लिए उनके त्याग की प्रशंसा करती है और आशा करती है कि वह शीघ्र ही पुनर्जन्म लेकर अपने पवित्र उद्देश्य की पूर्ति करेंगे तथा दूसरे लोग भी उनकी भाँति त्याग करने के लिए जन्म लेंगे।"

—लाहौर १४ जनवरी। आज श्री० हरिकृष्ण को गवर्नर पर गोली चलाने तथा इन्सपेक्टर चनन सिंह की हत्या के अपराध में सेशन्स जज के सामने पेश किया गया। कचहरी के चारों ओर पुलिस का कड़ा पहरा था।

अभियुक्त के भाई तथा पिता के अतिरिक्त किसी को अन्दर जाने की आज्ञा नहीं दी गई। अभियुक्त की ओर से देहली के बैरिस्टर श्री० आसफ़अली पेश हुए। वकील-सफ़ाई ने मुक़द्दमे के आरम्भ में ही कहा कि गवर्नमेण्ट अभियुक्त के विरुद्ध बड़ा प्रचार कर रही है। अपना भाषण जारी रखते हुए वकील ने कहा, कि गवर्नर एक यूरोपियन है और अभियुक्त भारतवासी; इसलिए धारा ४४३ के अनुसार अभियुक्त का मामला जूरी के सामने पेश होना चाहिए। सरकारी वकील ने यद्यपि इसका विरोध किया, परन्तु जज ने आज्ञा दी कि मुक़द्दमा जूरी के सामने १९वीं जनवरी को पेश किया जावे।

—बम्बई का समाचार है कि श्री० शिवाल दीपचन्द परवा 'डिक्टेटर' कॉङ्ग्रेस कमिटी भूलेश्वर वार्ड को ६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई। अभियुक्त का अपराध यह था कि उन्होंने मकान पर लगे मर्दुमशुमारी के नम्बरोंको मिटा दिया था।

—बम्बई का १४ वीं जनवरी का समाचार है कि मिसेज़ सदानन्द से प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार २,०००) रु० की ज़मानत फ़्री प्रेस जरनल के मालिक होने की हैसियत से तथा २,०००) की ज़मानत मुद्रक होने की हैसियत से माँगी है।

—मुन्शीगञ्ज का समाचार है, कि कुछ शरारती लोगों ने फ़ौजदारी अदालत के बाहर राजनैतिक आन्दोलन के सम्बन्ध में लगे इश्तहार वाले बोर्ड में आग लगा कर उसे पूर्णतया भस्म कर दिया।

—कलकत्ता का १४वीं जनवरी का समाचार है कि 'एडवान्स' के सम्पादक के विरुद्ध मैजिस्ट्रेट ने विद्रोह का अपराध लगाया। उसी मैजिस्ट्रेट ने 'नवशक्ति' के सम्पादक के विरुद्ध एक लेख "पिस्तौल वाली सरकार" के आधार पर विद्रोह का अपराध लगाया है।

—करीमगञ्ज का समाचार है कि दफ़ा १४४ के लगे रहने पर श्री० गिरीबाल गुप्ता को एक सभा में वक्तृता देने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिया गया।

—मेमनसिंह का समाचार है कि श्री० शिबेष मुकर्जी वकील की बन्दूक़ का लाइसेन्स ज़ब्त कर लिया गया। पुलिस उनकी बन्दूक़ उनसे छीन ले गई है।

—लाहौर १४वीं जनवरी का समाचार है कि कल सायङ्काल को लाहौर छावनी में एक सिक्ख ने कैप्टन करटिस की पत्नी पर उनके बँगले में तलवार से आक्रमण किया, मिसेज़ करटिस उस समय बरामदे में बैठी कुछ पढ़ रही थीं, कि आक्रमणकारी ने तलवार से उनका हाथ काट लिया।

मिसेज़ करटिस के चिल्लाने की आवाज़ सुन कर उनके दो बच्चे, जिनकी आयु ६-७ वर्ष की थी, उधर आ निकले। आक्रमणकारी उन पर भी झपटा, जिससे दोनों घायल हो गए। इतने में मिसेज़ करटिस के बैरा ने मौक़े पर पहुँच कर आक्रमणकारी को क़ाबू में कर लिया। मिसेज़ करटिस का देहान्त हो गया है।

—देहली का १३वीं जनवरी का समाचार है कि देहली षड्यन्त्र केस का एक प्रधान इक़बाली गवाह मैजिस्ट्रेट के सामने बयान देते-देते बेहोश हो गया।

—जबलपुर तथा अहमदाबाद की म्युनिसिपल कमेटियों ने, शोलापुर के चार व्यक्तियों को फाँसी लगाने के प्रति अपना विरोध दिखाने के लिए, अधिवेशन स्थगित कर दिए।

—सूरत का १४वीं जनवरी का समाचार है कि मैजिस्ट्रेट ने शहर में धारा १४४ आठ दिन के लिए जारी कर दी है। परन्तु लोगों ने कई स्थानों पर सभाएँ करके इस आज्ञा की धज्जियाँ उड़ाईं।

—अफ़वाह है कि सरकार ने स्थानीय विश्वविद्यालय के अधिकारियों को इस बात की चेतावनी दी है कि यदि सीनेट हॉल पर से राष्ट्रीय झण्डा नहीं उतारा गया तो, विश्वविद्यालय की सरकारी सहायता बन्द कर दी जायगी।

इलाहाबाद ज़िले में गोली चली

गत १०वीं जनवरी का एक समाचार है कि कल्यानपुर नामक एक गाँव में, गाँव वालों और पुलिसों के बीच में दङ्गा हो गया। एक प्रेस-प्रतिनिधि के पूछने पर पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट ने घटना का जो बयान किया है, उसका आशय इस प्रकार है :—

गत शनिवार को कल्यानपुर गाँव में लगानबन्दी के सम्बन्ध में एक सभा हो रही थी। पुलिस को यह ख़बर मिल चुकी थी। नियत समय पर मऊआइमा पुलिस स्टेशन से एक सब-इन्सपेक्टर और ७ कॉन्स्टेबिल वहाँ गए। सभा में क़रीब २,००० मनुष्य उपस्थित थे। सभा भङ्ग होने पर श्री० अजीतसिंह और श्री० ज्वालाप्रसाद, जनता को भड़काने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। जब पुलिस उन्हें थाने की ओर ले जाने लगी, तो क़रीब १,२०० मनुष्यों ने पुलिस पर आक्रमण किया, और गिरफ़्तार व्यक्तियों को छुड़ा लिया। लोगों ने पुलिस के सिपाहियों और सब-इन्सपेक्टर को पीटा। लाठी के अतिरिक्त ईंट और पत्थर भी उन पर फेंके गए। गिरफ़्तार व्यक्तियों के छूट जाने पर भी लोग पुलिस का पीछा करते रहे। इस पर सब-इन्सपेक्टर ने लोगों पर अपनी रिवॉल्वर से तीन बार फ़ायरें कीं, जिसके फल-स्वरूप देवनारायण नामक एक १७ वर्षीय युवक घायल हो गया। अन्त में पुलिस भागते-भागते बालाडीह नामक गाँव में जा पहुँची। वहाँ छिप कर उन लोगों ने प्राण बचाए। तब भीड़ उन लोगों को न पाकर लौट आई। एक सिपाही इसी बीच में सब-इन्सपेक्टर के घोड़े पर सवार होकर पुलिस थाने में आया और उसने वहाँ उक्त घटना की ख़बर दी। ८ बजे के लगभग पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट, हथियार बन्द पुलिस के साथ वहाँ पहुँच गए। बालाडीह गाँव, पर तथा थाने पर पहरा बिठा दिया गया है। ख़बर है कि वे दोनों व्यक्ति जो गिरफ़्तार किए गए थे, वकील की मार्फ़त स्वयं अपने को गिरफ़्तार करा दिया। देवनारायण की हालत नाज़ुक है।

पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट का कहना है कि, सोराम पुलिस स्टेशन के अन्तर्गत सिरायत नाम के एक गाँव से भी ऐसी ही घटना हुई है।

पता चला है कि इस घटना की जड़ लगानबन्दी आन्दोलन है।

बम्बई में लाठी-प्रहार

बम्बई का ८वीं जनवरी का समाचार है कि मूलजी जेठा मार्केट में विदेशी कपड़ों से भरी एक लॉरी को रोकने के अपराध में १८ स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिए गए। मैजिस्ट्रेट ने सबको छः-छः मास की कड़ी क़ैद तथा ५०-५०) रु० जुर्माने की सज़ा दी है। जुर्माना न देने पर छः-छः सप्ताह की क़ैद और भोगनी पड़ेगी। गिरफ़्तारी के समय मूलजी जेठा मार्केट में बहुत भीड़ हो गई थी। इससे पुलिस ने लोगों पर लाठी-प्रहार किया, जिससे बहुत से मनुष्य घायल हुए। इसी समय भगदड़ में किसी ने एक विदेशी कपड़े के गोदाम में आग लगा दी परन्तु आग शीघ्र ही बुझा दी गई।

—नागपुर का ७वीं जनवरी का समाचार है कि श्रीयुत दत्त ११७ (सी) धारा के अनुसार गोंदिया में गिरफ़्तार कर लिए गए। वे भण्डारा जेल में रक्खे गए हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द की पौत्री को ५ माह की सज़ा

नई दिल्ली का ८वीं जनवरी का समाचार है कि स्वामी श्रद्धानन्द की पौत्री श्रीमती कौशल्या देवी को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार ५ माह की सज़ा दी गई है। आपको 'बी' श्रेणी में रक्खे जाने की सिफ़ारिश की गई है। १ माह तक हवालात में रहने के बाद, आपके मामले का फ़ैसला दिया गया है।

सत्याग्रही वकील का बलिदान

बुल्दाना (बरार) का ८वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के युवक वकील श्रीयुत सिद्धेश्वर गोरे की, जिन्हें शराब की दूकान पर धरना देते समय, शराब-फ़रोश ने डण्डे से मारा था, मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि डण्डे की चोट से उनकी खोपड़ी फट गई थी। उनके शव के साथ एक जुलूस निकाला गया।

—बलिया के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्रीयुत शिवराज मिश्र गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। इस ज़िले में अब तक लगभग २०० गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं। कहा जाता है कि यहाँ के जेल के कूएँ का पानी ख़राब हो गया है। इस कारण स्नान के लिए शुद्ध जल न मिलने के कारण अनेक क़ैदियों को खुजली हो गई है।

विदेशी कपड़े की गाँठों पर फिर दूसरी बार मुहर लगा दी गई है।

—त्रिचिनापल्ली का ९वीं जनवरी का समाचार है कि एक सत्याग्रही क़ैदी, स्वस्त्यनारायण गुप्त की मृत्यु जेल में पेचिश की बीमारी से हो गई। उसका शव अन्त्येष्टि क्रिया के लिए दे दिया गया।

—नागपुर का ९वीं जनवरी का समाचार है कि सी० पी० मराठी युद्ध-समिति के अध्यक्ष श्री० अधाराव हाल्दे गिरफ़्तार कर लिए गए। पुलिस ने युद्ध-समिति के दफ़्तर पर धावा किया और वह क़रीब १५० कॉङ्ग्रेस बुलेटीन उठा ले गई।

—बनारस का ८वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ ५ महिलाएँ श्रीमती दुर्गेश्वरी, श्रीमती सीता देवी, श्री० सुन्दर देवी, श्री० तुलसी देवी और श्री० मनोरमा विदेशी वस्त्र की दूकान पर धरना देते समय गिरफ़्तार कर ली गईं। कहा जाता है कि एक महिला श्री० रमा देवी, एक विदेशी कपड़े के ख़रीदार को रोकते समय गिर पड़ीं। आप अस्पताल पहुँचा दी गईं।

इस घटना से शहर में सनसनी फैल गई; और एक भीड़ उस स्थान पर इकट्ठी हो गई। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुँच कर उक्त ५ महिलाओं के अतिरिक्त ५ स्वयंसेवकों को भी गिरफ़्तार किया, जिनमें से दो पीछे छोड़ दिए गए।



—आरा का ६वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ प्रभात-फेरी के सम्बन्ध में ११ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं। ख़बर है कि गाँजा की दूकान पर पिकेटिङ्ग करने के सम्बन्ध में भी ११ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—कलकत्ते का ८वीं जनवरी का समाचार है कि बङ्गाल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्रीयुत यशोदानन्दन गोस्वामी गिरफ़्तार कर लिए गए।

लाल फ़ौज के ३० स्वयंसेवक गिरफ़्तार

लाहौर का ७वीं जनवरी का समाचार है कि लाल फ़ौज के ३० स्वयंसेवक पेशावर से विदेशी कपड़े की दूकानों पर पिकेटिङ्ग करने आए थे। स्वयंसेवकों का जुलूस सारे शहर में निकाला गया। जब जुलूस साढ़े आठ बजे दिल्ली दरवाज़े पर समाप्त हुआ तो पुलिस ने, सब स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया।

—नई दिल्ली का ८वीं जनवरी का समाचार है कि दिल्ली युद्ध-समिति के ९वें डिक्टेटर श्रीयुत केदारनाथ गोयनका को ६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'बी' क्लास में रक्खे गए हैं। हिन्दुस्तानी सेवा-दल के नायक श्रीयुत वसुदेव को ५ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। ९ स्वयंसेवकों को ६-६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। ७ छोटी उम्र के स्वयंसेवक, चेतावनी देकर छोड़ दिए गए हैं।

—बम्बई का १०वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने, एक स्वयंसेवक को मर्दुमशुमारी का नम्बर मिटाने के अपराध में ६ माह की कड़ी क़ैद, और ५०) जुर्माने अथवा ६ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है।

—कलकत्ते का ९वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ बड़ा बाज़ार में, विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देते समय १६ स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिए गए।

—मद्रास का ९वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० सत्यमूर्त्ति, जिन्हें सिटी पुलिस-एक्ट की ४थी धारा के अनुसार १०) के जुर्माने की सज़ा दी गई थी, विदेशी कपड़े की दूकान पर धरना देने के अभियोग में १४ स्वयंसेवकों के साथ, जिनमें एक महिला और कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी भी शामिल थे, गिरफ़्तार कर लिए गए। ख़बर है कि श्रीयुत सत्यमूर्त्ति को ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

डॉ० हार्डिकर को ९ मास की सख़्त क़ैद

बम्बई का १०वीं जनवरी का समाचार है कि हिन्दुस्तानी सेवा-दल के सङ्गठनकर्त्ता डॉ० एन० एस० हार्डिकर को, जो १ली जनवरी को हुबली में गिरफ़्तार किए गए थे, चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने १७ (१) धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद और २००) जुर्माने या एक सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा और १७ (२) के अनुसार ९ माह की कड़ी क़ैद और २००) रु० जुर्माने या एक सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है। दोनों सज़ाएँ साथ ही साथ चलेंगी। डॉ० हार्डिकर ने अदालत की कार्यवाही में भाग लेने से इन्कार किया।

—हाथरस का ८वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ, श्रीयुत भगवनादास हालना और लाला झाबरमल, जनता को भड़काने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। लाला केशवदेव, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—पेशावर का १२ वीं जनवरी का एक समाचार है कि चारसदा में शराब की दूकानों पर पिकेटिङ्ग जारी है। गिरफ़्तारियों की संख्या २०० से अधिक हो गई है। कुछ लालकुर्ती वालों को ६ माह की कड़ी क़ैद और ५०) जुर्माने की सज़ा दी गई है। कुछ प्रधान कार्यकर्त्ताओं को, 'फ़्रान्टियर क्राइम्स रेगुलेशन' की ४० वीं धारा के अनुसार ज़मानत देने से इन्कार करने पर ३-३साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। ३० व्यक्ति चेतावनी देकर छोड़ दिए गए हैं।

—मैमनसिंह का ८ वीं जनवरी का समाचार है कि चार व्यक्ति श्रीयुत नरेशचन्द्र राय, श्री० देवेन्द्र दास, और हीरेन्द्र चक्रवर्ती नामक एक १० वर्ष का लड़का, गौरीपुर में, गाँजा की दूकान पर धरना देते समय गिरफ़्तार कर लिए गए। इन्हें ९-९ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

गौरीपुर कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी हीरेन्द्र सेन को भी १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—गौहाटी का समाचार है कि गत ६वीं नवम्बर को वहाँ के कुकुरमारा कैम्प को पुलिस ने सवेरे घेर लिया और श्रीमती चन्द्रप्रभा, श्रीयुत महेन्द्रनाथ दास, श्री० कनक चन्द्रनाथ आदि १० कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं को १४८वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिया। ये सभी हवालात में रक्खे गए हैं।

शोलापुर के अभियुक्तों को फाँसी

पूना का १२वीं जनवरी का समाचार है कि शोलापुर के हत्याकाण्ड के अभियुक्त श्री० मल्लाप धनशेठी, श्री० श्रीकिसन सारदा, श्री० जगन्नाथ शिन्दे और अब्दुल-रसूल क़ुर्बान हुसैन नामक चार व्यक्तियों को यरवदा जेल में फाँसी दे दी गई। इनकी अपील प्रिवी कौन्सिल में अस्वीकृत कर दी गई थी।

—बम्बई का ८वीं जनवरी का समाचार है कि १६ स्वयंसेवकों को, जो मूलजी जेठा मार्केट के समीप, विदेशी वस्त्रों से भरी हुई एक लॉरी को आगे बढ़ने में बाधा पहुँचा रहे थे, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १६वीं धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद और ५०)-५०) जुर्माने का सज़ा दी गई है।

—झाँसी का १२वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ, कौन्सिल के भूतपूर्व सदस्य श्री० भागवत नारायण भार्गव, श्री० कुञ्जविहारी लाल वकील, श्री० किशनचन्द तथा श्री० रुस्तम, गत रात्रि को मऊ रेलवे स्टेशन पर गिरफ़्तार कर लिए गए।

—लखनऊ का १३वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ गिरफ़्तारियों की धूम मची हुई है। नित्य गिरफ़्तारियाँ हो रही हैं। क़रीब-क़रीब सभी गिरफ़्तारियाँ, वहाँ के व्यापारी अब्दुल रज्ज़ाक़ की दूकान पर धरना देने के सम्बन्ध में की गई हैं। इस सम्बन्ध में हाल में ५ महिलाएँ भी गिरफ़्तार की गई हैं।

—सीतापुर का १२वीं जनवरी का समाचार है कि श्रीयुत नन्दकिशोर, श्री० शिवदयाल, और श्री० शिवचरण गत ४ थी जनवरी को ग़ैर-क़ानूनी नमक बनाने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर लिए गए। ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री० ठाकुरप्रसाद शर्मा भारतीय दण्ड-विधान की १०८ वीं धारा के अनुसार गत ५वीं जनवरी को गिरफ़्तार किए गए।

—कलकत्ते का १२वीं जनवरी का समाचार है कि श्रीयुत जगदीश चटर्जी और श्री० प्रतुल भट्टाचार्य को, जो कि वहाँ के प्रेज़िडेन्सी जेल के क़ैदी हैं, यूरोपियन जेलर के पीटने के अभियोग में ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा और दी गई है।

—पटना का १३वीं जनवरी का समाचार है कि पटना युवक-सङ्घ के सेक्रेटरी श्री० राजेश्वरप्रसाद को भारतीय दण्ड-विधान की १५७वीं धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—दिल्ली का १३वीं जनवरी का समाचार है कि मुहल्ला कॉङ्ग्रेस-कमिटी की अध्यक्षा श्रीमती वासन्ती देवी से ६ माह की नेकचलनी के लिए २,०००) रु० की ज़मानत माँगी गई। उन्होंने ज़मानत न देकर, ६ माह के लिए जेल ही जाना पसन्द किया। चाँदनी चौक में मुसलमान कपड़े के व्यापारियों की दूकानों पर धरना देने के सम्बन्ध में २५ स्वयंसेवक भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—अलीगढ़ का १२वीं जनवरी का समाचार है कि ठाकुर टोडरसिंह, जो हाल ही में जेल से छूटकर आए हैं, और डॉक्टर जगदम्बा सहाय जो वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी हैं, कलेक्टरी में जाते समय, पुलिस द्वारा गिरफ़्तार कर लिए गए। उन्हें वारण्ट भी नहीं दिखाया गया। यह भी नहीं बताया गया है, कि वे किस धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं। वहाँ के एक कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता स्वामी शोभाराम, भी एडवर्ड पार्क की एक साधारण सभा में, जिसके वे सभापति थे, गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बम्बई का १२वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ की 'युद्ध-समिति' के अध्यक्ष श्री० जे० सी० मित्र, वाइस प्रेज़िडेण्ट श्री० कान्तिलाल पारीख, सेक्रेटरी श्री० तय्यब जी के० बेलामवाला, और कॉङ्ग्रेस बुलेटिन के सम्पादक श्री० मोहनलाल ठक्कर को, जो गत रविवार को, गिरगाँव के, कॉङ्ग्रेस के पुराने मकान पर से मर्दुम-शुमारी का नम्बर मिटाने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए थे, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) और (२) धाराओं के अनुसार भिन्न-भिन्न अवधि की सज़ाएँ दे दी गईं। प्रथम तीन सज्जनों को ६-६ माह की कड़ी क़ैद और १५०) रु० जुर्माने अथवा ६ सप्ताह की अतिरिक्त-क़ैद की सज़ा दी गई। श्रीयुत ठक्कर को ४ माह की सादी क़ैद और ५०) रु० जुर्माने अथवा ६ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई। अभियुक्तों ने अदालत की कार्रवाई में कोई भाग नहीं लिया।

—मद्रास का १२वीं जनवरी का समाचार है कि तीसरे पहर के समय पुलिस ने ट्रिप्लीकेन में 'जनरल स्टोर्स' नामक एक दूकान के सामने खड़ी हुई भीड़ को हटा कर धरना देते हुए दो स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया।

—खुलना का एक समाचार है कि गत ७वीं जनवरी को ६० स्वयंसेवक आबकारी की दूकानों पर धरना देने के लिए फुलताला गए। कहा जाता है कि शराब-फ़रोश ने पहले ही ज़िला-मैजिस्ट्रेट को सहायता के लिए फ़ोन कर दिया था। फल-स्वरूप पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट २५ हथियारबन्द पुलिस के साथ घटनास्थल पर आ पहुँचे। कहा जाता है कि कुछ देर की ज़ोरदार पिकेटिङ्ग के बाद, पुलिस ने स्वयंसेवकों पर लाठियाँ चलाइ, जिसके फल-स्वरूप २५ स्वयंसेवक घायल हुए। उनमें ३ की हालत ख़तरनाक बताई जाती है। पुलिस ने स्वयंसेवकों के नायक श्री० सुधांशुकुमार बोस तथा ५ अन्य स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया।

* * *

शहर और ज़िला

१६ व्यक्तियों को कड़ी क़ैद

इलाहाबाद में ७वीं जनवरी को मि० मुहम्मद ईशाक मैजिस्ट्रेट के सामने २३ राजनैतिक अभियुक्त पेश किए गए। अभियुक्तों के विरुद्ध ग़ैर-क़ानूनी कॉङ्ग्रेस कमिटी की सहायता करने का अभियोग लगाया गया था। मैजिस्ट्रेट ने १६ अभियुक्तों को छः-छः मास की कड़ी क़ैद तथा २५-२५) रु० जुर्माने की सज़ा दी। बाक़ी सात ने क्षमा माँग ली।

—गत १०वीं जनवरी को स्थानीय मुसलमान सज्जनों ने, प्रधान-मन्त्री, आग़ा ख़ाँ, सर तेज बहादुर सप्रू आदि के नाम, निम्न-लिखित तार भेजा है :—

"देश की भलाई के लिए और मुसलमानों के हित की रक्षा के लिए, सुरक्षित स्थानों के साथ, संयुक्त निर्वाचन की नितान्त आवश्यकता है।"

—१० वीं जनवरी का एक समाचार है कि रामेश्वर नामक एक व्यक्ति, जो कॉङ्ग्रेस का स्वयंसेवक बताया जाता है, ग़ैर-क़ानूनी संस्था (कॉङ्ग्रेस कमिटी) को सहायता पहुँचाने के अपराध में गिरफ़्तार किया गया है। कहा जाता है कि तलाशी लेने पर उसके मकान में कॉङ्ग्रेस सम्बन्धी कुछ काग़ज़-पत्र मिले थे।

—गत ९वीं जनवरी को पं० मोतीलाल नेहरू, श्रीमती कमला नेहरू को देखने के लिए, स्थानीय ज़िला जेल में गए थे।

झण्डा-उत्सव में पुलिस का हस्तक्षेप

गत १३वीं जनवरी का सोराम तहसील के अन्तर्गत शिवगढ़ नामक एक गाँव के लोगों ने, शिवगढ़ बाज़ार में राष्ट्रीय झण्डा फहराना चाहा। शिवगढ़ सरकारी स्टेट है, इस कारण अधिकारियों ने, गाँव वालों के उद्देश्य को पूरा न होने देने के लिए पहले ही से बन्दोबस्त कर रक्खा था। पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट और मैजिस्ट्रेट की अधीनता में हथियारबन्द पुलिस का एक दल, शिवगढ़ में तैनात कर दिया गया था। बाज़ार के भीतर जाने के सभी दरवाज़ों पर पुलिस वालों का पहरा था। यद्यपि साढ़े तीन बजे तक बाज़ार के भीतर जाने में कोई रोक-टोक नहीं थी, तो भी पुलिस वालों को आज्ञा दे दी गई थी कि वे जनता को बाज़ार के भीतर जाने से रोकें। शिवगढ़ कॉङ्ग्रेस आश्रम के सामने भी, जहाँ लोग झण्डा फहराना चाहते थे, पुलिस का पहरा था।

गाँव में लोगों ने एक सभा की, जिसमें हज़ारों की संख्या में लोग उपस्थित थे। ५ बजे सन्ध्या के समय, जब सभा भङ्ग हो गई, लोग बाज़ार के भीतर जाने की कोशिश करने लगे। किन्तु पुलिस के रोकने पर वे लौट गए। उसके बाद पुलिस भी वहाँ से हट गई। एक ग़ैर-सरकारी रिपोर्ट के अनुसार, पुलिस वालों के चले जाने पर, आश्रम के ऊपर झण्डा फहराया गया। गाँव वालों के उद्देश्य को जान कर, पुलिस-सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० मेज़र्स ने युक्तप्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन को जो पत्र लिखा था, उसका आशय इस प्रकार है :—

"मुझे विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि शिवगढ़ और सोराम के कुछ लोग, शिवगढ़ में कल राष्ट्रीय झण्डा फहराना चाहते हैं। इसके बाद लोग सोराम तहसील और पुलिस-थाने पर भी राष्ट्रीय झण्डा फहराना चाहते हैं। आप यह समझ रक्खें, कि सरकार की ओर से ऐसे कार्यों को रोकने का यत्न किया जावेगा। मैं समझता हूँ, कि आप इस बात से सहमत होंगे कि ऐसे कार्य न तो उचित ही हैं, और न कॉङ्ग्रेस की कार्य-प्रणाली का यह एक अङ्ग ही हो सकता है। मुझे पूर्ण-विश्वास है कि आप इस बात का अनुभव करेंगे कि यदि गाँव वालों की ओर से इस प्रकार का कोई प्रयत्न किया जायगा, तो पुलिस को इसे रोकने के लिए, बल प्रयोग करना ही पड़ेगा। किन्तु यह मेरी इच्छा के विरुद्ध है। इसलिए मैं आपको इस रिपोर्ट के विषय में सूचना दे रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि आप गाँव वालों के ऐसे कार्यों का समर्थन नहीं करेंगे। गाँव वालों का ख़्याल है, कि वे कॉङ्ग्रेस की आज्ञा का पालन कर रहे हैं। दूसरी बात यह है कि हाल ही में कल्यानपुर में होने वाली एक घटना के सम्बन्ध में, पुलिस पर ज़्यादतियाँ करने का दोष लगाया गया है। यदि सोराम में भी बल-प्रयोग की आवश्यकता पड़ेगी, तो मैं यह पत्र प्रकाशित करा दूँगा।" इसके बाद सुपरिण्टेण्डेण्ट ने फिर उसी दिन शाम को यह पत्र टण्डन जी के पास भेजा—"अपनी चिट्ठी की नक़ल पढ़ने पर पीछे मुझे ख़्याल हुआ, कि मैंने पहली चिट्ठी में यह बात साफ़-साफ़ नहीं लिखी है, कि शिवगढ़ गाँव सरकारी-स्टेट है और वहाँ का बाज़ार भी सरकारी ही है। इसलिए इन स्थानों पर झण्डा फहराने का उसी तरह विरोध किया जायगा, जिस तरह कि तहसील और पुलिस-स्टेशन पर।"

टण्डन जी ने दोनों पत्रों का जवाब इस प्रकार दिया—"मुझे आपके दोनों पत्र कल शाम को मिले। मैंने इस विषय की जाँच की है, और मुझे पता चला है कि शिवगढ़ में आज झण्डा फहराने का उत्सव किया जायगा; किन्तु किसी भी कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता का उद्देश्य तहसील या पुलिस-स्टेशन पर झण्डा फहराने का नहीं है। आपके दूसरे पत्र को पढ़ कर मुझे आश्चर्य हुआ। 'शिवगढ़ एक सरकारी स्टेट है' इसका अर्थ तो यह जान पड़ता है, कि सरकार शिवगढ़ की ज़मींदार है। किन्तु केवल इसीलिए, आपका वहाँ गाँव वालों को झण्डा फहराने से रोकना मुनासिब नहीं है। शिवगढ़ पर सरकार का जो ज़मींदारी हक़ है, उसके अनुसार, खुले स्थानों में साधारण सामाजिक कृत्यों को करने की, जनता को कोई मुमानियत नहीं हो सकती। मकान-मालिकों के, किसी भी काम में, जो कि ग़ैर-क़ानूनी नहीं है, अपने व्यक्तिगत अधिकार और सम्पत्ति के प्रयोग में भी जमींदार किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं कर सकता। आप बाज़ार को भी तहसील और पुलिस-स्टेशन की श्रेणी में नहीं रख सकते। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप एक बार फिर इस पर विचार करेंगे, और शिवगढ़ के लोगों को, झण्डा फहराने में किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुँचावेंगे।

"आपने अपने पहले पत्र में कल्यानपुर का ज़िक्र किया है, और आपके लिखने से मालूम होता है कि आप पुलिस की फ़ायरों का समर्थन करते हैं। मैं आप से प्रार्थना करता हूँ, कि आप ज़रा देवनारायण के पास जायँ, जो इस समय मृत्यु के समीप है, और उसकी बातों को सुनें तब आप एक मनुष्य की हैसियत से यह निर्णय कर लें, कि पुलिस के उस अफ़सर ने, जिसने कि घबड़ा कर उसे गोली मार दी, पुरस्कार के योग्य कार्य किया है या दण्ड के योग्य?"

—गत १२वीं जनवरी को स्थानीय मैजिस्ट्रेट ने शारदाप्रसाद नामक एक व्यक्ति को, राजविद्रोहात्मक भाषण देने तथा स्थानीय ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी को, जो एक ग़ैरक़ानूनी संस्था है, सहायता पहुँचाने के अभियोगों में ६-६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। दोनों सज़ाएँ साथ ही साथ चलेंगी।

* * *



देश के प्राङ्गण में

—कलकत्ते का ८वीं जनवरी का समाचार है कि 'एडवान्स' के सम्पादक श्री० व्रजेन्द्रनाथ गुप्त, जिनके ऑफ़िस की तलाशी ७वीं जनवरी को ली गई थी, राजद्रोह के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए, किन्तु पीछे ज़मानत पर छोड़ दिए गए। कहा जाता है कि तलाशी और उनकी गिरफ़्तारी का कारण, उनका अपने पत्र में कुछ विद्रोहात्मक लेखों का प्रकाशित करना था।

—बम्बई का ६वीं जनवरी का समाचार है, कि गत रात्रि के समय, ग्रान्ट रोड पर हिन्दू और मुसलमानों की भीड़ को हटाने के लिए पुलिस ने लाठियाँ चलाईं। ख़बर है कि ३० व्यक्ति घायल हुए हैं।

—कलकत्ते का ८वीं जनवरी का समाचार है कि 'बन्दूक़ हरकार' शीर्षक एक कविता छापने के सम्बन्ध में, 'नवशक्ति' के ऑफ़िस की तलाशी ली गई, और उसके सम्पादक श्री० सरोजकुमार राय, तथा प्रकाशक और मुद्रक भारतीय दण्ड-विधान की १२४वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए, परन्तु पीछे ज़मानत पर छोड़े गए।

डिप्टी कलेक्टर के घर में चोरी

ख़बर है कि स्थानीय डिप्टी कलेक्टर मुहम्मद इशहाक (जो विशेष रूप से आजकल राजनैतिक मामलों का फ़ैसला करने के लिए नियुक्त किए गए हैं) के घर में चोरी के सम्बन्ध में ६ व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं।

इधर कटरा में अनेक चोरियाँ हुई हैं। कहा जाता है कि इनमें सब से भारी चोरी, श्री० इशहाकअली मिर्ज़ा के यहाँ हुई है। क़रीब २०,०००) रु० चोरों के हाथ लगे। एक व्यक्ति इस सम्बन्ध में सन्देह पर गिरफ़्तार किया गया है।

—आरा का ६वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के दो प्रमुख कार्यकर्त्ता बाबू रामायणप्रसाद और बिहार-उड़ीसा कौन्सिल के भूतपूर्व सदस्य बाबू सिद्धेश्वरी प्रसाद अपनी सज़ाओं की अवधि पूरी कर हज़ारीबाग़ जेल से छूट गए।

रामायण बाबू के कहने से पता चलता है कि उनका वज़न जेल में १० पौण्ड घट गया है।

—लाहौर का १०वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ १९वीं जनवरी से अखिल एशिया-महिला-परिषद का अधिवेशन टाउन हाल में आरम्भ होगा। कपूरथला की महारानी ने स्वागतकारिणी-समिति की अध्यक्षता स्वीकार कर ली है। स्वागतकारिणी-समिति में २०० सदस्य हैं। ५० महिला प्रतिनिधियों के उपस्थित होने की आशा है।

—बम्बई का १०वीं जनवरी का समाचार है कि बम्बई-सरकार ने एक असाधारण गज़ट के द्वारा, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट की १६वीं धारा के अनुसार कोलाबा ज़िले की ९ कॉङ्ग्रेस संस्थाओं को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया है।

एक दूसरे असाधारण गज़ट के द्वारा, सान्ताक्रुज़, वरली, मलाड, घाटकोपर और कुरला की छः कॉङ्ग्रेस कमिटियाँ भी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गई हैं।

—लाहौर का गत ६ वीं जनवरी का समाचार है कि पण्डित सन्तराम, लाला दुनीचन्द आदि कॉङ्ग्रेस नेताओं के मामले में मुहम्मद तुफ़ैल नामक एक व्यक्ति की, जो पहले प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी का टाइपिस्ट था, गवाही हुई। ज़िरह में गवाह ने कहा कि टाइपिस्ट के सिवाय वह पेशेवर गवाह भी है।

—ख़बर है कि काश्मीरी दरबार ने 'गाँधी का चर्ख़ा' 'गाँधी की आँधी', 'आज़ादी का डङ्का', 'कॉङ्ग्रेस बिगुल' और 'आज़ाद भारत के गाने' ये ५ हिन्दी के पेम्फ़लेटों को ज़ब्त कर लिया है।

जुलूस पर लाठियों की वर्षा
महिलाओं की गिरफ़्तारी

कराची का ११वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के कॉङ्ग्रेस के अनुयायियों ने रामबाग़ में सवेरे एक सभा करना चाहा; किन्तु पुलिस ने उन्हें ऐसा करने से रोका। तब पुलिस मैजिस्ट्रेट की आज्ञा के विरुद्ध नानकवारा स्ट्रीट पर एक जुलूस तैयार किया गया, जिसमें कई हज़ार दर्शक भी शामिल थे। जब यह जुलूस प्रिन्सेज़ स्ट्रीट पर खादी-भण्डार के समीप पहुँचा तब हथियारबन्द पुलिस के एक दल ने उसे रोका और जुलूस भङ्ग करने के लिए लोगों से कहा। मैजिस्ट्रेट ने लोगों को चेतावनी दी कि जुलूस ग़ैर-क़ानूनी है, तो भी लोगों ने हटना अस्वीकार किया, जिसके फल-स्वरूप पुलिस ने लाठियाँ चलाईं। जुलूस की महिलाएँ जुलूस के सामने चली आईं, किन्तु वे गिरफ़्तार कर ली गईं। इसी समय पुलिस वालों पर पत्थर फेंके गए, जिसके फल-स्वरूप पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट तथा कुछ दूसरे लोग घायल हुए।

आधी रात के समय भी जब जुलूस के लोग हटने को तैयार न हुए, और भोजन का प्रबन्ध उसी स्थान पर किया जाने लगा तब पुलिस वहाँ से हट गई।

मीठादार के समीप एक दूसरा जुलूस तैयार किया गया। यहाँ भी लाठियों की वर्षा की गई, जिसके फल-स्वरूप कुछ लोग घायल हुए। कहा जाता है कि कुल १५० व्यक्ति घायल हुए हैं, जिनमें ५० की अवस्था चिन्ताजनक बताई जाती है। वे अस्पताल भेजे गए हैं। ३६ गिरफ़्तारियाँ भी की गईं। जिनमें महिला डिक्टेटर गोनीबाई तथा १९ अन्य महिलाएँ भी हैं।

दूसरी बार लाठी चलने के बाद, फिर लोगों ने जुलूस तैयार करना चाहा, किन्तु पुलिस ने उन्हें हटा दिया। सवेरा होते-होते सभी घर चले गए। पीछे का समाचार है कि ११७ मनुष्य अस्पतालों में भर्ती किए गए हैं। लगभग ४०० मनुष्यों को हलकी चोटें आई हैं। ७ व्यक्तियों की अवस्था चिन्ताजनक है। पुरुषोत्तम लीमजी नामक एक १८ वर्षीय युवक की हालत नाज़ुक बताई जाती है।

—अहमदाबाद का ८वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के कुछ विदेशी कपड़े के व्यापारियों के अपने विदेशी कपड़े की गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर दिलवाने से इन्कार करने पर, श्रीयुत अब्बास तैयब जी की पुत्री मिस रहाना तैयब जी, तथा कुछ अन्य क़ैदी पाटन जेल में अनशन कर रहे हैं।

—ख़बर है कि मुज़फ़्फ़रपुर में जिन ३८ व्यक्तियों पर जवाहर-दिवस के सम्बन्ध में मुक़दमा चल रहा था, उनमें १८ छोड़ दिए गए हैं। रायबहादुर द्वारकानाथ एम० एल० ए० पर भी, अपने पुत्र के बहकाने के अभियोग में मुक़दमा चल रहा था। वे भी पुत्र सहित छोड़ दिए गए।

जो लोग पण्डित जी का स्वागत करने के लिए स्टेशन पर गए थे, उनमें से ३० गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बनारस का ३१ वीं दिसम्बर का समाचार है कि बम्बई में शहीद होने वाले श्री० कालीशङ्कर वाजपेयी की मृत्यु के सम्बन्ध में, वहाँ हड़ताल मनाई गई। उनके बड़े भाई, उनका चिता-भस्म गङ्गा में डालने के लिए यहाँ लाए थे।

सन्ध्या-समय सत्याग्रह की डिक्टेटर श्रीमती सरोजिनी देवी के नेतृत्व में एक सभा की गई, जिसमें मृत व्यक्ति के त्याग-भाव के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए एक प्रस्ताव पास किया गया।

—ख़बर है कि कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता बाबू राजदेवसिंह हज़ारीबाग़ जेल से छोड़ दिए गए। कहा जाता है कि जब वे रामगञ्ज स्टेशन पर पहुँचे, तो वहाँ के डोमों ने आपका स्वागत बड़ी धूमधाम से किया।

—९वीं जनवरी का समाचार है कि बरार प्रान्तीय युद्ध-समिति के प्रथम डिक्टेटर श्रीयुत एम० एस० अनी सिवनी-जेल से रिहा कर दिए गए।

क़ैदी को चर्ख़ा दिया गया

जम्मू (काश्मीर) का ३१वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के भूतपूर्व सब-डिविज़नल मैजिस्ट्रेट को, जो इस समय लगानबन्दी के लिए एक पैम्फ़लेट लिखने के अभियोग में बाहु क़िले में क़ैद हैं, उनके माँगने पर राज्य के अधिकारियों ने जेल में उन्हें एक चर्ख़ा दिया है।

कॉङ्ग्रेस की शक्ति बढ़ रही है
सरकारी रिपोर्ट

सरकार की ओर से, भिन्न-भिन्न प्रान्तों की राजनैतिक अवस्था के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट प्रकाशित की गई है, उसका सारांश निम्न-प्रकार है:—

कलकत्ते में पिकेटिङ्ग बढ़ रही है। ढाका डिवीज़न के कई हिस्सों में भी पिकेटिङ्ग बढ़ रही है। अमृतसर में कॉङ्ग्रेस की शक्ति बहुत प्रबल है। बहिष्कार आन्दोलन यहाँ पर ज़ोरों से चल रहा है। युक्त प्रान्त में लगानबन्दी आन्दोलन ज़ोरों से चल रहा है। बिहार और उड़ीसा प्रान्त में, सारन ज़िले की अवस्था चिन्ताजनक है। लगानबन्दी आन्दोलन का ज़ोर वहाँ भी बहुत अधिक है।

मध्य प्रान्त में भी बारडोली के ढङ्ग का लगानबन्दी आन्दोलन जारी करने की कोशिश की जा रही है। नागपुर इस सम्बन्ध में बहुत प्रयत्न कर रहा है।

—अमृतसर का ९वीं जनवरी का समाचार है कि सरदार दलीपसिंह, जिन्हें ऑर्डिनेन्स के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई थी, छूट कर अमृतसर आए। वे बहुत दुर्बल हो गए हैं। उनका कहना है कि जेल में उन्हें अच्छा भोजन नहीं दिया जाता था।

—नागपुर का ९वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० एम० वी० अभ्यङ्कर, बैरिस्टर को, जो सिवनी जेल में 'ए' श्रेणी के क़ैदी हैं, पहले की भाँति अब अपनी स्त्री और अपने मित्रों से नहीं मिलने दिया जाता।

—किशोरगञ्ज का ७वीं जनवरी का समाचार है कि कलकत्ता विश्वविद्यालय के एम० ए० के विद्यार्थी, श्रीयुत नवेन्द्रदत्त मजुमदार पर ज़िला-मैजिस्ट्रेट के समक्ष 'बन्दे-मातरम्' चिल्लाने के अभियोग में मामला चल रहा है।

फ़ैज़ाबाद जेल में अत्याचार

['भविष्य' के विशेष सम्वाददाता द्वारा]

फ़ैज़ाबाद जेल में पता चला है, कि कोई २५० के लगभग "बी" क्लास के क़ैदी बन्द हैं। उनमें से १६० ने "सी" क्लास के क़ैदियों के प्रति बुरे व्यवहार के विरुद्ध विरोध प्रकट करने के लिए 'बी' श्रेणी के विशेष-अधिकार त्याग दिए हैं। कुछ दिनों से जेल के राजनैतिक क़ैदी एक नया सत्याग्रह कर रहे हैं। पहले राजनैतिक क़ैदी इकट्ठे बैठ कर अपना दिल बहला लिया करते थे, परन्तु अब जेल-सुपरिण्टेण्डेण्ट की आज्ञा से ऐसा नहीं करने दिया जाता। राजनैतिक क़ैदियों को चार अलग-अलग बैरकों में बाँट दिया गया है। जेल-सुपरिण्टेण्डेण्ट की इस आज्ञा के विरुद्ध ये सारे क़ैदी "ताला-सत्याग्रह" कर रहे हैं। रात के समय सब क़ैदी अपनी-अपनी बैरकों के बाहर, बन्देमातरम् तथा राष्ट्रीय झण्डा-सम्बन्धी गीत गाकर, लेट जाते हैं। जेल के चार-पाँच व्यक्ति फिर प्रत्येक राजनैतिक क़ैदी को ज़बर्दस्ती उठा कर बैरकों में बन्द करते हैं।

जेल में भी इनका एक "डिक्टेटर" नियुक्त किया गया है। अभी समस्त क़ैदियों से यह सत्याग्रह नहीं कराया जाता। परीक्षा-स्वरूप केवल १५० राजनैतिक क़ैदी ही यह "ताला-सत्याग्रह" कर रहे हैं। कहा जाता है, यदि इन क़ैदियों की इच्छानुकूल शीघ्र प्रबन्ध नहीं किया गया, तो स्थिति और भी गम्भीर हो सकती है। कई राजनैतिक क़ैदियों का वज़न बहुत घट गया है।

—बम्बई का १२वीं जनवरी का समाचार है कि शोलापुर के अभियुक्तों की फाँसी की ख़बर से वहाँ बड़ी सनसनी फैल गई है। कालवा देवी रोड पर लोगों ने उपद्रव करना शुरू किया। कहा जाता है, कि ट्रामकार तथा दूसरी गाड़ियों पर लोग पत्थर फेंकने लगे, जिसके फल-स्वरूप यात्रियों को उतर जाना पड़ा। जब पुलिस-कमिश्नर मि० विलसन घटनास्थल पर पहुँचे तो उनकी मोटर पर भी पत्थर फेंके गए। तीन पुलिस वालों को लोगों ने घेर लिया, और शोलापुर के मृत अभियुक्तों के सम्मानार्थ अपनी पगड़ी उतारने को कहा। काँङ्ग्रेस वालों ने भीड़ को हटा कर उन पुलिस वालों की रक्षा की। भीड़ ने सड़कों पर गाड़ियों को चलने से रोका और इसलिए पुलिस को लाठियाँ चलानी पड़ीं। किन्तु तो भी अनेक स्थानों पर ट्राम तथा अन्य गाड़ियों का चलना बन्द हो गया। ख़बर है कि लाठी की चोट से १८५ व्यक्ति घायल हुए हैं। इनमें ३० की हालत नाज़ुक बताई जाती है।

—लखनऊ का ७वीं जनवरी का समाचार है, भरतपुर के अधिकारियों ने भुसवार के आर्य-समाज को जुलूस निकालने के सम्बन्ध में एक निषेधाज्ञा निकाली है। कहा जाता है, कि यह जुलूस १६०७ से हर साल बिना रोक-टोक के निकाला जाता था। अखिल भारतीय आर्य लीग की सम्मति के अनुसार, वहाँ के आर्य-समाजी इस सम्बन्ध में सत्याग्रह करने का विचार कर रहे हैं।

—पटना का १२वीं जनवरी का समाचार है कि एक असाधारण गज़ट के द्वारा, पूर्णिया ज़िला, जमाइ-तारा, पाकुर और गोडा सब-डिविज़नों की काँङ्ग्रेस कमेटियाँ ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दी गई हैं।

—बाँदा का ६वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के सभी दूकानों के विदेशी कपड़ों की गाँठों पर काँङ्ग्रेस की मुहर लगा दी गई है।

—ब्राह्मण वरिया (टिपरा) का ११वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ अदालत के अहाते में, २ बजे रात में आग लग गई। ख़बर है कि मर्दुमशुमारी के सम्बन्ध के सभी काग़ज़-पत्र जल कर ख़ाक हो गए। पुलिस ने इस सम्बन्ध में काँङ्ग्रेस-दफ़्तर पर धावा किया।

❀

बर्मा में गवर्नमेण्ट को उलटने की भयङ्कर चेष्टा !

विद्रोहियों के सरदार की गिरफ़्तारी के लिए पाँच हज़ार के इनाम की घोषणा !!

विद्रोहियों का आतङ्क सारे बर्मा में फैल रहा है !!!

रङ्गून ७ जनवरी—मिनलाङ्ग के एक समाचार से विदित होता है कि बर्मा में जो विद्रोह उठ खड़ा हुआ है, उसका उद्देश्य राजनैतिक है। सरकारी रिपोर्ट से मालूम होता है कि विद्रोहियों का नेता अभी तक ज़िन्दा है। अलान्तुङ्ग पहाड़ी पर विद्रोहियों के पहुँचने के पहले ही वह भाग गया था। जिस मृत-सरदार को विद्रोहियों का नेता समझा गया था, वह वास्तव में उसका प्रधान-मन्त्री था। इसका नाम पोलिन बताया जाता है।

कहा जाता है कि विद्रोहियों के प्रधान सरदार ने टाङ्गव्यात में अपना प्रधान अड्डा स्थापित किया है, और वहाँ वह शक्ति संग्रह कर रहा है। मिन्हला, ओक्पो तथा आसपास के गाँवों के लोगों से पुलिस ने बन्दूक़ें इस डर से छीन ली हैं कि कहीं वे विद्रोहियों के हाथों में न पड़ जायँ।

४थी जनवरी को विद्रोहियों ने यामेथिन में जो धावा किया था, उसके सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक कुछ बातें मालूम हुई हैं। कहा जाता है, कि १०० हथियारबन्द विद्रोहियों ने हुमान्सो और बादाव नाम के दो गाँवों पर, जो यामेथिन गाँव से ८ मील की दूरी पर हैं, धावा किया। गाँव के अधिकांश लोग बाज़ार गए हुए थे। विद्रोहियों ने गाँव में आग लगा दी, जिससे क़रीब २०० घर जल गए। उन्होंने गाँवों के दो मुखियों से बन्दूक़ें छीन लीं। एक घुड़सवार कॉन्स्टेबिल को घायल किया, और एक मुखिया को भी घायल कर जङ्गल में छोड़ दिया।

कहा जाता है कि, थारावड्डी से १० मील की दूरी पर एक गाँव में विद्रोहियों ने एक अस्पताल खोला था, जिसमें वे अपने दल के घायलों और बीमारों का इलाज किया करते थे। किन्तु पुलिस के वहाँ पहुँचने पर विद्रोहियों का वहाँ नाम-निशान भी नहीं मिला। कहा जाता है कि विद्रोहियों को पुलिस के आने की ख़बर पहले ही मिल चुकी थी, इसलिए वे वहाँ से भाग गए थे। पुलिस जैसे-जैसे आगे बढ़ती गई, उसे विद्रोहियों के उन स्थानों पर ठहरने के चिह्न मिलते गए, किन्तु विद्रोहियों का कोई पता नहीं चला।

सिरकविन से ४ मील की दूरी पर गङ्गाले नामक एक गाँव में भी विद्रोहियों ने एक धनिक व्यक्ति के मकान पर धावा मारा था। किन्तु गाँव वालों के जुट जाने से उनका प्रयत्न निष्फल हो गया। पुलिस के अधिकारियों ने विद्रोहियों की एक बन्दूक़ के लिए ५०) रु० के इनाम की घोषणा की है।

भिन्न-भिन्न स्थानों पर अनेक विद्रोही गिरफ़्तार किए गए हैं। एक गाँव का मुखिया भी, विद्रोहियों को शरण देने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिया गया है। विद्रोहियों को पुलिस के आने की सूचना देने के अपराध में एक पुङ्गी भी गिरफ़्तार किया गया है। कहा जाता है कि विद्रोहियों का प्रधान गरोह थोमास के समीप जङ्गलों में छिपा हुआ है। ज़िगोन और गौङ्गदा में कुछ घायल विद्रोही पाए गए हैं। इससे समझा जाता है कि विद्रोहियों का सङ्गठन ढीला पड़ गया है। अभी तक कुल ५०० विद्रोही गिरफ़्तार किए गए हैं। ८वीं जनवरी की एक सरकारी रिपोर्ट से मालूम होता है, कि देदाए नामक स्थान के समीप फ़ौज की ६०० विद्रोहियों से मुठभेड़ हुई। कहा जाता है कि विद्रोही लोग अच्छी तरह हथियारों से सज्जित नहीं थे। पुलिस ने फ़ायरें कीं तथा विद्रोहियों में अनेक हताहत हुए; किन्तु अन्धकार हो जाने के कारण पुलिस लौट आई। मालूम हुआ है, कि थारावड्डी के विद्रोहियों के नेता का नाम सायासान है। उसके जीवित होने की बात अनिश्चित है। सरकार ने उसकी गिरफ़्तारी के लिए ५,०००) रु० की घोषणा की है। पुलिस उसे वर्षों से जानती है। वह ज्योतिषी और वैद्य का काम किया करता था। अनाधिकृत लॉटरी डालने के अपराध में उसे दो बार सज़ाएँ भी दी जा चुकी हैं। वह हत्या का भी अपराधी है। वह एक साधारण व्यक्ति है जो अपनी धूर्त्तता से, बर्मा में जीविका उपार्जन करता था। कुछ वर्षों से उसने राजनीति में भी भाग लेना शुरू किया था।

यामेथिन के विषय में रङ्गून का ६वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के विद्रोहियों ने अपने नेता के साथ आत्म-समर्पण कर दिया है। पुलिस को विद्रोहियों की २६ लाशें मिलीं। ७ घायल व्यक्ति भी पाए गए। आहतों की ठीक-ठीक संख्या बताना कठिन है, क्योंकि वे अपने दल के आहतों को भी ले भागते थे। कुछ अभी जङ्गलों में छिपे हैं। इन यामेथिन के विद्रोहियों के नेता का नाम थाततालावका है, और वह थारावड्डी का रहने वाला है।

१०वीं जनवरी का समाचार है कि एक वायुयान थारावड्डी के विद्रोहियों की खोज में उड़ा, लेकिन उनका कुछ पता नहीं लगा।

हवाई जहाज़ पर से, गाँवों में पर्चे गिराए गए, जिसमें विद्रोहियों के नेता को पकड़ने वाले को इनाम देने की घोषणा की गई थी। थारावड्डी से क़रीब ३०० क़ैदी रङ्गून लाए गए हैं। क़ैदी-विद्रोहियों के मामले का फ़ैसला स्पेशल ट्रिब्यूनल द्वारा किया जायगा।

१२वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के 'उसिओ थीन गोबा' की सभी संस्थाओं की तलाशियाँ ली गईं। रङ्गून में उसके प्रधान दफ़्तर की भी तलाशी ली गई। क़रीब १५० स्थानों की तलाशियाँ लेने पर, थारावड्डी विद्रोह के सम्बन्ध में कुछ काग़ज़-पत्र पाए गए हैं।

थारावड्डी-विद्रोह का उद्देश्य वर्तमान सरकार को उलट देना कहा जाता है। यह भी मालूम हुआ है, कि इसी उद्देश्य से कुछ दिनों से, गुप्त रूप से तैयारियाँ हो रही थीं। दूसरे-दूसरे स्थानों में भी असन्तोष के लक्षण पाए गए हैं, और यद्यपि थारावड्डी-विद्रोह का बल टूट गया है, तो भी भिन्न-भिन्न स्थानों में उत्पात खड़ा होने की सम्भावना है।

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

'साधु' तथा उनके 'चेलों' के मनोरञ्जक करशमे !

वायसराय की गाड़ी को उड़ाने का निष्फल-प्रयत्न

बहिन ने भाई को बम भेजे :: बनारस कोतवाली में बम !!

कानपूर के पास डाका :: डिप्टी कलेक्टर पर बम !!

लाहौर षड्यन्त्र केस

इक़बाली गवाह इन्द्रपाल का बयान

लाहौर का ६वीं जनवरी का समाचार है कि आज बारह बजे सेण्ट्रल जेल में स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने षड्यन्त्र केस के २६ अभियुक्त पेश किए गए। दर्शकों को आज्ञा लेकर तथा तलाशी देकर भीतर घुसने की आज्ञा थी। बाहर पुलिस का कड़ा पहरा था। आरम्भ में श्री० कृष्णगोपाल ने कहा—"चूँकि श्री० धर्मपाल अभियुक्त बीमार है, इसलिए उसके बैठने का प्रबन्ध होना चाहिए। इस पर श्री० धर्मपाल को एक कुर्सी बैठने के लिए दे दी गई। लाला काशीराम सब-इन्सपेक्टर ने गवाही देते हुए कहा, कि मैंने चन्द्रशेखर तथा दूसरे फ़रार अभियुक्तों की बहुत खोज की, परन्तु कोई पता नहीं चला। इस मामले के फ़रार अभियुक्तों में से श्री० चन्द्रशेखर आज़ाद, यशपाल, सुखदेवराज, लेखराज, दसराज, श्रीमती दुर्गादेवी तथा प्रकाशवती को गिरफ़्तार करने के लिए पुरुस्कारों का विज्ञापन दिया जा चुका है। बाक़ी पाँच के विरुद्ध वारण्ट जारी कर दिए गए हैं, परन्तु अभी तक वे गिरफ़्तार नहीं किए जा सके।"

इसके पश्चात इक़बाली गवाह श्री० इन्द्रपाल कचहरी में लाया गया। उसने चुपचाप, पुलिस वालों के साथ, कमरे में प्रवेश किया। सिर पर एक बढ़िया कुल्ला तथा पेशावरी लुङ्गी और गले में मफ़लर लगाए था, परन्तु मुरझाया हुआ मुँह लेकर वह गवाहों के कटहरे में आकर खड़ा हुआ।

गवाह ने कहा—'मेरा असली नाम मङ्गतराम है। पहले मैं स्कूल में पढ़ाया करता था। फिर प्रेस में नौकरी करने लगा। मैंने प्रेस भी छोड़ दिया और हिन्दू सभा के 'सङ्गठन पत्र' में काम करने लगा। इस पत्र के सम्पादक श्री० कृष्णकुमार बर्म्मा थे! वहीं मेरा यशपाल से भी परिचय हुआ। यशपाल मेरे दफ़्तर में आया करता था। वह उन दिनों नेशनल कॉलेज में पढ़ता था। बलदेवराज से उन्हीं दिनों मेरा परिचय हुआ। बलदेवराज समाज सुधारक था, परन्तु यशपाल क्रान्तिवादी था। मुझे रावलपिण्डी में नौकरी मिल जाने के कारण छः मास 'सङ्गठन' में काम करने पश्चात, मैं वहाँ चला गया। वहाँ अभियुक्त पं० रूपचन्द्र मैनेजर था। कृष्णगोपाल तथा सरनदास से मेरा परिचय वहीं पर हुआ। रावलपिण्डी में मैंने एक छोटा सा लेख लिखा जिसका शीर्षक 'मन्ज़िले-आज़ादी' था। इसका सारा ख़र्च मैंने स्वयं उठाया। अपना नाम मैंने लेखक के स्थान पर नहीं दिया, क्योंकि मुझे डर था कि पुलिस कहीं मेरे पीछे न लग जाय। लेखक के स्थान पर मैंने "आशिक़े-हिन्द" लिख दिया। इन्हीं दिनों मैंने अपना नाम भी मङ्गतराम छोड़ कर, इन्द्रपाल रख लिया।

मि० सलीम (जज)—"तुमने नाम क्यों बदला?"

गवाह ने जवाब दिया—"लोग मुझे 'मँगतू' कह कर पुकारते थे, जो मुझे अच्छा नहीं लगता था। दूसरे मैंने यशपाल के नाम की नक़ल की।" उसने फिर बयान प्रारम्भ करते हुए कहा—

१९२६ में, जब मैं 'हिन्दू-पत्र' में काम करता था, यशपाल मेरे पास आया करता था। एक बार सरदार भगतसिंह भी यशपाल के साथ आए और मेरा परिचय उनसे हुआ। सरदार भगतसिंह ने कहा कि परीमहल में नवयुवकों की एक सभा होने वाली है, तुम भी वहाँ आना। मैं वहाँ गया तो लाला केदारनाथ सहगल, सरदार भगतसिंह तथा कई और व्यक्ति वहाँ उपस्थित थे। वहाँ एक नवयुवकों की सभा स्थापित करने का निश्चय किया गया, जिसका नाम "नौजवान भारत सभा" रक्खा गया। इसका उद्देश्य नवयुवकों में राष्ट्रीय भावों का प्रचार करना था। एक दिन यशपाल, सुखदेव को मेरे मकान पर ले आए, परन्तु मुझे उसका नाम नहीं बताया। वह मेरे पास एक बेग रख गए और दो सप्ताह के पश्चात वे वह बेग वापस ले गए। मुझे पता नहीं, उस बेग में क्या था। सुखदेव के नाम का मुझे उस समय पता लगा, जब वह गिरफ़्तार कर लिया गया। सरदार भगतसिंह को मेरे मकान का पता यशपाल ने दे दिया था। एक दिन सरदार भगतसिंह ने आकर काकोरी के शहीदों की तस्वीरों के नीचे कुछ कविताएँ मुझसे उर्दू में लिखवाईं और बताया कि वे कीरती में छपेंगी। मैंने यह काम कर दिया। सरदार भगतसिंह ने और भी कई पोस्टर मुझसे लिखवाए, जिनके मैं उनसे पैसे नहीं लिया करता था। १७ नवम्बर को लाला लाजपतराय जी का देहान्त हुआ। लाला जी को पुलिस ने पीटा था उसीके घावों से उनका प्राणान्त हुआ था। मैंने यशपाल से कहा कि हमें उसी पुलिस वाले को, जिसने लाला जी को पीटा था, मार कर बदला लेना चाहिए। यशपाल ने कहा कि इस प्रकार जोश में आने से हानि होती है, इसलिए तुम किसी गुप्त सोसाइटी से मिल कर काम करो। मैंने कहा कि मैं तो किसी गुप्त सभा को नहीं जानता। यशपाल ने कहा कि सुखदेव गुप्त सभा का प्रान्तीय सञ्चालक है। मुझे यशपाल की बातों से यह भी पता चला कि वह भी गुप्त समिति का मेम्बर है। एक मास पश्चात जब मैं दफ़्तर में बैठा था, मैंने सुना कि लाला जी को पीटने वाले, पुलिस अफ़सर की हत्या कर डाली गई है। मुझे यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई।

८ अप्रैल १९२९ को मैंने पढ़ा कि सरदार भगतसिंह तथा श्री० बटुकेश्वर दत्त ने असेम्बली में बम फेंका है। कुछ दिन पश्चात यह समाचार-पत्रों में छपा कि इन दोनों में से एक इक़बाली गवाह बन गया है। मैंने यह बात यशपाल से कही। उसने कहा कि इन दोनों में से कोई इक़बाली गवाह नहीं बनेगा और वे अदालत में एक महत्वपूर्ण बयान देंगे, जिसका बड़ा प्रभाव पड़ेगा। उन दोनों ने पार्टी की आज्ञानुसार ही यह कार्य किया था और पार्टी के कहने पर ही वे बयान देंगे। यशपाल ने बताया कि पार्टी का नाम 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी, है।

१०वीं जनवरी को फिर इन्द्रपाल ने अपने बयान के सिलसिले में कहा कि "जब मैं पार्टी का मेम्बर बन गया, तो मैंने यशपाल से पूछा कि क्या सॉण्डर्स की हत्या हमारी पार्टी ने की है? यशपाल ने उत्तर दिया कि पार्टी के मेम्बरों को भी सब बातों का पता नहीं दिया जाता। मेरे पूछने पर यशपाल ने बताया कि भारत की आर्थिक तथा राजनैतिक दशा बहुत बिगड़ गई है, और यह उस समय तक नहीं सुधर सकती, जब तक भारतवर्ष में विदेशी शासन है। हमारी पार्टी का कार्य-क्रम देश में आतङ्क फैलाना है जो महान क्रान्ति की पहली सीढ़ी है। प्रचार करके पार्टी के मेम्बर बनाना, चन्दा इकट्ठा करके अथवा डाके डाल कर रुपया एकत्र करना तथा शस्त्र संग्रह करना—पार्टी के तीन प्रधान कार्य हैं। पार्टी की आज्ञा सबको माननी पड़ती है और जो व्यक्ति पार्टी का भेद खोलेगा उसे मृत्यु-दण्ड दिया जायगा। मैंने वचन दिया, कि मैं पार्टी के नियमों का पालन करूँगा। जब काश्मीरी बिल्डिङ्ग में बम-फ़ैक्टरी पकड़ी गई, तो यशपाल बाहर चला गया। यशपाल ने मुझे एक पत्र लिखा, जिसमें मुझे यह बताया गया था, कि जिस पत्र पर 'प्राणनाथ' लिखा हो वह पत्र मैं यशपाल की बहिन प्रेमवती को दे दिया करूँ। कुछ दिन पश्चात मेरे पास एक और पत्र आया जिसमें 'प्राणनाथ' लिखा हुआ था। मैंने वह पत्र यशपाल की बहिन को दे दिया। इन्हीं दिनों मेरा विवाह होने वाला था। यशपाल ने इसका विरोध किया और कहा कि क्रान्तिकारी दल के लोगों को विवाह नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे काम में रुकावट पैदा होती है। मैंने उत्तर दिया कि मैं विवाह को रोकने का यत्न करूँगा। यशपाल ने मुझसे यह भी कहा कि भविष्य में जिन पत्रों पर 'आनन्द स्वरूप' लिखा हो, वे पत्र मैं उसकी बहिन को दे दिया करूँ। बाक़ी मैं स्वयं खोल लिया करूँ। कुछ दिनों के पश्चात यशपाल की एक चिट्ठी आई जिस पर 'आनन्द स्वरूप' लिखा था। मैंने वह चिट्ठी श्रीमती प्रेमवती को दे दी। श्रीमती प्रेमवती ने मुझे एक चमड़े का बेग, जो बहुत भारी था और उसके साथ एक पत्र भी दिया। मैं दोनों चीज़ें लेकर दिल्ली आया, और यशपाल से क़िला फ़िरोज़शाह तुग़लक़ में मिला, और वे दोनों वस्तुएँ उसको सौंप दीं। यशपाल ने बेग खोला तो उसमें ख़ाली बम रक्खे थे। यशपाल ने बमों को एक कमरे में बन्द कर लिया। जाते समय यशपाल ने कहा कि काम का समय आ

गया है, इसलिए तैयार हो जाओ। मैं ख़ाली बैग लेकर काम करने के लिए तैयार हो, लाहौर वापस लौट आया।"

१२वीं जनवरी को इन्द्रपाल ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा, कि "जब मैं लाहौर पहुँचा तो यशपाल की बहिन को ख़त देने के लिए गया। वह बीमार थीं और उन्होंने मुझसे कहा कि दो-तीन दिन में रुपए का बन्दोबस्त हो जाएगा। दो तीन के पश्चात अभियुक्त धर्मपाल मेरे पास आया और मुझे बताया कि श्रीमती प्रेमवती बीमार होकर बाहर चली गई हैं, अतएव जो पत्र आए हों, वह श्री० भगवतीचरण की धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गादेवी को पहुँचा आना। इसके पश्चात यशपाल का एक पत्र आया, जिसमें यह लिखा था कि मैं श्रीमती दुर्गादेवी से रुपए लेकर देहली पहुँचू। मैं श्रीमती दुर्गादेवी को पहले नहीं जानता था। मैं पत्र उनके पास ले गया और राह के ख़र्च के लिए दस रुपए उन्होंने मुझे दिए। मैं ४ सितम्बर को देहली पहुँचा। वहाँ यशपाल मुझे मिला। यशपाल के साथ हम लक्ष्मी नारायण की धर्मशाला की ओर जा रहे थे कि रास्ते में श्री० भगवती चरण से भेंट हो गई। मैं श्री० भगवतीचरण को पहचानता था, परन्तु वह मुझे नहीं पहचानते थे। वहाँ से हम यमुना-तट की ओर साइकलों पर गए। यमुना-तट जाकर मुझको बताया गया कि पार्टी ने मुझको साधु बन कर बैठने के लिए बुलाया है। मैंने कहा, कि मैं तैयार हूँ।

"इसके पश्चात यशपाल ने मुझे बताया कि देहली से ९ मील की दूरी पर रेलवे लाइन के पास मुझे अपना अड्डा जमाना पड़ेगा। यह स्थान देहली से मथुरा को जाने वाली सड़क के किनारे पर था और वहाँ पर एक पियाऊ भी था। ४॥ बजे हम लोग नए बाज़ार में गए। श्री० भगवतीचरण पहले ही से वहाँ हाज़िर थे। श्री० भगवतीचरण का नाम वहाँ पर हरिश्चन्द्र तथा यशपाल का नाम जगदीशचन्द्र रक्खा हुआ था। वहाँ सब लोगों को यह बताया गया था, कि हरिश्चन्द्र इन्शोरेन्स का काम करते हैं तथा जगदीशचन्द्र के पिता सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस हैं। यशपाल के कहने के अनुसार मैंने अपने आपको जगदीशचन्द्र का छोटा भाई बताया! वहाँ पर इन लोगों ने एक नौकर रक्खा हुआ था, जिसका नाम परभाई था। उस मकान में दो फ़ौजी टोप भी रक्खे हुए थे। दूसरे दिन श्री० भगवतीचरण बाहर से एक बक्स लाए, जिसमें कि साधु बनने का सामान था। मैंने उनके कहने के अनुसार अपना शिर मुँड़वा लिया। सायङ्काल के ७ बजे मैं क़िला फ़िरोज़शाह तुग़लक में गया और साधु का भेस बना कर अपने अड्डे पर चला गया। वहाँ पर मुझसे लोगों ने पूछा कि तुम कहाँ से आए हो, तो मैंने उनको बता दिया कि मैं तीर्थयात्रा करके लौट रहा हूँ और यह स्थान अच्छा देख कर मेरा मन कुछ दिन यहाँ ठहरने को चाहता है।

"मैं गाँव में जाकर भीख माँग लाया करता था। एक दिन मैंने गाँव से केवल आध छटाँक आटा पाया। वह लाकर मैंने चींटियों को डाल दिया। लोगों ने मुझसे इसका कारण पूछा तो मैंने उनसे कह दिया, कि यह भी शिव जी महाराज की सृष्टि हैं, इनका भी पालन करना हम लोगों का कर्त्तव्य है। इससे लोग मेरे बड़े भक्त हो गए और जाकर गाँव वालों से कह दिया कि जब भी बाबा जी गाँव में आवें तो इनको काफ़ी भिक्षा दी जानी चाहिए, जिससे कि इनका गुज़र हो जाए।

"मेरे पास श्री० भगवतीचरण तथा यशपाल भी वहाँ पर आया करते थे। लोगों के पूछने पर मैंने बताया कि यह देहली के सेठ हैं और यहाँ असामियों से रुपया वसूल करने आते हैं। मैंने एक बार इनके घर में एक स्त्री का इलाज किया था, इसीसे यह मेरे बहुत भक्त हो गए हैं।

"इन्हीं दिनों यशपाल ने मुझे कहा, कि पियाऊ तथा रेलवे लाइन के भीतर का फ़ासला नापना और पता करना कि रात को गाँव वाले कहाँ पर सोते हैं और रात को कुत्ते कहाँ-कहाँ पर भूँकते हैं इत्यादि। रात को होने वाली सब बातों का ठीक-ठीक पता लगाऊँ। उसने मुझे बताया कि वाइसराय २७ अक्टूबर को विलायत से आने वाले हैं उस दिन उनकी गाड़ी को बम से उड़ाया जायगा।

"रात के समय १२ बजे के लगभग यशपाल ने बम की परीक्षा की। बैटरी के साथ एक बल्ब लगाया गया बैटरी के एक ओर कोई जल-पदार्थ (Liquid) तथा दूसरी ओर कोई पौडर लगा दिया गया। इस बैटरी के समीप थोड़ी सी गन-कॉटन (Gun-cotton) रख दी गई। ठीक बारह बजे गन-कॉटन (Gun-cotton) भक से जल गई। इतने में नीचे से किसी ने पूछा कि इस मकान पर कौन रहता है। मैंने उठ कर देखा कि नीचे दो सिपाही खड़े हैं। मैंने यशपाल से कहा कि दो सिपाही आ गए हैं और सारा काम बिगड़ने वाला है। यशपाल ने कहा कि मैं अपनी पिस्तौल निकालता हूँ। परन्तु मैंने उसको कहा कि ठहरो मैं सिपाहियों से बात करता हूँ। मैंने सिपाहियों से कह दिया कि भाई यहाँ पर बाबा लोग रहते हैं। सिपाहियों के पूछने पर मैंने बताया कि मेरे पास मेरा एक भक्त बैठा है।" मामला कल पर स्थगित किया गया।

पुलिस-इन्सपेक्टर का बध

कलकत्ता का ७वीं जनवरी का समाचार है कि पुलिस-इन्सपेक्टर तरिणी मुखर्जी के बध का मामला आज अलीपुर स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने पेश हुआ। मि० क्रेग इन्सपेक्टर-जनरल पुलिस ने गवाही देते हुए कहा कि "जब गाड़ी चाँदपुर स्टेशन पर पहुँची तब मैं सो रहा था। गोली की आवाज़ से मेरी आँख खुल गई। मैंने बाहर झाँक कर देखा कि दो बङ्गाली युवक एक मनुष्य पर गोली चला रहे हैं। मैंने अपना पिस्तौल निकाली और आक्रमणकारियों पर गोली चलाई। परन्तु गोली लगी नहीं। मेरे अर्दली ने भी दो गोलियाँ चलाईं, परन्तु वे भी बेकार हुईं। आक्रमणकारी इतनी देर में लापता हो गए। बहुत ढूँढ़ने पर भी उनका कुछ पता नहीं लगा। दूसरे दिन सवेरे पता लगा कि अभियुक्त मेहर कालीबारी स्टेशन पर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। ९वीं जनवरी को डॉ० अधिकारी ने गवाही देते हुए कहा कि—"मैंने इन्सपेक्टर तरिणी मुखर्जी की लाश की जाँच की थी। लाश में १२ घाव लगे थे। जाँच पूर्णतया नहीं हो सकी, क्योंकि चीर-फाड़ नहीं की गई। बाहरी घावों से प्रतीत होता था कि इन्सपेक्टर की मृत्यु गोली लगने से हुई है। एक गोली उसके हृदय में, दूसरी पेट तथा तीसरी फेफड़े में लगी होगी। जब कपड़े उतारे गए तो एक गोली और मिली।" डॉ० मित्रा ने कहा कि "एलीमोनियमका बम विस्फोटक पदार्थों से भरा था। इस बम के फटने से ३० गज़ की दूरी तक के मनुष्य घायल हो सकते थे।"

पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट की गवाही

१३वीं जनवरी को मि० दास गुप्ता सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस ने गवाही देते हुए कहा, कि "१ली दिसम्बर को मैं असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस था। जब मैं प्रातः-काल परेड ग्राउण्ड में खड़ा था, तब मुझे सुपरिण्टेण्डेण्ट का आदेश मिला कि चाँदपुर स्टेशन पर इन्सपेक्टर तरिणी मुखर्जी गोली से मार डाला गया है, और आक्रमणकारियों की, जो गिरफ़्तार नहीं किए जा सके, लक्सम स्टेशन की ओर खोज की जाय। मैं तीन सशस्त्र सिपाही, एक अर्दली तथा एक मोटर-ड्राइवर को साथ ले लक्सम की ओर चल पड़ा। लक्सम स्टेशन पर जाकर मैंने आक्रमणकारियों की हुलिया पूछी, तो मुझे बताया गया कि आक्रमणकारी २०-२५ वर्ष की आयु के दो हिन्दू नवयुवक हैं, जिन्होंने शाल तथा हरे रङ्ग की चादरें ओढ़ रक्खी हैं। लक्सम स्टेशन से हुलिया लेकर मैं चाँदपुर स्टेशन की ओर मोटर में गया। मेहरकाली-बारी स्टेशन से कोई चौथाई मील पश्चिम की ओर मैंने दो नवयुवकों को, जो लाल और हरे रङ्ग की चादरें ओढ़े थे, देखा। मैंने ड्राइवर को मोटर रोकने की आज्ञा दी। हम सबने झपट कर दोनों को क़ाबू में कर लिया। हमने उन दोनों से पूछा कि 'तुम कहाँ से आए हो, और कहाँ जा रहे हो।' कोई विश्वासपूर्ण उत्तर न पाकर, जब मैंने उनकी तलाशी ली, तो दो रिवॉल्वर तथा एक बम मिला। इतनी देर में वहाँ कई देहाती लोग इकट्ठे हो गए। समय बहुत हो गया था और इस डर से कि कहीं अभियुक्तों के और साथी आकर आफ़त न मचाएँ, मैंने वहाँ से टल जाना ही ठीक समझा। हमने बम को एक ठण्डी जगह पर लपेट कर रख दिया ताकि फट न जाए और अभियुक्तों को वहाँ से पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट के पास ले गए। अभियुक्तों ने मुझे अपना नाम कालिप्रसाद चक्रवर्ती तथा रामकृष्ण विश्वास बताया था। वहाँ मैजिस्ट्रेट के सामने अभियुक्तों की तलाशी ली गई, और तलाशी में जितनी वस्तुएँ मिलीं उनको रजिस्टर में लिख दिया गया।"

जिरह करने पर गवाह ने कहा कि "अभियुक्तों ने गिरफ़्तार होते समय कोई मुक़ाबिला नहीं किया। रिवॉल्वर गाँव वालों के आने से पहले ही इन्सपेक्टर के हाथ में नहीं थे। बम अभियुक्तों के कपड़ों में मिला था, पास के खेतों में नहीं मिला था। मैंने दोनों अभियुक्तों की तलाशी अच्छी प्रकार से नहीं ली, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं इनके साथी जो बड़े भयङ्कर होते हैं, पहुँच कर कहीं आफ़त न मचाएँ।"

—पटना का ७वीं जनवरी का समाचार है कि मोतीहारी के मैजिस्ट्रेट श्री० पुष्कर ठाकुर के इजलास में डाका डालने तथा षड्यन्त्र करने के अपराध में १३ अभियुक्तों का विचार आरम्भ हुआ। सरकारी वकील श्री० सैयद अब्दुल अज़ीज़ ने प्रारम्भिक भाषण देते हुए कहा, कि अभियुक्तों ने मिल कर षड्यन्त्र रचा था, जिसके परिणाम-स्वरूप गत मई मास में दरभङ्गा तथा चम्पारन में डाके डाले गए।

यद्यपि अभियुक्त जोगेन्द्र शुक्ल की नाईं दो-एक व्यक्ति क्रान्तिकारी दल से सम्बन्ध रखते हैं, तथापि यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि ये डाके राजनैतिक-ध्येय से डाले गए थे। पूर्व में कॉङ्ग्रेस से सम्बन्ध रखने वाले रामविनोद ने, जो कि आर्थिक कष्टों में था, एक गिरोह तैयार किया था, जिसमें गुण्डे भी शामिल किए गए थे।

इन दोनों डाकों में बन्दूकें तथा तलवारें काम में लाई गई थीं तथा व्यक्तिगत लाभ ही अभियुक्तों का ध्येय था। दोनों डाकों में कोई १५,०००) रुपया प्राप्त हुआ।

इन अभियुक्तों में जोगेन्द्र शुक्ल का सम्बन्ध मौलानियाँ राजनैतिक डाके से भी है। उसके पास तीन पिस्तौलें मिली हैं। इस मामले में कुल १५ व्यक्तियों का सम्बन्ध है—दस अभियुक्त, दो फ़रार तथा ३ इक़बाली गवाह।

—लाहौर का ९वीं जनवरी का समाचार है कि लाहौर षड्यन्त्र केस के तीन अभियुक्तों—श्री० भीमसेन, गोकुलचन्द तथा कुन्दनलाल ने ट्रिब्यूनल को एक प्रार्थना-पत्र इस आशय का दिया है कि उन्होंने मैजिस्ट्रेट के सामने जो बयान दिए थे, वे उन्हें वापस लेना चाहते हैं।

गवर्नर-गोली-काण्ड केस

दो नवयुवक और गिरफ़्तार

लाहौर का ८ वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० लछमीचन्द तथा किशनचन्द गवर्नर-गोली काण्ड केस में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। इस मामले में पुलिस ने ताँदलियाँवाले से एक युवक दसौंधाराम को भी गिरफ़्तार किया था। मालूम हुआ है कि दसौंधाराम इक़बाली गवाह बन गया है और उसने एक बयान भी पुलिस को दिया है।

—लाहौर का १०वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० दुर्गादास तथा रणवीरसिंह की ज़मानत के लिए जो प्रार्थना-पत्र हाईकोर्ट में दिया गया था, उसका फ़ैसला आज सेशन्स जज ने सुना दिया। जज ने अपने फ़ैसले में लिखा है, कि दसौंधाराम इक़बाली गवाह का बयान पढ़ कर इस बात पर विश्वास कर लेना सहज है, कि दोनों अभियुक्तों ने गवर्नर के मारने के लिए षड्यन्त्र रचा था। इस कारण इनको छोड़ देना न्यायसङ्गत न होगा।

इक़बाली गवाह पर जूता फेंका गया

अमृतसर का ९वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ उस दिन मि० एण्डरसन सेशन्स जज के सामने अमृतसर षड्यन्त्र केस के पाँचों अभियुक्तों का मामला पेश किया गया था। इक़बाली गवाह हरीन्द्रनाथ बोस की गवाही हो रही थी तो एक बड़ी मनोरञ्जक घटना हुई। जब इक़बाली गवाह कचहरी से बाहर जाने लगा तो अभियुक्त श्री० नारायण ने एक जूता ज़ोर से फेंका, जो गवाह के मुँह पर लगा। जज के पूछने पर अभियुक्त ने कहा कि गवाह मेरी ओर देख कर मुँह चिढ़ा रहा था। मैंने पुलिस से शिकायत की, परन्तु इसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। जज ने अभियुक्त को चेतावनी देकर छोड़ दिया, कि वह फिर कभी ऐसा न करे।

कर्नल मिलर पर बम

अजमेर का ९वीं जनवरी का समाचार है कि कल संध्या समय सेण्ट्रल जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री० कर्नल मिलर की मोटर पर एक बम फेंका गया। बम फेंकने वाले दो नवयुवक थे, जो शीघ्र ही वहाँ से लापता हो गए। पुलिस ने सारा शहर तथा आसपास की पहाड़ियाँ छान डालीं, परन्तु आक्रमणकारियों का कुछ पता ही नहीं चला।

प्रोफ़ेसर निगम फिर हवालात भेज दिए गए

देहली का ९ वीं जनवरी का समाचार है, कि श्रीयुत प्रोफ़ेसर निगम, एम० ए० जो कि दिल्ली षड्यन्त्र केस के एक अभियुक्त हैं, मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किए गए। श्री० निगम कुछ अस्वस्थ दिखाई पड़ते थे। आपका वज़न बहुत कम हो गया है। पुलिस का बड़ा कड़ा पहरा था। मैजिस्ट्रेट ने उन्हें फिर हवालात भेज दिया।

बनारस में बम फटा

बनारस का ९वीं जनवरी का समाचार है कि कल रात को कोदाई चौकी पुलिस स्टेशन में एक बम फेंका गया। कुछ शीशे के टुकड़े जो बम में थे, एक सिपाही को लगे। उसे चोट नहीं लगी, केवल कोट फट गया। इस सम्बन्ध में अभी तक कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई।

तीन अभियुक्त ज़मानत पर छोड़ दिए गए

लाहौर का समाचार है कि श्री० वीरेन्द्र, इहसान-इलाही तथा जयदयाल ज़मानत पर छोड़ दिए गए हैं। ये लोग गवर्नर पर गोली चलाने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे।

क्या श्री० सुखदेवराज गिरफ़्तार नहीं हुए ?

पिछले सप्ताह में यह समाचार पत्रों में छपा था कि लाहौर षड्यन्त्र केस के फ़रार अभियुक्त श्री० सुखदेवराज को पुलिस ने दिल्ली में गिरफ़्तार कर लिया है।

इस समाचार को पढ़ कर श्री० सुखदेव के पिता ला० गण्डामल जी ने सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस, दिल्ली को तार दिया कि यदि श्री० सुखदेव की गिरफ़्तारी का समाचार ठीक है, तो उससे मिलने की आज्ञा दी जाय। पर, उन्हें जवाब मिला कि श्री० सुखदेव दिल्ली में गिरफ़्तार नहीं किए गए।

इसके बाद का एक तार इन्सपेक्टर जनरल पुलिस पञ्जाब को दिया गया, कि यदि गिरफ़्तारी का समाचार ठीक है तो यह बताया जाय कि अभियुक्त को कहाँ रक्खा गया है। परन्तु इसका उत्तर भी यही आया कि श्री० सुखदेव अभी गिरफ़्तार नहीं हुए।

—कलकत्ते का ७वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० दिनेश गुप्त, जो राइटर बिल्डिङ्ग में कर्नल सिम्पसन



बङ्गाल की जेलों के इन्सपेक्टर-जनरल स्वर्गीय लेफ़्टनेन्ट-कर्नल एन० एस० सिम्पसन, आई० एम० एस० जो विगत ८ वीं दिसम्बर को बङ्गाल के क्रान्तिकारियों की गोली के शिकार हुए थे !

के बध के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे, २१ जनवरी तक के लिए हवालात भेज दिए गए हैं।

बनारस में डाक की मोटर पर सशस्त्र डाका

बनारस का ८वीं जनवरी का समाचार है, कि शहर में सशस्त्र डाकुओं की एक मण्डली ने डाक की मोटर लूटने का प्रयत्न किया। मोटर डाक लेकर शहर के डाकघर से बनारस छावनी के रेलवे-स्टेशन की तरफ़ जा रही थी। यह मोटर जब लोहार बाज़ार में पहुँची तो दो व्यक्तियों ने इसका रास्ता रोक लिया। दो अन्य आदमियों ने ड्राइवर को पिस्तौल दिखा कर कहा—"चुप रहो, नहीं तो जान से हाथ धो बैठोगे ? और सब थैले हमारे सुपुर्द करके चुपचाप अपना रास्ता नापो।" परन्तु इतने में पीछे से एक और मोटर लॉरी आ गई और डाकू एक बम फेंक कर भाग गए, जिससे कोई उनका पीछा न करे।

लेमिङ्गटन रोड गोली-काण्ड

११७ सरकारी गवाह

बम्बई ८ जनवरी का समाचार है कि आज मि० एच० पी० एच० दस्तूर चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट की कचहरी में लेमिङ्गटन रोड गोलीकाण्ड के १२ अभियुक्त पेश किए गए। ४ अभियुक्त श्री० पी० बी० बॉपीकर, वैशङ्कर मोघे, काने तथा कृष्ण वैद्य पर्याप्त प्रमाण न मिलने के कारण छोड़ दिए गए। शेष आठ श्री० गणेश रघुनाथ वैशम्पायन, दयोधर, बरवे, वापट, शिंदे, उपाध्याय, घमनकर तथा मोघे के विरुद्ध धारा १२० ख, ३०७ तथा १०९ के अनुसार अभियोग चलाया जायगा।

मि० मानकर, सरकारी वकील ने कहा कि इस अभियोग में ११७ सरकारी गवाह पेश किए जाएँगे। कम से कम २० दिन इन लोगों की गवाही में लगेंगे। मैजिस्ट्रेट ने कहा कि मैं लगातार बैठ कर इस मुक़दमे को शीघ्र ही समाप्त करने का प्रयत्न करूँगा।

मुक़दमा २२ जनवरी के लिए स्थगित कर दिया गया है। गवाहियाँ २६ जनवरी से प्रारम्भ की जाएँगी।

—करवाल (कानपुर) का ९वीं जनवरी का समाचार है कि आधी रात के समय सेठ बनवारीलाल के मकान में दस सशस्त्र मनुष्य घुस आए। डाकुओं ने सेठ जी को जगाया, और उनसे पूछा, कि रुपया कहाँ है। सेठजी डाकुओं को देख कर घबरा गए, परन्तु जी कड़ा करके कहने लगे कि घर में रुपया नहीं है। परन्तु जब सेठ जी को तीन-चार चपतें रसीद की गईं, तो सेठजी ने सन्दूक़ की चाबियाँ डाकुओं के सुपुर्द कर दीं। डाकुओं ने सेठ जी से कहा कि हम रुपया अपने व्यक्तिगत ख़र्च के लिए नहीं चाहते, किन्तु उसे देश-सेवा में ख़र्च करेंगे। इसके पश्चात डाकुओं ने सन्दूक़ खोला, और रुपया लेकर चम्पत हो गए। सेठ जी ने उनके जाने के पश्चात बहुत शोर मचाया, परन्तु कुछ लाभ न हुआ। डाकुओं ने गले में लाल रूमाल बाँध रक्खे थे और जाते समय वे सब 'बन्देमातरम्' के नारे लगाते गए।

—इन्दौर का १०वीं जनवरी का समाचार है कि गत गुरुवार को रात के दस बजे एक मकान के चबूतरे पर नारियल जैसी कोई वस्तु रक्खी थी। मकान का मालिक नाई था। उसके १८ साल के माधव नामक लड़के ने जब उसे तोड़ने की चेष्टा की, तो एक भयङ्कर धड़ाका हुआ और माधव सख़्त घायल हो गया। वह अस्पताल भेज दिया गया है। कहा जाता है कि अस्पताल में दूसरे दिन माधव का देहान्त हो गया। दूसरे दो व्यक्तियों को सख़्त चोट आने की ख़बर है। उसके टूटे फूटे अंश की परीक्षा के बाद पुलिस ने उसे बम बताया है। इसी सम्बन्ध में यहाँ के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्रीयुत भगवानदास अग्रवाल के घर की तलाशी भी ली गई। इस घटना से शहर में बड़ी सनसनी फैली है।

कानपुर में क्रान्तिकारियों का उपद्रव

डिपुटी-कलेक्टर पर बम फेंका गया

कानपुर का १३वीं जनवरी का समाचार है कि शहर में क्रान्तिकारियों ने उपद्रव मचा रक्खा है। थोड़े ही दिन हुए कि एक व्यक्ति श्री० अमरनाथ सिंह, सय्यद तक़ीहुसैन डिपुटी-कलेक्टर की कचहरी में सन्देह में गिरफ़्तार किया गया था। तलाशी लेने पर उसके पास कोबरा बूट-पॉलिश की डिब्बी में बन्द एक बम मिला। आज सबेरे का समाचार है कि मि० शौकतअली डिपुटी-कलेक्टर पर रात के समय किसी ने बम फेंका। डिपुटी-कलेक्टर आजकल दौरा पर हैं, और बम उनके ख़ीमें पर फेंका गया। परन्तु कोई हानि नहीं हुई। पुलिस बड़े यत्न से आक्रमणकारी की खोज लगा रही है।

—बनारस का १२वीं जनवरी का समाचार है कि तीन-चार दिन पहले दशाश्वमेध-पुलिस-थाने पर एक बम फेंका गया था। आज एक बम चौक के पुलिस थाने के पास पड़ा हुआ पाया गया। जब एक मुसलमान लड़का उसे उठाने लगा, तो वह फट गया जिससे उसके हाथ में बड़ा भारी घाव हो गया है। पुलिस इन बम फेंकने वालों तथा डाक की लॉरी पर डाका डालने वालों की बड़ी खोज कर रही है। इसी सम्बन्ध में पुलिस ने कई बङ्गाली सज्जनों की तलाशियाँ भी ली हैं, तथा कुछ गिरफ़्तारियाँ भी कीं, परन्तु पीछे सब छोड़ दिए गए।



[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

एक दिन 'देहि पदपल्लव मुदारम्' दल के एक सज्जन तशरीफ़ लाए। मुँह लगडन की ओर था, मगर चेहरे पर क़ौमी-मुहब्बत के आसार नुमायाँ थे। हिज़ होलीनेस को देखते ही सरपट बोल उठे—"गुरु जी ! ए गुरु जी ! ग़ज़ब हो गया ! सर महम्मद इक़बाल ने राउण्डटेबिल पर पानी फेर दिया !" श्रीजगद्गुरु ने उनके दिमाग़ पर एक नज़र पटक कर कहा—"शान्त हो वत्सल, सर महम्मद इक़बाल तो लगडन गए ही नहीं। किसी दूसरे के हाथ से कोई ग्लास लुढ़क गया होगा और कुछ काग़ज़-वाग़ज़ भींग गए होंगे। इसके लिए इतना घबराने की क्या ज़रूरत है ?" उन्होंने फिर सरपट शुरू किया—"ग्लास नहीं, गुरु जी ! उन्होंने इलाहाबाद में एक 'स्पीच' दे डाली है। कहते हैं—हिन्दोस्तान में एक 'मुस्लिम-राज्य' क़ायम होना चाहिए।" अब डॉक्टर मुञ्जे और राजा नरेन्द्रनाथ एक साथ ही भड़क जायँगे; दाढ़ी-चोटी का आसन्न गँठबन्धन काफ़ूर हो जायगा ! उन्हें बादशाहत का शौक़ था, तो ज़रा ठहर जाते, राउण्डटेबिल की 'दराज़' से हमारे स्वयम्भू-प्रतिनिधियों को 'डोमिनियन स्टेटस' तो ले लेने देते ! स्पीच झाड़ने की इतनी मारामार क्या पड़ी थी ?" इसके बाद एक आहे-सर्द खींच कर रूमाल से मुँह पोंछते हुए, भर्राई हुई आवाज़ में बेचारे बोले—

दी मुअज़्ज़िन ने अज़ाँ वस्ल की शब पिछले पहर,
हाय ! कमबख़्त को किस वक़्त ख़ुदा याद आया !

❀

सर इक़बाल दीनदार आदमी हैं; मुसलमान हैं। वे चचा चर्चिल की तरह ढालते न होंगे, परन्तु बहकने में तो उन्होंने चचा क्या, बड़े-बड़े पियक्कड़ों के भी कान कतर डाले हैं ! एक तो कल्पना-प्रस्रवण कवि-हृदय, ऊपर से पड़ गया 'शेख़-चिल्लीपन' का पुट ! मानों 'तितलौकी नीम पर चढ़ गई !' सुरूर में आए, तो तख़्ते-ताऊस की याद आ गई ! बस, झट हुक्म फ़रमाया, कि हिन्दोस्तान में मुस्लिम बादशाहत क़ायम हो जानी चाहिए, नहीं तो राउण्डटेबिल की 'दाँत निपोरई' में मुसलमान साथ न देंगे और लगडन से लौट कर स्वतन्त्र रूप से देशोद्धार आरम्भ कर देंगे !

❀

इतने में सुरूर का दूसरा दौरा हुआ। सिन्ध, पञ्जाब और सीमान्त प्रदेश भारत से अलग कर दिए गए, कुफ़्र टूटने लगा, दीवाने-आम और दीवाने-ख़ास में हज़ार बत्ती वाले शमादान जलने लगे, हुस्नो-तरब का बाज़ार गरम हो गया, जिन्होंने झूम-झूम कर—"पिला साक़िया अर्ग़वानी शराब, जो पीरी में दे नौजवानी शराब !" के नारे बुलन्द किए। मगर गुस्ताख़ी माफ़, हज़रत ने यह तो फ़रमाया ही नहीं कि 'दारुल-ख़िलाफ़त' (राजधानी) की ज़ीनत किस शहर को बख़्शी जायगी ?

❀

श्रीजगद्गुरु की तो अर्ज़ है, कि इसके लिए लाहौर ही मौज़ूँ होगा। गो दिल्ली वाले बड़ा बावेला मचाएँगे; उसके गुज़िश्ता शानो-शौकत की दोहाई देकर कान खाने लग जाएँगे; मगर 'पान-इस्लाम' के ख़याल से उनका दावा ख़ारिज-बातिल समझा जायगा। फिर, लाहौर वाले ही क्यों दबने लगे, वे भी अपने तारीख़ी सबूत पेश करेंगे। इसलिए हुज़ूर अपने इस दोआगो की सलाह मानें और श्रीमुख से ही इस झगड़े का निपटारा कर दें, ताकि आइन्दा के लिए कोई अड़चन न रह जाय !

❀

ख़ुदानाख़्वास्ता, कहीं सुरूर का तीसरा दौरा हो जाता, तो बेचारे बङ्गाल की भी तक़दीर खुल जाती और लगे-हाथ मुर्शिदाबाद और ढाके में भी रौनक़ आ जाती। मगर जनाब, वहाँ भी कलकत्ते को लेकर एक झगड़ा खड़ा हो जाता। बावेला मचाने में बङ्गाली एक ही होते हैं। एक स्वर से चिल्ला उठते—"आँमरा कलिकाता भिन्न आर कोनो जायगा पछन्दो कोरीना।" मगर मालूम होता है, कि सिन्ध, पञ्जाब और सीमान्त प्रदेश की तरह बङ्गाल का पुण्योदय अभी नहीं हुआ है, वरना एक इतने बड़े 'मुस्लिम प्रधान' प्रदेश की व्यवस्था सर इक़बाल की सरकार कैसे भूलजाती ?

❀

मगर 'अन्धे को सूझा बहराइच' की तरह, इस सम्बन्ध में परमाराध्या 'हर होलीनेस' की एक निराली ही राय है। आप फ़रमाती हैं—"सर इक़बाल नौकरशाही के 'किट्' (Kt ?) हैं; वह उनकी क़द्र करती है और वे उसके क़द्रदाँ—एकदम 'अहोरूपमहोध्वनिः' वाला पवित्र सम्बन्ध है। इसीलिए मौक़ा देख कर उन्होंने एक शिगूफ़ा छोड़ दिया है। इससे कुछ जाहिल मुसलमान बादशाहत का ख़्वाब देखने लगेंगे, मुसलमानों से आन्दोलन को जो थोड़ी सी मदद मिल रही है, वह न मिलेगी, हिन्दू-मुसलमानों में नफ़ाक़ पैदा हो जायगा और नौकरशाही का काम बन जायगा। वरना 'सर' कुछ पागल थोड़े ही हो गए हैं, जो ऐसी बेतुकी हाँक देते।"

❀

भई, वाह ! बीबी हो तो ऐसी हो। क्या पते की कही है ! मगर हे जनाबा ! भाई परमानन्द आपकी बात बिलकुल न मानेंगे। उन्हें मुसलमानों के रग-रेशे तक की ख़बर है, वे सर इक़बाल को भी पहचानते हैं और भारत की आज़ादी पर अपना डील वार देने वाले मियाँ शौकत-अली को भी ! बेचारे मुद्दत से चिल्ला रहे हैं, कि मुसलमानों के दिलों में मुस्लिम-भारत की नींव पड़ गई है; ईंटें और सुर्ख़ी तैयार हो रही है, हिन्दुओं को 'सुन्नत' के लिए तैयार हो जाना चाहिए। मगर यहाँ तो सखी-नौकरशाही की शिकवा-गोई से ही किसी को फ़ुर्सत नहीं, दूसरी तरफ़ ध्यान कौन दे ?

❀

कुछ भी हो जनाब, अपने राम ने तो दाढ़ी घुटाना अभी से छोड़ दिया है, मँदारू मियाँ दर्ज़ी को ढीली मोरी के पाजामे के लिए भी फ़रमाइश दे दी है, नमस्कार-प्रणाम छोड़ कर 'अस्सलामालेकुम' का अभ्यास आरम्भ कर दिया है। मौक़ा आते ही 'जगद्गुरुत्व' को अलविदा कह 'पीरे-मुग़ाँ' की पदवी हासिल कर लेंगे और किसी 'तकिया' पर जम कर बैठ जायँगे; कविवर 'बिस्मिल' चाहे चिल्लाते ही रह जायँ कि—"हर घड़ी यादे-बुताँ रहती है दिल में 'बिस्मिल', कोई आसाँ नहीं, हिन्दू का मुसलमाँ होना।" मगर अपने राम तो इसे 'आसाँ' करके ही दम लेंगे। चाहे पड़े नौ या छः !

❀

बड़ा मज़ा रहेगा। 'मलिकुल शोरा' सर महम्मद इक़बाल शहन्शाहे 'हिन्दे-मुस्लिम' की सवारी निकलेगी गङ्गा-जमुनी तञ्जाम पर ! नक़ीब आवाज़ें देंगे—"हट जा घास वाली सामने से ! ओ मरदूद, हटती नहीं, क़ब्र में जायगी क्या ?" 'बिस्मिल' साहब जहाँपनाह की ख़िदमत में क़सीदा लिखेंगे—"पीरोमुर्शिद ! अगरचे मुझको नहीं, ज़ौक़ आराइशे सरोदस्तार ! कुछ तो जाड़े में चाहिए आख़िर, ता न दे बादे ज़महरीर आज़ार !" फिर लीजिए न, ख़िल्लत व सरोपा—पञ्ज हज़ारी मनसबदारी थोड़े ही कहीं गई है !

❀

परन्तु, शुभ कार्य में विघ्न उपस्थित करने वाले भी बड़े विचित्र होते हैं; बक़ौल बाबा तुलसीदास के "बिन काज दाहिने-बाएँ" आकर डट जाते हैं। बेचारे इक़बाल साहब इधर भारत में एक बार फिर 'शाही जाहो-जलाल' क़ायम करने की धुन में हैं और उधर बङ्गाल के कुछ अदूरदर्शी मुसलमान 'बेवक़्त की शहनाई' की तरह राष्ट्रीयता के राग अलापने में लगे हैं ! इन्होंने बिना सोचे-समझे घोषणा निकाली है, कि मुसलमानों को न तो जिन्ना साहब की चौदह शर्त्तों से कोई वास्ता है और न वे स्वतन्त्र निर्वाचन चाहते हैं ! यही नहीं, इनका कहना है, कि राउण्डटेबिल के आस-पास मँड़राने वाले मुसलमान हमारे प्रतिनिधि भी नहीं हैं ! हरे-हरे ! बताइए, इस बेवक़ूफ़ी की भी कोई इन्तहा है ! मालूम होता है, इसी वजह से 'सर' महोदय ने अपने भावी 'मुस्लिम भारत' से बङ्गाल को दूर ही रक्खा है। लो कमबख़्तो ! भोगो अपनी करनी का फल !

❀

ख़ैर जनाब, ख़ुदा के फ़ज़ल से बङ्गाल में भी इक़बालों की कमी नहीं है। नवाबी का ख़्वाब देखने वाले वहाँ भी मनों मौजूद हैं; बल्कि सच पूछिए, तो पूर्व बङ्गाल के 'केरामोत आली' (करामत अली ?) और सरदार 'जोनाबाली' (जनाब आली ?) तो सखी नौकरशाही के दामन में ही बादशाहत के मज़े ले रहे हैं ! आफ़त में तो फँस गए इस 'इक़बाली बादशाहत' के कारण, बेचारे हिज़ होलीनेस ! एक दिन अख़बार पढ़ते-पढ़ते 'दिलोजान' से ही नहीं, वरन सारे शरीर से, सुदूर मद्रास प्रान्त की गोदावरी नगरी निवासिनी, कमनीय-कलेवरा आयुष्मती पुलिस पर फ़रेफ़्ता हो गए और बजाय "दामन व गेरबाँ चाक करने के" लगे दोनों हाथों से ताबड़तोड़ लँगोटी नोंचने !

❀

बात यह हुई, कि वहाँ की पुलिस ने जो कमाल किया है, वह सारे हिन्दोस्तान में कहीं की पुलिस को नसीब नहीं ! एक बाग़ में कुछ नर-नारी अपने बच्चे-कच्चे समेत उद्यान-भोज की तैयारी में थे, इतने में वी अठखेलियाँ करती पहुँचीं और ऐसी 'लट्ठ-वृष्टि' आरम्भ की कि सावन की झड़ी भी होंठ चाट कर रह गई ! ओह ! वह कमाल की पैंतरेबाज़ी और अनिर्वचनीय हस्त-लाघवता क्या कोई दईमारी-पुलिस दिखाएगी, जो इस 'गोदावरी' ने उस दिन दिखाए। माशा अल्लाह, अगर आप अपनी आँखों से देखते 'भविष्य' के सम्पादक जी महाराज, तो क़सम ख़ुदा की, अश-अश करके रह जाते और अपने अख़बार में उनकी तस्वीर छाप देते !

❀

आजकल हमारे श्रद्धेय दादा 'सिड़ी सड़ातन धरम' भी उधर ही बढ़े जा रहे हैं, गोदावरी की तरफ़। शायद बुढ़ौती में एक बार श्रीरामेश्वर दर्शन कर लेने का विचार है। उस दिन जलगाँव में 'वर्णाश्रम स्वराज' की व्यवस्था में लगे थे, इतने में उनके चिर-शत्रु अछूत भी न जाने कहाँ से आ धमके और लगे पण्डाल-प्रवेश के लिए सत्याग्रह करने ! अन्त में भवभय-हारिणी, विपद्-विभञ्जनी, भगवती पुलिस की शरण लेनी पड़ी और जिस तरह एक बार महिष-मद-विमर्दनी देवी चामुण्डा जी ने दादा जी की रक्षा की थी, उसी तरह अब की इस कलियुग की चामुण्डा जी ने जान बचाई, नहीं तो अछूत पण्डाल में घुस कर तथा उन्हें छूकर ऐसा तहस-नहस कर देते कि फिर रौरव के सिवा कहीं ठिकाना भी न लगता !!

❀

और अगर रौरव से बचने के लिए करोड़ों सड़ातनियों को प्रायश्चित्त करना पड़ता, तो और भी अनर्थ हो जाता ! लोग पञ्चगव्य बना कर सारे देश का गोमूत्र चाट जाते और गोबर कस्तूरी के भाव बिकने लगता ! बड़ी मुश्किल हो जाती, बेचारे हिज़ होलीनेस को तापने के लिए उपले तक न मिलते !! इसलिए आप (श्रीजगद्गुरु) आयुष्मती पुलिस और दादा 'सड़ातन धर्म' के प्रति अपनी आन्तरिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं और आइन्दा के वास्ते यह फ़तवा देते हैं, कि सर महम्मद इक़बाल के 'मुस्लिम भारत' की तरह सुन्दरबन में, या हिमालय की तराई में एक 'अछूत-भारत' भी क़ायम कर दिया जाय ! क्योंकि अछूत भी स्वतन्त्र-निर्वाचन के लिए लड़ रहे हैं और 'छूत' भी उनके उत्पातों से घबराए हुए हैं !!!

❀

इस पर कुछ लोग—ख़ासकर कॉङ्ग्रेस वाले—यह एतराज़ पेश करेंगे, कि सिक्ख भी तो अल्प-संख्यक होने के कारण स्वतन्त्र निर्वाचन चाहते हैं, तो क्या कहीं 'सिक्ख भारत' की भी नींव पड़ेगी ? बेशक, पड़नी चाहिए ! आजकल के 'खिचड़ी भारत' की अपेक्षा वह 'अपनी-अपनी डफ़ली और अपना-अपना राग वाला 'भारत' हज़ार दर्जे अच्छा होगा। कहीं 'मुस्लिम भारत' कहीं 'ईसाई भारत', कहीं 'पारसी भारत', कहीं 'डोम भारत', कहीं 'मेहतर भारत' और कहीं पण्डित लक्ष्मण शास्त्री महोदय का 'महामहोपाध्याय-भारत।' भारत क्या होगा, ख़ासा कलकत्ते का 'चिड़ियाख़ाना' बन जाएगा। ख़ुदाताला शीघ्र वह दिखलाए। आमीन ! आमीन !! आमीन !!!

❀

ऑर्डिनेन्साचार्य, श्रीमान् लॉर्ड इरविन महोदय जैसे पहले दर्जे के सहृदय हैं, वैसे ही पराकाष्ठा के बुद्धिमान भी हैं। क्योंकि मरे हुए 'प्रेस-ऑर्डिनेन्स' को फिर से चन्द्रोदय की घुटी पिला कर आपने शेषनाग की चोटी तक पहुँची हुई ब्रिटिश साम्राज्य की सुदृढ़ नींव पर दो रद्दा और भी रख दिया है ! बस, अब सारा क़िस्सा पाक हो गया, कॉङ्ग्रेस का ख़ौफ़ जाता रहा—यहाँ तक कि अब गाँधी-टोपी भी सखी नौकरशाही का कुछ नहीं बिगाड़ सकती !

❀

बात यह है, कि पहले प्रेस-ऑर्डिनेन्स की मृत्यु के कारण अभागे प्रेस-कर्मचारियों को फिर से रोटी-दाल मिलने की सम्भावना हो गई थी, इसलिए आन्दोलन से मुँह मोड़ कर वे अपने-अपने स्थानों पर लौट आए थे; देश-सेवा से वञ्चित हो रहे थे; परन्तु प्रेस-ऑर्डिनेन्स के पुनर्जन्म ने उनका धर्म बचा लिया। इसलिए अख़बार वालों का तथा प्रेसवालों का यह कर्तव्य होना चाहिए, कि वे लॉर्ड महोदय के मङ्गलार्थ एक रोज़ शाह-मदार की मज़ार पर जाकर 'तिलचौरी' चढ़ा आवें।

* * *

स्वर्गीय मौलाना मोहम्मदअली

(संक्षिप्त परिचय)

"मैं यहाँ जातीय चुनाव का फ़ैसला करने नहीं आया और न मुसलमानों की माँगों का समर्थन करने ही आया हूँ। मैं तो यहाँ भारत के लिए स्वतन्त्रता लेने आया हूँ, जिससे भारत के मुसलमान भी स्वतन्त्र हो सकेंगे। यदि हमारी यह माँग पूरी न हुई, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुसलमान बिना किसी हिचकिचाहट के भारत के वर्तमान सत्याग्रह आन्दोलन में भाग ले लेंगे।"

—मोहम्मदअली

मौलाना मोहम्मदअली के नाम से आज प्रत्येक भारतवासी परिचित है। सन् १९२१ के असहयोग आन्दोलन में भाग लेकर वे भारत के इतिहास में अमर हो गए हैं। उन दिनों आपका नाम प्रत्येक भारतवासी के मुख पर रहता था। आपके जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों से प्रत्येक भारतवासी परिचित है। पाठकों के मनोरञ्जनार्थ यहाँ उनका संक्षिप्त परिचय दिया जाता है।

मौलाना मोहम्मदअली के पितामह श्रीयुत अली-बख़्श ख़ाँ धनी व्यक्ति थे। वे रामपूर स्टेट के एक उच्च पदाधिकारी थे। रामपूर के नवाब यूसुफ़अली ख़ाँ आपका बहुत सम्मान करते थे। सन्, १८५७ के बलवे में आपने ब्रिटिश सरकार को बहुत सहायता दी थी। इस राजभक्ति के उपहार में उन्हें मुरादाबाद ज़िले में एक बहुत बड़ी जागीर दी गई थी। मौलाना मोहम्मदअली के पिता श्री० अब्दुलअली ख़ाँ भी रामपूर स्टेट में एक ऊँचे पदाधिकारी थे। तरुणावस्था में ही इनकी हैज़े से मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के समय मौलाना शौकतअली केवल २ वर्ष के थे और मौलाना मोहम्मदअली बहुत छोटे थे। पिता की मृत्यु के उपरान्त इन दोनों बच्चों का भार इनकी सुयोग्य माता बी-अम्मा ने लिया। मौलाना मोहम्मदअली का जन्म सन् १८७८ में हुआ था। आपने २० वर्ष की अवस्था में बी० ए० की परीक्षा पास की। इसके बाद वे इण्डियन सिविल सर्विस की परीक्षा देने के लिए विलायत गए और वहाँ ऑक्सफ़र्ड के लिङ्कन कॉलेज में चार वर्ष तक शिक्षा प्राप्त की। कई कारणों से आप सिविल सर्विस की परीक्षा में सफल न हो सके। और वे नौकरशाही की मशीन के पुर्ज़े बनने से बच गए।

विलायत से लौटने के बाद आप रामपूर स्टेट के शिक्षा अधिकारी बनाए गए। यहाँ से सन् १९०८ में आप बड़ोदा राज्य में एक बड़े पद पर नियुक्त किए गए। बड़ोदा में आपने बड़ी तत्परता से कार्य किया और प्रजा की दशा सुधारने का सतत प्रयत्न किया। परन्तु इससे आपको सन्तोष नहीं हुआ। मौलाना आरम्भ से ही बड़े साहसी और उत्साही मनुष्य थे। आरम्भ से ही उन्हें धार्मिक शिक्षा दी गई थी। वे इस्लाम के कट्टर अनुयायी थे। इससे वे अपनी जाति तथा धर्म की सेवा करने को लालायित हो रहे थे। अपनी जाति तथा धर्म के वे केवल भारत मात्र के मुसलमानों का नहीं, वरन इस्लाम के संसार भर के अनुयायियों का पुनरुत्थान तथा सङ्गठन करना चाहते थे। यह कार्य बड़ोदा स्टेट की नौकरी करते हुए नहीं हो सकता था। इसलिए छः साल नौकरी के बाद, दो वर्ष की छुट्टी लेकर आपने अपने सम्पादकत्व में कलकत्ते से "कॉमरेड" नामक साप्ताहिक समाचार-पत्र प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया। आपने और कई प्रसिद्ध समाचार-पत्रों में लेखादि भेजना शुरू किया। इन लेखों में आपने अपनी अपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया। आपके लेख विद्वत्ता तथा हास्य-रस से परिपूर्ण रहते थे। थोड़े ही दिनों में आपकी गिनती उच्च कोटि के लेखकों में होने लगी। अपनी इस सफलता से प्रोत्साहित होकर आपने शेष जीवन में यही कार्य करना निश्चय किया और अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया। आपको जावरा स्टेट की दीवानी भी दी गई, पर आपने इसे भी स्वीकार न किया। "कॉमरेड" कलकत्ते से शुरू हुआ था, पर जब भारत की राजधानी कलकत्ते से दिल्ली को हटाई गई, तब "कॉमरेड" का दफ़्तर भी सन् १९१८ में कलकत्ते से दिल्ली को हटा दिया गया। इस साप्ताहिक पत्र को प्रकाशित करने में मौलाना ने अपनी असाधारण मानसिक शक्ति का परिचय दिया और थोड़े ही दिनों में यह पत्र बहुत लोक-प्रिय हो गया। इस पत्र को निकालने का मुख्योद्देश्य अपनी जाति की सेवा तथा भारत की भिन्न-भिन्न जातियों में प्रेम-भाव उत्पन्न करना था। वे अपने पत्र द्वारा सदैव हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रचार करने का प्रयत्न करते थे। १४ जनवरी, १९११ के "कॉमरेड" में उन्होंने जो अपने पहले लेख में लिखा था, कि "यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि यदि भारत की हिन्दू या मुस्लिम जाति बिना एक-दूसरे की भलाई का ख़याल किए और बिना एक-दूसरे की सहायता लिए सफलता प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगी, तो यह निश्चय है कि उनका यह प्रयत्न सर्वथा असफल होगा।" आपने लिखा था "भारत की समस्याएँ बहुत विकट हैं। परन्तु जब यूरोप में इतनी राष्ट्रीय स्पर्धा, इतने युद्ध तथा कलह होते हुए भी वहाँ के राजनीतिज्ञ उस दिन की आशा कर रहे हैं, जब सारा यूरोप एक होकर रह सकेगा, तब क्या हम इतनी भी आशा नहीं कर सकते कि भारत-निवासी एक होकर एक बलिष्ठ राष्ट्रीय शासन-विधान की नींव स्थापित करें।" इन शब्दों से मौलाना का देश-प्रेम तथा हिन्दू-मुस्लिम समस्या को हल करने की चिन्ता साफ़-साफ़ ज़ाहिर होती है।

पर "कॉमरेड" की स्थापना करके उनकी तबियत न भरी। वे यह पूर्णतया समझते थे कि राष्ट्रीय तथा जातीय उत्थान के लिए देश की सारी जनता को जगाने की आवश्यकता है। अङ्गरेज़ी समाचार-पत्र तो केवल अङ्गरेज़ी पढ़े-लिखे लोगों की सेवा कर सकता है। इस उद्देश्य से उन्होंने ने एक उर्दू पत्र "हमदर्द" की स्थापना की। यह बहुत ही लोकप्रिय हो गया। और इसमें प्रकाशित विचार लोगों पर जादू का काम करने लगे। इससे यह सरकार द्वारा बन्द कर दिया गया।

इसके अतिरिक्त भी मौलाना मोहम्मद अली ने हर प्रकार से अपने धर्म की सेवा करने का प्रयत्न किया। सन् १९१३ में कानपुर की एक मसजिद का कुछ भाग सरकार द्वारा गिरवा दिया गया। यह भाग एक नई

निकलने वाली सड़क के ऊपर पड़ता था। इसके विरोध में कानपुर तथा अन्य शहरों की मुस्लिम जनता ने सभाएँ कीं और आन्दोलन उठाया। मौलाना मोहम्मद अली ने अपने पत्र द्वारा इसका घोर विरोध किया। उस समय के लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर सर जेम्स मेस्टन से प्रार्थना की गई, पर उनकी ये प्रार्थनाएँ सफल न हुईं। अन्त में मौलाना मोहम्मद अली तथा सय्यद वज़ीर हसन ने विलायत जाने का निश्चय किया। वहाँ उन्होंने इस सम्बन्ध में सभाएँ कीं, व्याख्यान दिए तथा बड़े-बड़े पदाधिकारियों से भेंट की। इसका फल यह हुआ कि वाइसराय ने स्वयं कानपुर आकर मुसलमानों की माँगें पूरी कर दीं।

हम पहले कह चुके हैं, कि मुस्लिम धर्म की सेवा में वे केवल भारत के मुसलमानों का ही नहीं, वरन संसार के सब मुसलमानों को सङ्गठित करना चाहते थे। वे अपने जीवन भर संसार के सब देशों में रहने वाले अपने सहधर्मियों की उन्नति की चेष्टा करते रहे। गत यूरोपीय महायुद्ध में जब टर्की ने मित्र-दल के विरुद्ध युद्ध छेड़ा, तब भारत के मुसलमान बहुत अशान्त हो उठे। इङ्गलैण्ड के सारे समाचार-पत्र टर्की की बुराइयों से भरे रहते थे। मौलाना मोहम्मद अली से यह न सहा गया। आपने इनके उत्तर में टर्की के अधिकारों तथा माँगों का समर्थन किया। इससे घबरा कर ब्रिटिश सरकार ने आपको जेल में बन्द कर दिया और "हमदर्द" तथा "कॉमरेड" की ज़मानतें ज़ब्त कर लीं। आप चार साल तक बन्दी अवस्था में रहे। सन् १९१९ में सन्धि हो जाने पर आप रिहा कर दिए गए।

जेल से छूट कर आप सीधे अमृतसर पहुँचे, जहाँ कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन हो रहा था। यहाँ पर सर माइकल ओडायर को पञ्जाब से हटा देने के प्रस्ताव पर आपने बड़ा जोशीला भाषण दिया। सरकारी ज़्यातियों के कारण तथा चार वर्ष तक बन्दी अवस्था में रहने के कारण, आपको बहुत आर्थिक हानि उठानी पड़ी। इसलिए जब आप जेल से छूटे तब हिन्दुस्तान के प्रमुख हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने आपके लिए द्रव्य एकत्रित करने के उद्देश्य से एक कमिटी नियुक्त की। और उसके एकत्रित द्रव्य की थैली मौलाना मोहम्मद अली को दी गई, पर आपने इसे अपने ख़ानगी-ख़र्च में लाने से इनकार कर दिया और उसे सामाजिक सेवा में ख़र्च किया।

युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार तथा उनके सहयोगियों ने मुस्लिम जगत की छीछालेदर करना आरम्भ कर दिया। टर्की को सार्वभौमित्व के पद से हटाने का प्रयत्न होने लगा। मौलाना मोहम्मद अली ने इसके विरुद्ध फिर कमर कसी। भारत में ख़िलाफ़त का आन्दोलन बड़े उत्साह के साथ उठाया गया, महात्मा गाँधी ने भी इसमें सहायता देने का वचन दिया। इसी सम्बन्ध में सन् १९२० की जनवरी में भारत के प्रमुख हिन्दू और मुस्लिम नेता वाइसराय से मिले और उनसे ख़िलाफ़त के प्रश्न पर बातचीत की। परन्तु इसका कुछ भी फल न निकला। इसी साल मार्च में मौलाना मोहम्मद अली के प्रतिनिधित्व में कुछ लोग इङ्गलैण्ड भेजे गए। इन्होंने ब्रिटिश जनता के सामने अपनी माँगें पेश कीं और उन्हें अपनी यात्रा का उद्देश्य सुनाया। इङ्गलैण्ड तथा फ़्रान्स में समाचार-पत्रों की भी स्थापना की गई, परन्तु इनसे भी उन्हें कुछ सफलता प्राप्त न हुई। हताश होकर अक्टूबर में वे भारत लौट आए और बम्बई की विराट सभा में व्याख्यान देते हुए उन्होंने कहा कि "जब तक भारत स्वतन्त्र नहीं होता, तब तक हमारी माँगें पूरी नहीं हो सकतीं, इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हिन्दू तथा मुसलमान एक होकर भारत को स्वतन्त्र करें। स्वतन्त्र भारत एशिया के मुस्लिम देशों को काफ़ी सहायता पहुँचा सकेगा।" इसीलिए आप भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध में कूद पड़े। सन् १९२० की नागपुर की कॉङ्ग्रेस में महात्मा गाँधी का असहयोग का प्रस्ताव पास हुआ। इसमें मौलाना उनके दाहिने हाथ थे, उन्हीं के प्रयत्न से इस आन्दोलन में भारत के मुसलमान हिन्दुओं के कन्धे से कन्धा लगा कर लड़े। असहयोग आन्दोलन ने भारत की काया पलट कर कर दी। चरख़े-झण्डे तथा राष्ट्रीय गानों से भारत का गगन-मण्डल गूँज उठा। भारत-सरकार ने घबरा कर नेताओं की धर-पकड़ प्रारम्भ कर दी। आप भी सितम्बर में विज़गापट्टम में गिरफ़्तार किए गए और कराची के प्रसिद्ध मुक़द्दमे में आपको दो वर्षों की कड़ी सज़ा दी गई।

उन दिनों सारा भारत अली भाइयों के गुण-गान से गूँज रहा था। वे राष्ट्रीय संग्राम के वीर तथा उत्साही नेता थे। हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। फिर क्यों प्रिय न होते? इसलिए सन् १९२३ में, जब आप जेल से छूट कर आए तब भारत ने इन्हें अपने सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित किया। मोहम्मद अली कोकोनाडा में होने



स्वर्गीय मौलाना मोहम्मद अली

वाली कॉङ्ग्रेस के सभापति चुने गए। इसी साल हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों को रोकने के लिए दिल्ली में 'ऑल पार्टीज़' (All Parties) कॉन्फ़्रेन्स हुई जिसमें महात्मा गाँधी ने २१ दिन का व्रत किया। इसमें मौलाना ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए बहुत प्रयत्न किया और उसमें उन्हें आशातीत सफलता प्राप्त हुई।

बस इस घटना के बाद से आपके राष्ट्रीय जीवन का अन्त हुआ। धीरे-धीरे असहयोग आन्दोलन की प्रचण्ड ज्वाला धीमी हुई और राष्ट्रीय वातावरण में जातीयता की दुर्गन्धि फैलने लगी। भारत के कोने-कोने से हिन्दू-मुस्लिम दङ्गों के समाचार आने लगे। यहाँ मौलाना का भी ख़ून ठण्डा हो चला। एक अङ्गरेज़ विद्वान ने कहा है कि "वृद्धावस्था में मनुष्य को दो दुर्गुणों से बचना चाहिए—एक तो कन्जूसी से और दूसरे धार्मिक द्वेष से।" मौलाना भी जातीयता के भँवर में जा फँसे। उनका पुराना जोश जाता रहा और पुरानी निष्पक्षता का अन्त हो गया। भारत की जनता ने भी धीरे-धीरे उन्हें अपनाना छोड़ दिया, परन्तु फिर भी मौलाना का देश-प्रेम इकदम ठण्डा नहीं हुआ था। यह मानना पड़ेगा कि उनके हृदय में देश-प्रेम तथा जातीयता की भावनाओं में परस्पर युद्ध हुआ करता था! दोनों उनके हृदय को अपनी-अपनी ओर खींचती थीं। पुराने जोश के ठण्डे हो जाने पर भी वे राष्ट्रीय संग्राम के वीर योद्धा बने रहे। जातीयता के घोर पङ्क में पड़ने पर भी कभी-कभी उनके हृदय में देशभक्ति की पुरानी उमङ्गें उमड़ पड़ती थीं और इसका पूर्ण परिचय उन्होंने अपने गोलमेज़ परिषद् के भाषण में दिया था। उसमें उन्होंने कहा था कि "यदि स्वराज्य न मिला, तो यहीं अपने प्राण-त्याग कर दूँगा। मैं पराधीन भारत में वापस लौट कर न जाऊँगा।" फिर अपने साथियों को लक्ष्य करके उन्होंने कहा कि "यदि हमें औपनिवेशिक स्वराज्य न दिया गया, तो समझो कि भारत ब्रिटिश सरकार के हाथ से सदा के लिए निकल गया। तब तो यह निश्चित है कि ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर एक नवीन संयुक्त राज्य का उदय होगा, जिसमें वहाँ के समस्त धर्मों के अनुयायी एक होकर रहेंगे। × × ×"

* * *

"ब्रिटिश सरकार का सब से बड़ा दोष यह है, कि वह भारत के न्याययुक्त अधिकारों को दबाने का प्रयत्न कर रही है। क्या वह समझती है कि वह भारत के ३३ करोड़ निवासियों को, जो स्वतन्त्रता के लिए प्राण देने को तैयार हैं, किसी तरह भी अपने बन्धन में रख सकती है।" हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों के विषय में उन्होंने कहा था कि "हमारे हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों के लिए ब्रिटिश सरकार ज़िम्मेदार है। वह हम लोगों में भेद डाल कर हम पर शासन करना चाहती है। भारत के स्कूलों में जो इतिहास की शिक्षा दी जाती है, वही हिन्दू और मुसलमानों में आपस में वैर-भाव उत्पन्न कर देती है।"

मौलाना मोहम्मदअली बहुत ही निर्भय तथा स्पष्ट वक्ता थे। इसी भाषण में उन्होंने लॉर्ड रीडिङ्ग पर जो फ़िकरा कसा था, उसमें उनके इन गुणों का पता चलता है। उन्होंने कहा था कि "मैं पुराना असहयोगी हूँ। इस अपराध के लिए लॉर्ड रीडिङ्ग ने मुझे और मेरे भाई को जेल में बन्द किया था। मैं इसका बदला हरगिज़ नहीं चाहता, परन्तु मैं आज वह शक्ति चाहता हूँ, जिससे यदि लॉर्ड रीडिङ्ग कोई अन्याय करें, तो मैं उन्हें जेल में बन्द कर सकूँ।"

विलायत जाने के पूर्व ही से आपका स्वास्थ्य ठीक न था। पर इस रुग्णावस्था में भी आपने गोलमेज़ परिषद् में जाना स्वीकार कर लिया। वहाँ जाकर आपका स्वास्थ्य और भी ख़राब हो गया; पर आप गोलमेज़ परिषद् में बराबर काम करते रहे। ३री जनवरी की रात को आपकी तबियत और भी ख़राब हो गई। आप समझ गए कि अब अन्तिम समय आ पहुँचा है। आपको यही अफ़सोस था, कि आप हिन्दू-मुस्लिम समस्या को हल न कर सके। रात को उन्होंने कई ब्रिटिश नेताओं तथा हिन्दू सदस्यों को पत्र लिखे, और अपनी जातीय माँगों को पत्र में परिवर्तन किया। प्रधान-मन्त्री मिस्टर मैकडॉनल्ड को भी उन्होंने एक पत्र लिखा था, उसमें उन्होंने अपना वक्तव्य स्पष्ट रूप से ज़ाहिर कर दिया था। उन्होंने लिखा था कि "मैं यहाँ जातीय चुनाव का फ़ैसला करने नहीं आया, और न मुसलमानों की माँगों का समर्थन करने ही आया हूँ। मैं तो यहाँ भारत के लिए स्वतन्त्रता लेने आया हूँ, जिससे भारत के मुसलमान भी स्वतन्त्र हो सकेंगे। यदि हमारी यह माँग पूरी न हुई, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुसलमान बिना किसी हिचकिचाहट के भारत के वर्तमान सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने लगेंगे।" इन शब्दों में आपने अपनी देशभक्ति का पूर्ण परिचय दिया था। अपने जीवन में अन्त काल तक मौलाना भारत की तथा अपने धर्म की सेवा में लगे रहे। ४थी जनवरी को सुबह ९॥ बजे मौलाना को कराल-काल ने इस नश्वर संसार से उठा लिया। परमात्मा आपकी आत्मा को अक्षय शान्ति और परिवार के प्रिय जनों को धैर्य प्रदान करें।

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी!!

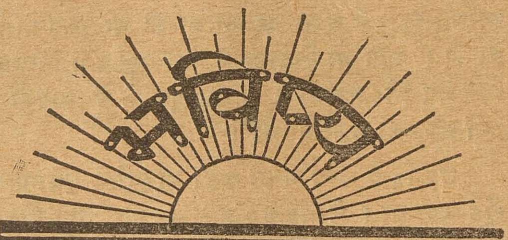
९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर



सम्पादकीय विचार



१५ जनवरी, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले—
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

गोली से एक युवक की मृत्यु

बम्बई का ९वीं जनवरी का समाचार है कि मोहनलाल उद्धवजी जोशी नामक एक १७ वर्ष के युवक की, जिसे गत १ली जनवरी के गोली-काण्ड में कालबा देवी रोड पर गोली लगी थी, अस्पताल में मृत्यु हो गई। गोली उसके शरीर से नहीं निकाली जा सकी थी।

स्वर्गीय मौलाना मुहम्मद अली की पुत्री की तलाशी

मुरादाबाद का ९वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ की एक सभा में जनता ने ख़ुफ़िया-पुलिस के द्वारा स्वर्गीय मौलाना की पुत्री की तलाशी ली जाने की बहुत निन्दा की। कहा जाता है, कि जब अपने पिता की मृत्यु के दो दिन बाद वे रामपुर जा रही थीं उसी समय पुलिस ने आपकी तलाशी ली थी। इस तलाशी के उत्तरदाताओं को दण्ड देने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी पास किया गया। कहा जाता है कि अधिकारीगण इस विषय की जाँच कर रहे हैं।

प्रेस-ऑर्डिनेन्स की प्रथम आहुति

लाहौर का ८वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के 'बन्देमातरम्' पत्र से प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार दस हज़ार रुपए की ज़मानत माँगी गई है। ५०००) रु० की ज़मानत पत्र से और ५०००) रु० प्रेस से माँगा गया है।

महात्मा जी का स्वास्थ्य

"न्यूज़ ऑफ़ इण्डिया" के अनुसार महात्मा जी के एक पत्र से पता चलता है, कि उनका वज़न पहले की अपेक्षा १॥ पौण्ड बढ़ गया है। उन्हें अब कमज़ोरी नहीं मालूम होती है। वे नित्य दो घण्टे तकली पर सूत काता करते हैं। इससे उन्हें कुछ भी थकावट नहीं मालूम पड़ती। उनकी पाचन शक्ति बढ़ गई है, और उनका साधारण स्वास्थ्य अच्छा है।

जेल में दुर्व्यवहार

सहयोगी 'अर्जुन' के एक सम्वाददाता का कहना है, कि अजमेर की जेल में कुछ राजनैतिक क़ैदियों के परेड में शामिल न होने पर उन्हें हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ डाल दी गईं। कहा जाता है, कुछ दिन पहले उन्हें उठा-उठा कर पटका भी गया था, और मुख पर जालीदार क्लिप लगा कर खाना-पीना तक नहीं दिया गया था।

जुलाहों की प्रतिज्ञा

सोनागाँव (ढाका) का समाचार है, कि वहाँ की एक कॉङ्ग्रेस सभा में हमसादी नामक स्थान के जुलाहों ने विदेशी सूत के सर्वथा वहिष्कार करने की प्रतिज्ञा की है।

दयदियावारी के व्यापारियों ने भी विदेशी वस्त्र न बेचने की प्रतिज्ञा की है। उनके विदेशी कपड़ों की गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगा दी गई है।

बिहार प्रान्तीय कोऑपरेटिव कॉङ्ग्रेस

ख़बर है कि बिहार-उड़ीसा-प्रान्तीय कोऑपरेटिव कॉङ्ग्रेस का आगामी अधिवेशन राँची में १९ से २१ जनवरी तक होने वाला है।

* * *

यह दासता है या प्रजातन्त्र ?

दक्षिण अफ़्रिका में गोरों का नृशंस राज्य !

[डॉक्टर "पोल खोलानन्द भट्टाचार्या" एम० ए०, पी० एच-डी०]

आजकल संसार की गोरी जातियों को यह घमण्ड है, कि हम संसार के न्याय की रक्षक तथा सभ्यता की सर्वोत्तम आचार्य हैं। वे कहती हैं, कि गोरी जातियों का यह धर्म है कि वे असभ्य काली जातियों को कला-विज्ञान में निपुण करें, उन्हें न्यायोचित व्यवहार करना बतावें और उन्हें प्रजातन्त्र के नियमों की शिक्षा दें। यही गोरी जातियों का भार (Whitemen's burden) है। वे समझते हैं, कि इस भार को पूर्ण रीति से चलाने के लिए उनमें ईश्वर ने ख़ास गुण दिए हैं, जो काली जातियों में नहीं पाए जाते। क्या करें, बेचारे इन काले-कलूटों को सभ्य बनाते-बनाते थके जा रहे हैं। पर इतने वर्ष हो गए, फिर भी इन कलूटों को अपने राज्य चलाने की तथा उद्योग और कला में उन्नति करने की



अफ़्रिका के लाग घड़ियाल के मुँह में पकड़े गए व्यक्ति को छुड़ाने का सतत प्रयत्न कर रहे हैं !

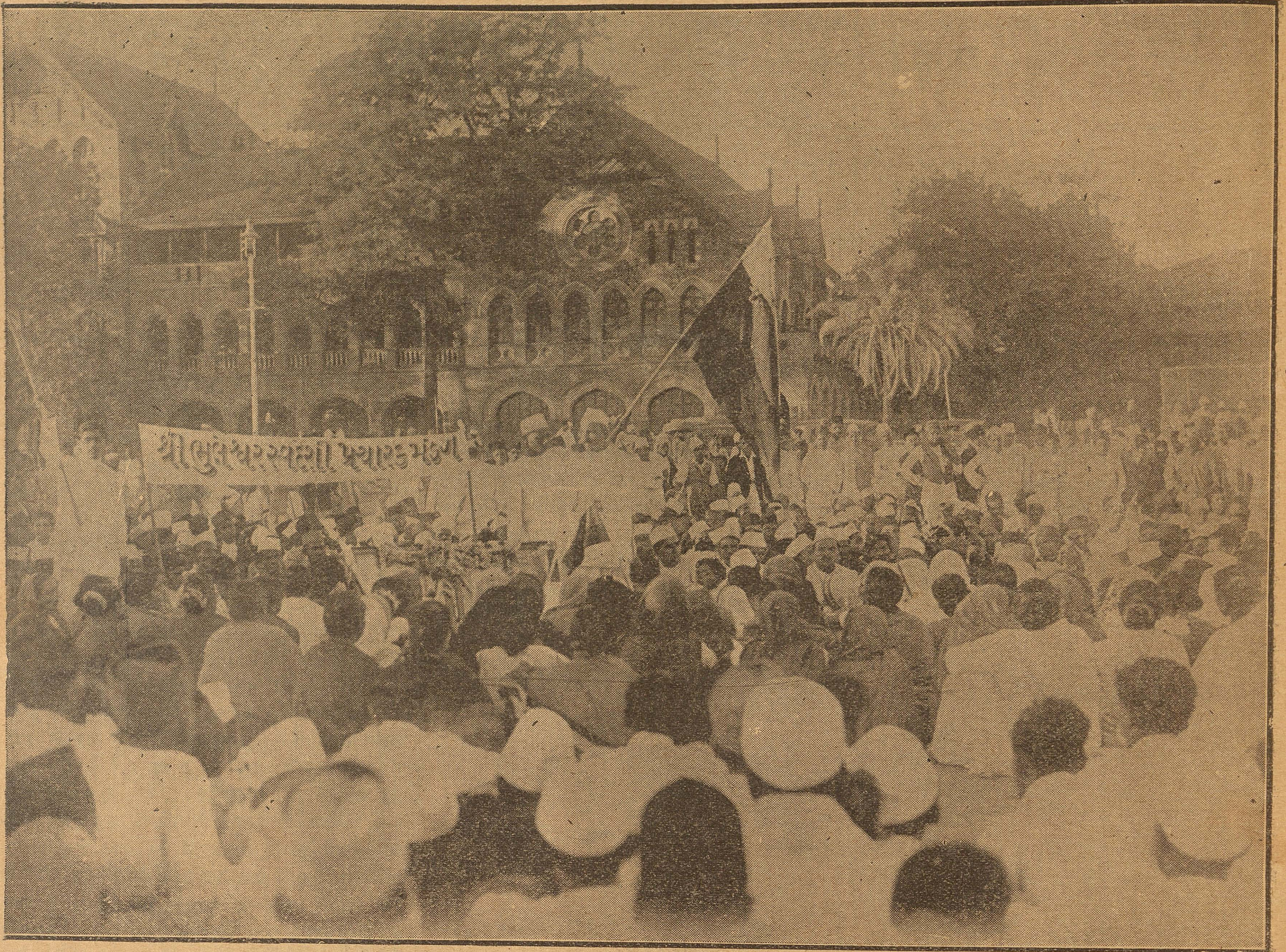
ज़रा भी तमीज़ नहीं आई। पर इसमें उनका क्या दोष है ? काली जातियाँ इतनी कूढ़मग्ज़ होती हैं कि वे कोई बात जल्दी सीख ही नहीं सकतीं। विदेशी सत्ता का समर्थन करने का यही सब से बड़ा साधन है। साम्राज्य-वाद के अगणित अन्यायों को ढाँकने का तथा मूर्ख एवं अशिक्षित जनता की आँखों में धूल झोंकने का यही सब से अच्छा तरीक़ा है।

आजकल दक्षिण अफ़्रिका का शासन इसी गोरी जाति के हाथ में है। गोरी जाति के मनुष्य अल्पसंख्यक होने पर भी अपने राजनैतिक तथा आर्थिक बल द्वारा वहाँ के प्राचीन निवासियों पर राज्य कर रहे हैं। यदि वहाँ की काली जातियाँ इनके विरुद्ध क्रान्ति की आवाज़ उठावें, तो आज इङ्गलैण्ड तथा यूरोप के अन्य देश इन गोरे शासकों की हर प्रकार से सहायता करने को तैयार हो जावेंगे। ये यूरोप के राज्यों के उपनिवेश हैं, जिनमें उनकी सन्तानें आकर बसी हैं और वे अपनी मातृभूमि के अपार सैनिक बल द्वारा वहाँ के निवासियों को दासता के निष्ठुर बन्धन में जकड़े हुए हैं। इङ्गलैण्ड की दिनोंदिन बढ़ती हुई मनुष्य-संख्या को इन्हीं उपनिवेशों में जाकर उद्योग तथा धन्धों में लगने का मौक़ा मिल सकता है। इन्हीं उपनिवेशों में वे अपना माल बेच कर रुपया कमा सकते हैं। इन्हीं देशों में रेल, तार तथा कारख़ाने बना कर वे एक मज़बूत पूँजी-पतित्व की स्थापना कर सकते हैं और इस तरह वहाँ के निवासियों पर आर्थिक प्रभुत्व स्थापित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ के शासक इन्हीं की सन्तान हैं, उनकी सभ्यता के अनुयायी हैं और औपनिवेशिक स्वराज्य पाने पर भी उनके प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं। ऐसी सोने की चिड़िया को कौन खोना चाहेगा ? इन्हीं सब कारणों से यूरोप के राष्ट्र इन देशों में शासन करने वाली अपनी सन्तान की नीति का पूर्णरूप से समर्थन करते हैं, फिर चाहे वह वहाँ के प्राचीन निवासियों के लिए अच्छी हो या बुरी !

इसी नीति का आज इङ्गलैण्ड भी अनुकरण कर रहा है, दक्षिण अफ़्रिका के प्राचीन निवासियों के साथ वहाँ की गोरी जातियाँ जिस तरह पेश आ रही हैं, वह आज सबको मालूम है। उन्होंने उनके सारे राजनैतिक अधिकार छीन लिए हैं, उनकी अधिकतर ज़मीन पर क़ब्ज़ा जमा लिया है और उन पर अतिरिक्त लगान लगा कर और शिक्षा तथा कला से दूर रख कर बिलकुल कुली बना दिया है !

पर ब्रिटिश सरकार जब कभी घोषणा निकालती है, तब वह अपनी चालाकी से बाज़ नहीं आती। उसने सन् १९२३ में केनिया के सम्बन्ध में एक घोषणा निकाली थी। उसमें वह कहती है कि "केनिया एक अफ़्रिकन देश है और ब्रिटिश सरकार का यह निश्चित-मत है कि इस देश के शासन में हमें वहाँ के प्राचीन निवासियों का ख़्याल सब से पहिले करना पड़ेगा।" ब्रिटिश सरकार कितनी उदारचित्त है ? वह न्याय की रक्षा के लिए अपनी सन्तानों के हस्तगत अधिकारों तक को छोड़ देने को तैयार है। वह ग़रीब, अशिक्षित और असभ्य अफ़्रिकन जातियों के अधिकारों की किस उदारता से रक्षा कर रही है !!

पर दक्षिण अफ़्रिका के इन्हीं देशों की असली हालत क्या है ? इन्हीं देशों में न्याय के परदे के नीचे असहाय काली जातियों पर कितने घोर अत्याचार किए जा रहे हैं, इसका ठीक पता लगाना कुछ अधिक कठिन नहीं है। ब्रिटिश सरकार कहती है कि "हमें वहाँ के निवासियों का ख़्याल सब से पहले करना पड़ेगा।" पर असल में वहाँ के निवासियों की भलाई को प्रथम स्थान देना तो दूर रहा, उन्हें वे भी अधिकार तथा सुविधाएँ नहीं दी गई हैं, जो कि दूर देशों से आकर अफ़्रिका में बसने वाली गोरी जातियों को दी गई हैं ! श्रेष्ठता का व्यवहार तो दूर रहा, यहाँ तो समता तक का अधिकार नहीं है। दक्षिण अफ़्रिका निवासी गोरी जातियाँ वहाँ की काली जातियों को इस तरह देखती हैं, मानों वे मनुष्य ही न हों। वे समझती हैं कि ये जङ्गली तथा असभ्य हैं, इसलिए इन्हें समाज का सब से कठिन तथा रद्दी काम सौंपा जाना चाहिए। इसके फल-स्वरूप वहाँ के गोरे निवासियों ने काले निवासियों के उपजाऊ खेतों तथा अच्छी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लिया है। समस्त दक्षिण अफ़्रिका में कुल १५ लाख गोरे निवासी हैं। ये इस देश की २८ करोड़ एकड़ ज़मीन पर क़ब्ज़ा किए हुए हैं !! वहाँ के काले निवासियों की संख्या ४७ लाख है, पर उनके पास केवल २ करोड़ एकड़ ज़मीन है ! यह ज़मीन गोरों ने काले निवासियों को उनकी ज़मीन से ज़बर्दस्ती निकाल कर अपने क़ब्ज़े में कर ली है। फिर वहाँ के प्राचीन निवासियों को नई ज़मीन को मोल लेने का, या जोतने का अधिकार नहीं है। वे बिना गवर्नर-जनरल की आज्ञा लिए एक इञ्च ज़मीन नहीं ख़रीद सकते। हाँ, थोड़ी सी रद्दी पथरीली ज़मीन ज़रूर उनके लिए छोड़ दी गई है, जिसमें वे स्वच्छन्दता से विचर सकते हैं और बस सकते हैं। पर यह भी इसलिए, कि यह ज़मीन गोरी जातियों के काम की नहीं है। इस तरह एक तो उनके पास गोरों की ज़मीन का केवल $\frac{1}{10}$ भाग है, और जो कुछ है, वह भी उपजाऊ नहीं है ! इसलिए वहाँ की काली जातियों को मज़दूरी करने के अतिरिक्त जीवन-निर्वाह करने का कोई दूसरा उपाय ही नहीं है। वे गोरों के खेतों में मज़दूरी करके अपना पेट भरते हैं। काली जातियों की करुण आर्थिक दशा का यहीं अन्त नहीं हुआ है। शहरों में जो कारख़ाने हैं, उनमें इन लोगों से काम तो अवश्य लिया जाता है, परन्तु वे वर्तमान उद्योग-सम्बन्धी कला तथा विज्ञान नहीं सीख सकते हैं। इसलिए यहाँ भी वे सिवाय मोटे काम के और कुछ नहीं कर सकते। फिर काले तथा गोरे मज़दूरों के वेतन में भी फ़र्क़ रक्खा गया है। जिस तरह भारत के अङ्गरेज़ी तथा हिन्दुस्तानी सैनिकों के वेतन में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ है, उसी तरह वहाँ के गोरे मज़दूरों को कारख़ानों में ६ गुना ज़्यादा वेतन मिलता है और इसके लिए वहाँ की सरकार गोरे मज़दूरों को काम देने वाले कारख़ानों को विशेष आर्थिक सहायता भी देती है।



बम्बई के जन-समूह का वह दृश्य, जो उस दिन चौपाटी पर त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल जी नेहरू, महामना पं० मदनमोहन जी मालवीय तथा श्री० विट्ठल भाई पटेल आदि नेताओं की स्वास्थ्य तथा आयुकामना के उद्देश्य से एकत्र हुआ था। हर्ष है कि देशवासियों की यह प्रार्थना पूर्णतः सफल हुई। अब ये तीनों महान नेता जेल से भी मुक्त कर दिए गए हैं और परमात्मा की कृपा से दिनोंदिन स्वस्थ हो रहे हैं।

यहाँ तक तो आर्थिक दशा हुई, अब क़ानून का हाल सुनिए। कहा जाता है कि क़ानून अन्धा होता है। उसके आँखें नहीं होतीं और वह सबसे एकसा बर्ताव करता है। परन्तु यहाँ के क़ानून के देवता ऐसे अन्धे नहीं हैं उनकी आँखें अभी इतनी ख़राब नहीं हुई हैं कि वे काले, गोरे तक की पहिचान न कर सकें। वे जानते हैं, गोरों पर ईश्वर की ख़ास मेहरबानी है। वहाँ की काली जातियों के लिए ख़ास क़ानून बनाए गए हैं, जिससे उनके एक जगह एकत्रित होने के तथा अपने विचारों को दर्शाने के अधिकार छीन लिए गए हैं। यदि वे ऐसा करें, तो वे राज-विद्रोह के अपराध में गिरफ़्तार किए जा सकते हैं, उन पर लाठियाँ चलाई जा सकती हैं और ज़रूरत पड़े तो गोलियों तक की सहायता ली जा सकती है। इसके अतिरिक्त काले मज़दूर अपना सङ्गठन नहीं कर सकते और हड़ताल नहीं कर सकते। यदि वे बिना आज्ञा के अपने गोरे मालिकों की नौकरी छोड़ देवें, तो यह जुर्म में शामिल है। यह दासता नहीं तो क्या है? इससे अधिक पराधीनता और क्या हो सकती है?

छोटे-छोटे अपराधों के लिए गिरफ़्तारियाँ की जाती हैं और जेल की सज़ा दी जाती है। सरकार को भी इससे कुछ अड़चन नहीं होती। वे इन अपराधियों को गोरे किसानों के खेतों में काम करने को भेज देते हैं और इस तरह २५ काले अपराधियों के जत्थे के लिए उन्हें एक दिन के लिए सरकार को केवल १८ पेन्स अर्थात् १) रुपया देना पड़ता है। इससे गोरी सरकार का भी फ़ायदा है और गोरे पूँजीपतियों का भी !!!

रही राजनैतिक अधिकारों की बात, सो इस जगह भी शून्य है। काली जातियाँ राज्य के शासन चलाने वाले परिषदों में अपने प्रतिनिधि नहीं भेज सकतीं। उनके लिए एक अलग परिषद है, जिसके सदस्यों के हाथ में कुछ भी अधिकार नहीं दिया गया है। इन सब बातों के होते हुए भी, काले निवासियों को गोरों की अपेक्षा अधिक टैक्स देना पड़ता है। वे इस अतिरिक्त-टैक्स से इसी शर्त पर बच सकते हैं, जब वे यह सिद्ध कर दें कि हम गोरे पूँजीपति के कारख़ाने या खेत में काम करते हैं।

यह दक्षिण अफ़्रिका का न्याययुक्त शासन है! जहाँ पर ब्रिटिश सरकार को वहाँ के "प्राचीन निवासियों का ख़याल सब से पहिले" करना पड़ रहा है। क्या ब्रिटिश सरकार इस अन्याय तथा अत्याचार के लिए ज़िम्मेदार नहीं है? क्या वह काली जातियों के ख़ून चूसने वाली वर्तमान सरकार के विरुद्ध है। क्या वह यह कह कर बचना चाहती है, कि दक्षिण अफ़्रिका इस सम्बन्ध में स्वतन्त्र है? कभी नहीं। क्या यदि आज दक्षिण के काले निवासी तलवार का सहारा लेकर दक्षिण अफ़्रिका में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेवें तो ब्रिटिश सरकार इस बात को चुपचाप देख सकेगी? क्या यदि वहाँ की काली जातियाँ गोरों पर इतना अत्याचार करें, जितना कि आज वे उन पर कर रहे हैं, तो निष्पक्ष ब्रिटिश सरकार इसमें दख़ल न देवेगी? यह कभी नहीं हो सकता। स्वाधीनता का तो ढोंग मात्र है। जब तक वहाँ की नीति ब्रिटिश सरकार के अनुकूल है और लाभप्रद है, तब तक वह उसकी स्वाधीनता की रक्षा क्यों न करे। जब परिस्थिति विपरीत होगी तब वे न्याय-रक्षा तथा जगत की शान्ति-रक्षा का स्वाँग करके वहाँ की स्वाधीन सरकार के कार्यों में दख़ल देगी! अभी तो अपनी निर्बलता दिखाने में ही भलाई है।

परन्तु ब्रिटिश सरकार को यह याद रखना चाहिए, कि वे किसी भी जाति को अपरिमित समय तक इस दासावस्था में नहीं रख सकती। और यदि शीघ्र अन्याय तथा अत्याचारों का अन्त न किया गया, तो दक्षिण अफ़्रिका की समस्त काली जाति एक दिन उठेगी और इस अन्याय का बदला चुकावेगी। इस सम्बन्ध में उन्हें लन्दन से प्रकाशित मज़दूर-दल के प्रमुख पत्र 'न्यू लीडर' में छपे हुए मिस विनिफ़्रेड होल्टबी की भविष्यवाणी को याद रखना चाहिए।

"If this government continues, it would mean the embitterment of more than 50 million people, who must inevitably one day learn how to use the weapons which civilization has forged and exact a terrible revenge."

* * *

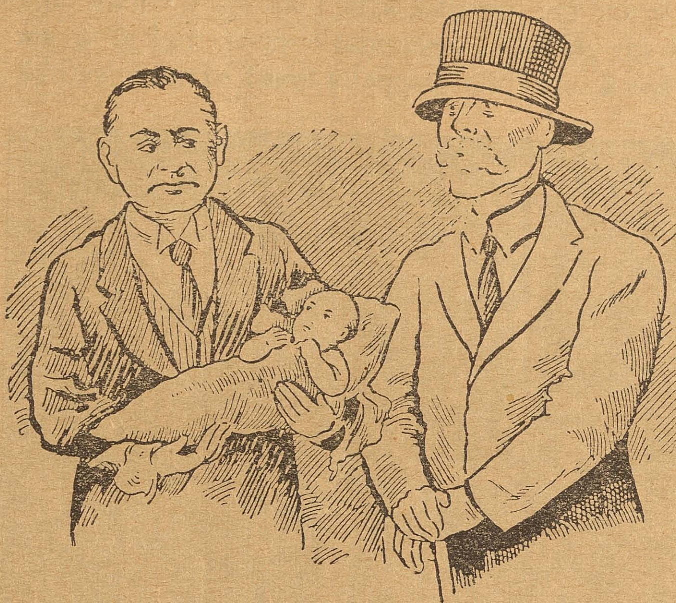
इजिप्ट की वर्तमान राजनैतिक दुर्दशा के लिए भी इङ्गलैण्ड ज़िम्मेदार है !

["राजनीति का एक विनम्र विद्यार्थी"]

कुछ दिन हुए एक डच समाचार-पत्र ने ब्रिटिश प्रधान-मन्त्री मैकडॉनल्ड का एक कार्टून निकाला था। उसमें श्रीयुत मैकडॉनल्ड की दो तस्वीरें थीं। एक में वे मामूली मज़दूरों के कपड़े पहिने हुए थे। उनके चेहरे से शान्ति टपकती थी। इस चित्र से यह दर्शाया गया था, कि वे मज़दूर-दल के सिद्धान्तों के समर्थक हैं। दूसरे चित्र में ये ही सज्जन फ़ौजी पोशाक धारण किए थे। सारे शरीर पर फ़ौजी हथियार सजे हुए थे। आँखों से क्रूरता तथा कठोरता टपकती थी। ये आजकल के मैकडॉनल्ड थे। बीच में एक स्त्री खड़ी थी। यह भारतवर्ष की प्रतिमा थी। वह कह रही थी कि "पहिले तो तुम बड़े ऊँचे सिद्धान्तों पर चलने वाले, प्रजातन्त्र के समर्थक और संसार के सब राष्ट्रों की स्वाधीनता के पक्षपाती थे, पर आज तुमने एक दूसरा ही स्वरूप धारण कर लिया है। आज तुम एक सैनिक हो और सैनिक बल तथा दमन-नीति के समर्थक हो। तुम एक ग़रीब पराधीन देश की न्यायपूर्ण आवाज़ को अपने सैनिक बल से दबाने का प्रयत्न कर रहे हो, उसके न्यायपूर्ण अधिकारों को लूट रहे हो। तुममें आज कितना परिवर्तन हो गया है।" आज प्रत्येक भारतवासी इस कार्टून के भाव की सत्यता का अनुभव कर रहा है। प्रत्येक भारतवासी अब यह देख रहा है, कि ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की बातों पर विश्वास करना मूर्खता है। राजसत्ता पाने के पूर्व मज़दूर-दल तथा उसके नेता स्वाधीनता के रक्षक बनने का दावा भरते थे। मज़दूरों की दशा सुधारने की क़सम खाते थे, पर आज वे क्या कर रहे हैं? केवल भारतवर्ष ही नहीं, वरन् संसार के सब देश, जो कि अभाग्य से ब्रिटिश सत्ता के अधीन हैं, आज यह अनुभव कर रहे हैं कि "कोउ नृप होय हमैं का हानी, चेरी छोड़ न होउब रानी।" चाहे मज़दूर-दल इङ्गलैण्ड का शासन करे, चाहे अन्य कोई दल; परन्तु हमारे सम्बन्ध में तो सदा वही दमन की नीति क़ायम रहेगी! इङ्गलैण्ड के शासकों के परिवर्तन से हमारे शासन में कुछ भी परिवर्तन न होगा।

भारत की शासन-नीति तो मज़दूर-दल का राज्य होने से सुधरने के बजाय, दिनोंदिन बिगड़ती ही जाती है। और हम सब लोग इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं, पर और देशों का भी वही हाल है। हाल ही में इजिप्ट की वैफ़्द पार्टी के सेक्रेटरी जनरल श्रीयुत मकराम ऐबीद बे ने लन्दन से निकलने वाले मज़दूर दल के मुख्य पत्र "न्यू लीडर" में एक लेख दिया है। उसमें उन्होंने लिखा है कि "हाल में इजिप्ट के एक छोटे से दल ने वहाँ की सारी सत्ता अपने हाथ में ले ली है। इस दल ने वहाँ की शासन-पद्धति को एकदम बदल दिया है। अब शासन में प्रजा का बिलकुल हाथ नहीं है। इजिप्ट की सारी प्रजा इस दल के विरुद्ध है। पर वह क्या कर सकती है? इस दल की सहायता के लिए इजिप्ट में ब्रिटिश फ़ौजें मौजूद हैं! यदि वे इसके विरुद्ध आन्दोलन उठावें, तो वह अङ्गरेज़ी फ़ौज की सहायता से दबा दिया जावेगा। इजिप्ट में आज सेना का शासन है? प्रत्येक स्थान पर सेना और सिपाही उपस्थित हैं! राष्ट्र के सारे समाचार-पत्रों की स्वाधीनता छीन ली गई है! प्रत्येक दिन गिरफ़्तारियाँ होती हैं और घरों की तलाशियाँ ली जाती हैं! देश भर में दमन का भयानक राज्य स्थापित हो रहा है। और इस सबके लिए प्रजातन्त्र-समर्थक, स्वाधीनता-प्रेमी ब्रिटिश मज़दूर-दल ज़िम्मेदार है।"

पाठकों को याद होगा, कि इजिप्ट भारत की तरह पराधीन नहीं है। वहाँ का शासन हाल में कुछ दिनों तक एक प्रजा के प्रतिनिधि-सभा के हाथ में था। पर वहाँ पर ब्रिटिश सेना मौजूद है। यह सेना वहाँ के विदेशी निवासियों की रक्षा के लिए रक्खी गई है। पर यह तो एक बहाना मात्र है। इजिप्ट में ब्रिटिश सेना की उपस्थिति ही उनकी स्वाधीनता की राह का रोड़ा है। इजिप्ट की सन्धि में यह कहा गया था, कि ब्रिटिश



डॉक्टर सप्रू—(प्रधान-मन्त्री से) यह भारत-रूपी बालक आपकी सेवा में ले आया हूँ, "डायर्की" के स्तन का दूध इसे नहीं पचेगा, कम से कम इसे दूध पीने के लिए "फ़ेडरल" का चम्मच ही दे दीजिए !

लोगों से इजिप्ट के अन्दरूनी शासन से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस विषय में वे बिलकुल निष्पक्ष रहेंगे, परन्तु जब वे देखेंगे, कि कोई विदेशी जाति की भलाई तथा उनकी शारीरिक, आर्थिक दशा की रक्षा का भय है, तो वे इजिप्ट के राज्य-कार्य में अपना हाथ डाल सकेंगे। यदि इजिप्ट को पूर्ण स्वाधीनता है, तो उसे आन्तरिक शासन तथा विदेशी नीति दोनों में पूर्ण स्वाधीनता होनी चाहिए, परन्तु पूर्ण स्वाधीनता का तो केवल एक ढोंग मात्र है! जब तक ब्रिटिश सेना वहाँ के शासन में दख़ल देने के लिए मौजूद है, जब तक ब्रिटिश शासकों को अपने सैनिक बल द्वारा वहाँ की नीति में विघ्न डालने का अधिकार है, शासन में प्रजा का पूरा हाथ हो ही नहीं सकता। इजिप्ट का शासन वहाँ के निवासियों की इच्छानुसार हो ही नहीं सकता। आजकल की राजनैतिक दशा इस मत का पूर्ण समर्थन करती है। आज इजिप्ट का शासन एक बहुत छोटे से दल के हाथ में है। जनता उस दल से ज़रा भी सहानुभूति नहीं रखती, राष्ट्र और देश के मुख्य लोकप्रिय दल भी उसके विरुद्ध हैं, पर वे उसे हटाने में असमर्थ हैं। यह तो स्वाधीनता और प्रजातन्त्र का उपहास है।

भारत की तरह इजिप्ट को भी अपनी स्वाधीनता के लिए आन्दोलन करना पड़ा था। इस आन्दोलन के चलाने वाले वैफ़्द-दल वाले थे। जिस तरह आज कॉङ्ग्रेस भारत में सर्व-व्यापी हो रही है, उसी तरह इजिप्ट में वैफ़्द-दल सर्व-व्यापी है। राष्ट्र के नब्बे फ़ी सदी मनुष्य इसके सिद्धान्तों के अनुयायी हैं। इन्होंने इजिप्ट को राजनैतिक अधिकार दिलवाए हैं और जब इजिप्ट में प्रतिनिधि सभा स्थापित हुई, तब चुनाव में इसी दल की जीत हुई। इसके शासन-काल में इजिप्ट ने बहुत अच्छे-अच्छे क़ानून पास किए। इजिप्ट के किसानों को राष्ट्रीय शासन-सभा के लिए प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया गया। देश में अनिवार्य शिक्षा-प्रणाली स्थापित हुई। इजिप्ट में एक विश्वविद्यालय की स्थापना की गई और कई पाठशालाएँ तथा ग्राम-शालाएँ खोली गईं। किसानों की सहायता के लिए सहकारी संस्थाएँ क़ायम की गईं। मज़दूरों की सहायता के लिए क़ानून पास किए गए और उनके प्रति दिन काम करने के घण्टे निश्चित किए गए। देश की नहरों तथा तालाबों की उन्नति की गई और कपास की खेती को सहायता दी गई। भारत की तरह इजिप्ट भी एक कृषि-प्रधान देश है। वहाँ की वैफ़्द-सरकार ने कृषकों को हर प्रकार से सहायता दी। इस नवीन राज्य-पद्धति में किसानों ने भी अपनी आर्थिक दशा सुधारी। उन्होंने चुनावों में भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

फिर वैफ़्द-सरकार ने किसानों तथा स्त्रियों की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में भी कई क़ानून पास किए। बेगारी के विरुद्ध क़ानून बनाए। इस तरह से उन्होंने इजिप्ट की दासता, पराधीनता, दरिद्रता को दूर करने की भरसक कोशिश की।

पर अब सम्भव है कि यह सारी उन्नति पर पानी फेर दिया जावे। इजिप्ट फिर से अपने उन्नति के शिखर पर से दासता, अशिक्षा तथा दरिद्रता के महान अन्धकार में ढकेल दिया जावे। आज इजिप्ट की सारी सत्ता एक प्रजातन्त्र-विरोधी दल के हाथ में है। इजिप्ट के निवासियों के प्रतिनिधियों के चुनाव तथा शासन-पद्धति-निर्माण के अधिकार जो कभी नहीं छीने जा सकते थे, वे भी एकाएक छीन लिए गए हैं। इस दल ने एक नवीन शासन-प्रणाली का निर्माण किया है। इसके अनुसार देश की शासन-सभा के तीन-चौथाई सदस्यों का चुनाव राजा स्वतः करेगा। राज्य के ख़र्च इत्यादि के प्रस्तावों को प्रतिनिधि सभा के आगे रखना भी आवश्यक नहीं है। इस तरह यह दल मनमाना ख़र्च कर सकता है। वैफ़्द-दल ने जो इजिप्ट के सारे निवासियों को चुनाव का अधिकार दिया था, वह भी छीन लिया गया है! अब केवल धनी मनुष्य तथा ज़मींदार ही अपने प्रतिनिधि चुन सकते हैं! कोई डॉक्टर, वकील या ओहदे वाला आदमी चुनाव के लिए नहीं खड़ा हो सकता। इस तरह राज्य की सारी सत्ता आलसी, पूँजीपति और ज़मींदारों के हाथ में रख दी गई है। किसान तथा मज़दूर फिर दासता के बन्धन में कस दिए गए हैं। हमारी दयालु मज़दूर सरकार, जिसका अन्तिम उद्देश्य सब देशों में मज़दूर तथा किसानों का राज्य स्थापित कर देने का है, जिसका सब से पहिला सिद्धान्त मज़दूरों तथा किसानों की भलाई करने का है, आज इसी नीति का समर्थन कर रही है। केवल यही

(शेष मैटर १७ वें पृष्ठ के पहिले कॉलम के नीचे देखिए)

भविष्य

[वर्ष १, खण्ड २, संख्या ४

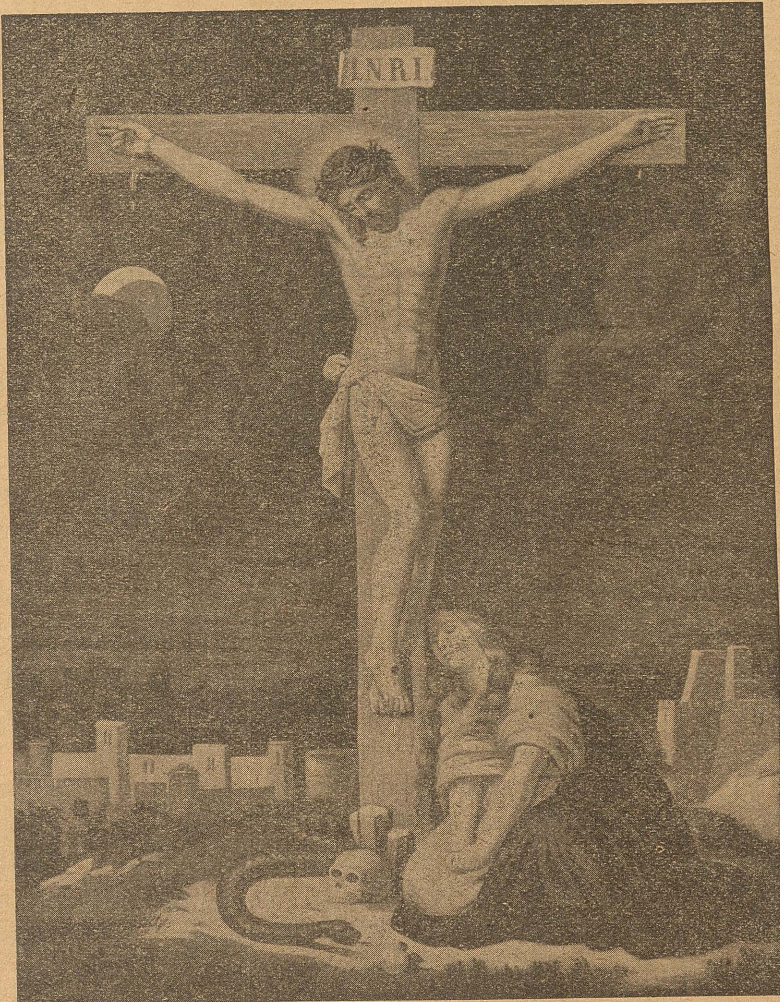
महात्मा ईसा और महात्मा गाँधी

"यदि आज महात्मा ईसा भारत में होते तो वे भी यरवदा जेल में बन्द मिलते !!"

बम्बई के राष्ट्रीय क्रिश्चियन दल ने विगत २६ वीं दिसम्बर को ब्लावाटस्की हॉल में एक बड़ी सभा की थी। उसमें श्रीयुत मुन्शी ने, जोकि इस सभा के सभापति थे, निम्न-लिखित भाषण दिया :—

आज मुझ ऐसे छोटे सत्याग्रही सिपाही को सभापति का आसन देकर, क्रिश्चियन जाति ने सत्याग्रह आन्दोलन को बहुत बड़ा आदर दिया है, परन्तु मैं यह स्वीकार करता हूँ, कि मैं इस महान अवसर पर सभापति का आसन ग्रहण करने के योग्य नहीं हूँ। संसार में ऐसे बहुत कम मनुष्य हैं, जो अपनी अद्भुत मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्ति द्वारा महात्मा ईसा के उस उपदेश को समझ सकते हैं, जिसके लिए उन्होंने अपना सारा जीवन व्यतीत किया और अन्त में प्राण तक दे दिए। पर जब मैं आज यह देख रहा हूँ, कि हमारे देश में एक अहिंसात्मक और सत्यमय राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहा है, जब मैं यह देख रहा हूँ, कि अहिंसा की वेदी पर बाबू गेनू ऐसे वीर अपने प्राणों तक की बलि देने को तैयार हैं, तब मुझे यह प्रतीत होता है कि आज महात्मा ईसा की आत्मा ही स्वतः महात्मा गाँधी के नेतृत्व में उठे हुए इस सत्यमय आन्दोलन का रूप धारण करके आई है।

सैकड़ों वर्षों से संसार के महान पुरुष इस पृथ्वी पर सत्य का राज्य स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे इस पृथ्वी पर ईश्वरीय साम्राज्य स्थापन करने का प्रयत्न करते-करते थक गए, परन्तु उन्हें सफलता न हुई। इतने प्रयत्न होने पर भी आज संसार के राष्ट्र सत्ता तथा धन के लिए मरे जा रहे हैं, हर घड़ी युद्ध के शस्त्र बनाने में लगे हुए हैं। फिर राजनैतिक धूर्तता भी बढ़ती ही जा रही है? संसार के पुरुष तथा स्त्रियाँ इनके असत्यमय झूठे व्यवहारों के शिकार बन रहे हैं और इनके पापाचारों के बोझ के नीचे कराह रहे हैं। इन पापाचारियों को संसार के कई महात्माओं ने चुनौती दी है। उन्होंने कहा है कि तुम्हारे पाप का भण्डा एक रोज़ अवश्य फूटेगा। जब सत्य का सूर्य उदित होगा, तब तुम सब उल्लुओं की तरह भागते नज़र आओगे। यही सदुपदेश महात्मा ईसा ने अपने अनुयायियों को प्रदान किया था। यही उपदेश आज महात्मा गाँधी भारतवर्ष को और उसके ज़रिए सारे संसार को दे रहे हैं। वे संसार को अपने पाशविक विचारों को दबाने का तथा हृदय में सात्विक भावों का राज्य स्थापित करने का उपदेश दे रहे हैं। हम लोगों को हरदम यह ख़याल रखना चाहिए, कि वर्तमान सत्याग्रह आन्दोलन महज़ एक राजनैतिक आन्दोलन नहीं है। यह एक आध्यात्मिक आन्दोलन है। महात्मा गाँधी ने यह बात पहिले ही से बता दी थी। वे मनुष्यों के विचारों को एकदम बदल देने का प्रयत्न कर रहे हैं। यही महात्मा ईसा ने किया था; ईसा ने कहा था—"वे धन्य हैं जो सत्य को ग्रहण करने के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि वे ही स्वर्गीय राज्य के योग्य हैं।" महात्मा ईसा की तरह महात्मा गाँधी भी कहते हैं, कि "जो केवल तुम्हारे शरीर का नाश कर सकते हैं उनसे मत डरो, क्योंकि वे तुम्हारी आत्मा का नाश नहीं कर सकते।" और यदि आज महात्मा ईसा भारत में होते तो वे भी यरवदा जेल में बन्द पाए जाते।



महात्मा ईसा

ईसा के अपूर्व जीवन तथा उपदेश की तरह यह आन्दोलन भी सत्य पर स्थित है। सच्चा सत्याग्रही सत्य की रक्षा के लिए सारे दुःख, सारे कष्ट ख़ुशी से सहन करता है। इसमें कितने ज़बर्दस्त साहस, कितने दृढ़ निश्चय की आवश्यकता है। भारत आज सत्य पर स्थित है। अपनी शक्ति, अपनी एकता तथा स्वातन्त्र्य की सत्यता दिखाने के लिए वह सब कष्ट सहने को तैयार है। वे मनुष्य, जिनके हृदय दुर्बल हैं, जिनकी निश्चयात्मक शक्ति कमज़ोर है, उसके इस महत्व पर ध्यान नहीं दे सकते, उसके इस महान सौन्दर्य को नहीं देख सकते। इस देश के बाबू गेनू तथा यतीन्द्रदास ऐसे वीरों ने उसके इस महत्व को देखा है और उसके इस सौन्दर्य का पान किया है। उन्होंने सिद्ध किया है, कि आज जो भारत के लिए मरता है वह जीवित है। इस आन्दोलन में बुज़दिल तथा डरपोक मनुष्यों के लिए स्थान नहीं है। युद्ध से डरने वाले लोगों के लिए जगह नहीं है। यहाँ उन लोगों के लिए स्थान नहीं है, जो सत्ता तथा नाम के पीछे दिवाने हैं। ऐसे मनुष्यों के लिए राउण्डटेबुल कॉन्फ्रेन्स का द्वार खुला है। वे वहाँ जाकर चैन कर सकते हैं, और नाम कमा सकते हैं। हम लोगों के लिए तो एक साथ जेलों में जन्म बिताना ही सब से बड़ा गौरव है, एक साथ लाठियों से सिर फोड़वाना तथा देश के लिए शहीदों के ख़ून में अपना ख़ून मिला देना ही, सब से बड़ा आदर्श है। हमें तो सब से बड़ा गौरव इसमें है, कि हम कन्धे से कन्धा लगा कर इस सत्यमय आन्दोलन में भाग लें तथा सारे कष्टों को चुपचाप सहन करें। हमारी सब से बड़ी कामना यह है, कि हमारे इस आत्म-बलिदान से एक ऐसा ज़बर्दस्त प्रेम-बन्धन तैयार होवे, कि जो भारत को इतना शक्तिमान बना देवे कि न कोई इसके टुकड़े कर सके और न कोई इसे अपने वश में रख सके!

इस आन्दोलन के लिए जितना ही कष्ट सहन करना आवश्यक है, उतना ही अहिंसा के मार्ग पर दृढ़ रहना भी ज़रूरी है। उस वायु-मण्डल में, जहाँ कि हिंसा का जवाब प्रतिहिंसा में दिया जाता है, आत्मा का पूर्ण विकास नहीं हो सकता। सत्य के लिए कष्ट भोगना और प्राण दे देना ही हमारा धर्म है। सत्य का नाश करना दूसरे दल का धर्म है, हमारा नहीं। कष्ट भोगने में तथा प्राण देने में ही हमारा गौरव है। हमें अपने प्यारे देश को स्वतन्त्र करने के लिए हज़ारों की संख्या में ख़ुशी से अपने प्राण गँवाने पड़ेंगे, लाखों को हाथ-पैर तुड़वाने पड़ेंगे और करोड़ों को पूर्ण विनाश सहन करना पड़ेगा। जो इस महान आदर्श की पूर्ति के लिए अपने प्राण न्योछावर करेगा, वही उसे पावेगा। परन्तु जो इसके लिए तैयार नहीं है, वह इस महान कार्य के योग्य नहीं है।

(शेष मैटर १८ व पृष्ठ के पहिले कॉलम के नीचे देखिए)



परिवर्तन

[श्री० प्रकाशदत्त जी, एम० ए०]

दीपकों का आलोक होते ही सन्ध्या जैसे खिलखिला कर हँस पड़ी। मौलवी रौशनअली साहब कपड़े पहिन कर बाहर जाने के लिए तैयार हुए। इतने में ही उनकी धर्मपत्नी ज़ोहरा बेगम उनके सामने आ पहुँचीं। मुखड़े पर रुखाई थी, विरस स्वर में बोलीं—कहाँ जा रहे हो? जान पड़ता है, आज भी कोई मीटिङ्ग है। तुम्हें कितना मने करती हूँ, पर तुम मानते ही नहीं। देखती हूँ कि अब तुम्हें स्वराज्य के मशविरों के सिवा कोई काम ही नहीं रह गया है। ख़ुदा इन स्वराजियों को ग़ारत करे, इन्होंने न जाने कितनी सोने की गृहस्तियाँ ख़ाक में मिला दी हैं!

"ज़ोहरा! ख़ुदा के वास्ते ऐसा न कहा करो। हिन्दोस्तान हमारा मुल्क है। इसी चमन की मिट्टी से हमारा यह जिस्म बना है, और एक दिन इसी चमन की मिट्टी में यह जिस्म मिल जाने वाला है। इस मुल्क की ख़ातिर हमारे इतने फ़रायज़ हैं कि उनकी फ़ेहरिस्त कभी ख़तम नहीं हो सकती, शायद हमारी क़ुरबानी से भी वह फ़रायज़ अदा नहीं हो सकते। ज़ोहरा, क्या अपने इस उजड़े हुए बाग़ को देख कर तुम्हें कुछ भी तर्स नहीं आता?" मौलवी साहब के चेहरे पर मुस्कान थी और कण्ठ में करुणा।

"मैं तुम्हारी बातों की तसकीन करती हूँ। पर एक बात पूछती हूँ। आख़िर अङ्गरेज़ों से तुम लोगों की इतनी दुश्मनी क्यों है? तुम लोग उन्हें हिन्दोस्तान से निकाल बाहर करने के लिए क्यों इतने परेशान हो रहे हो?"

"ज़ोहरा! कहती क्या हो! तुमसे यह किसने कहा कि हम लोग अङ्गरेज़ों के दुश्मन हैं, या उन्हें हिन्दोस्तान से बाहर निकाल देना चाहते हैं? हम तो यह समझते हैं, कि दुनिया में अगर अङ्गरेज़ों के सब से ज़्यादा कोई दोस्त हैं तो वह हम हैं। और हम तो ख़्वाब में भी यह नहीं चाहते कि वह हिन्दोस्तान छोड़ कर चले जाएँ।"

"फिर इतना तूफ़ान किस लिए?"

"यही तो समझने की बात है। हम दुनिया को अपना यह दावा सही करके दिखलाना चाहते हैं कि दुनिया में अङ्गरेज़ के सब से बड़े दोस्त हमी हैं, और कोई नहीं। पर मौजूदा हालत में यह दावा फ़िज़ूल है। अभी हम ग़ुलाम हैं, और अङ्गरेज़ हमारे बादशाह।"

"तब तुम उनसे क्या चाहते हो?"

"यही कि वह अब हमें ग़ुलाम समझना छोड़ दें और यह समझने लगें, कि हम भी उन्हीं जैसे इन्सान हैं।



सुप्रसिद्ध नर्तक श्री० उदयशङ्कर की १८ वर्षीय फ़्रेञ्च-सहयोगिनी—मिली सिमकी

आपने भारतीय नृत्य-कला में अलौकिक उन्नति प्राप्त की है। जब आप भारतीय वेष-भूषा में भारतीय नृत्य करती हैं, तो स्वयं फ़्रान्स वालों तक को आपके भारतीय युवती होने का धोखा हो जाता है। इस चित्र में पाठक इन्हें भारतीय ढङ्ग से नाचते हुए देखेंगे।

वह हुकूमत के तर्ज़ को इस तरह से बदल दें कि ग़रीब हिन्दोस्तानी रोज़-रोज़ की मुसीबतों से निजात पाएँ और तरक़्क़ी के मैदान में आगे बढ़ सकें।"

"आख़िर हिन्दोस्तानियों को क्या-क्या तकलीफ़ें हैं?"

"ज़ोहरा! तकलीफ़ों की क्या पूछती हो! बेशुमार हैं, और उनके भार से सारा हिन्दोस्तान पिसा जा रहा है। हमारे दिए हुए टैक्स से ही हुकूमत का सारा कारोबार चल रहा है, पर उस कारोबार में हमारा कोई हक़ नहीं है, जैसे हम इस मुल्क के कोई नहीं हैं; यही वह बीमारी है, जिसने इस हरे-भरे मुल्क की नस-नस में से जान खींच ली है। तुम शहर से बाहर निकल कर देहात में जाओ, तो देखोगी कि बेशुमार ग़रीब लोग यतीम बच्चों की नाईं मोहताज हो रहे हैं, न उनके बदन पर सूत के तार हैं, न बेचारे दोनों वक़्त पेट भर खाना पाते हैं। एक नमक ही को लो, यह क़ुदरती चीज़ है, ग़रीब लोग थोड़ी सी मेहनत से—पैसे ख़र्च किए बिना ही इसे हासिल कर सकते हैं, पर नमक का यह सब ख़ज़ाना सरकार अपने पञ्जों में दबाए बैठी है। घास और जङ्गल को देखो, यह भी ख़ुदाई चीज़ें हैं। पर ग़रीब लोग अगर जङ्गल से सूखी लकड़ियाँ बटोर लें और भूख से तड़पते हुए जानवर उसमें उगी हुई घास पर मुँह मार दें तो यह सरकार की नज़र में बहुत बड़ा जुर्म है—सज़ा के क़ाबिल! उफ़! कितनी ज़्यादती है! ज़ोहरा, भला तुम्हीं बताओ, ऐसी-ऐसी ज़्यादतियाँ इन्सान कब तक बर्दाश्त कर सकता है?" मौलवी साहब की आँखों से जैसे चिनगारियाँ उड़ने लगीं, वाणी में जैसे छाती को फाड़ डालने वाला कम्प आ गया।

परन्तु ज़ोहरा ने इस ओर ध्यान न देकर, कहा—सल्तनत अङ्गरेज़ों के हाथ में है। उनके बाज़ुओं में क़ूवत है। वह तुम्हारी बातें नहीं सुनेंगे।

मौलवी साहब प्रलय की हँसी जैसा अट्टहास करते हुए बोले—"यह तो हम आज पचास साल से समझ रहे हैं। पर अब ज़माना आ गया है, वह हमारी बातें सुनेंगे, दुनिया हमारी बातें सुनेगी। वह हमारी ज़बान बन्द करेंगे, पर हमारी आहें हमारी मुसीबतों का इज़हार करेंगी। वह हमें जेल में बन्द करेंगे, पर हमारी चाल हमारी मुसीबतों का इज़हार करेगी। वह हमारे सीने को सङ्गीनों से चाक करेंगे, पर हमारे ख़ून के क़तरे आसमान को फाड़ डालने वाली आवाज़ में हमारी मुसीबतों का इज़हार करेंगे। हमें अङ्गरेज़ों से लड़ना नहीं है, केवल उनके हाथ से मर कर अपने वाजिब हुक़ूक़ लेने हैं।" मौलवी साहब की वाणी में सत्य और आत्म-विश्वास का प्रवाह था। उनका मुखड़ा प्रदीप्त हो उठा। वह बोलते ही गए—"और हम करते ही क्या हैं, केवल अपने भाइयों से यही कहते हैं कि अपने देश का बना कपड़ा पहिनो—अपने देश की बनी हुई चीज़ें इस्तेमाल में लाओ। नशीली चीज़ों पर ठोकर मार दो, ताकि तुम्हारे पास

(१५वें पृष्ठ का शेषांश)

नहीं, इस नीति की स्थिरता के लिए वह अपनी सैनिक शक्ति इस दल को सौंपे हुए है। यदि आज इजिप्ट में ब्रिटिश सेना न होती तो जनता के विरुद्ध यह दल यह सब कार्य कदापि न कर सकता। यदि आज इजिप्ट के निवासियों को ब्रिटिश तोपों और गोलियों का डर न होता तो वे इतनी शान्ति के साथ अपने सारे अधिकार इस एकतन्त्रवादी घृणित दल के नेताओं के हाथ में न सौंप देते। पर उन्हें मालूम है कि आज इस दल का साथ सारा ब्रिटिश राज्य दे रहा है। इससे वे इसके विरुद्ध लड़ने में असमर्थ हैं। क्या फिर भी आशा की जावे कि उनकी प्रार्थना उस दूरस्थित द्वीप के बलशाली निवासियों तक पहुँच सकेगी। क्या इस सब वादाख़िलाफ़ी के बाद भी इजिप्ट के ग़रीब किसान यह आशा कर सकते हैं कि हमारे दयालु शासकों का हृदय किसी समय पसीजेगा।

*   *   *

चार पैसे तो बचें। क्या इसका नाम भी अङ्गरेज़ों से लड़ना है?"

पर ज़ोहरा ने, जैसे मौलवी साहब की बातें सुनी ही नहीं, बोलीं—कुछ भी हो, है यह अङ्गरेज़ों की मुख़ालफ़त ही। मुझे तुम्हारी बातें पसन्द नहीं। बैठे-बिठाए आफ़त मोल लेना कहाँ को अक़्लमन्दी है? स्वराज्य वालों ने तो यह क़स्द ही कर लिया है कि न .खुद ख़ामोश



हाल ही में मैसूर में होने वाले अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महा-सम्मेलन के प्रधान—कविराज गङ्गानाथ सेन, एम० ए०, एल-एम० एस० (कलकत्ता)

बैठेंगे, न दूसरों को बैठने देंगे। तुम्हें किस बात की कमी है, ख़ुदा का दिया सब कुछ है; फिर इन टण्टे-बखेड़ों में पड़ने की ज़रूरत? तुम्हारी बातें सुन कर मेरी तबीयत घबराने लगती है। .खुदा न करे, कहीं तुम गिरफ़्तार कर लिए गए, तो हमारा क्या होगा? इन नन्हें-नन्हें बच्चों की ख़बर कौन लेगा?

ज़ोहरा का मुखड़ा उतर गया। आँखों में आँसू भर आए।

ज़ोहरा का उतरा हुआ चेहरा देखते ही मौलवी साहब के जोश पर जैसे हिम-वर्षा हो गई। ज़बर्दस्ती मुस्कुराहट को घसीट कर स्नेह-मिश्रित स्वर में बोले—

ज़ोहरा! सारे मुल्क में आग लग चुकी है, अब हम चैन से नहीं रह सकते। जो सबकी गति होगी, वही हमारी। मुझे इन बातों का कोई ग़म नहीं, ग़म है तो केवल तुम्हारे उतरे हुए चेहरे का! मोहब्बत के यह मानी नहीं हैं, कि अगर मैं ठीक रास्ते पर चल रहा होऊँ, तो तुम मेरा पल्ला पकड़ कर मुझे पीछे खींचो। हाँ, अगर मैं ग़लत रास्ते पर जाता होऊँ तो दूसरी बात है। अच्छा, यह उदासी छोड़ो और एक बार मुस्कुरा दो। तुम्हारा मुस्कुराता हुआ चेहरा देख कर मेरी जान हरी हो जाती है, और तब गिरफ़्तारी की तो बात ही क्या, मैं झूमते हुए छुरी के नीचे भी गला रख सकता हूँ।

ज़ोहरा ने अपने धानी दुपट्टे के अञ्चल से नेत्रों के कोने पोंछ लिए और थोड़ा सा मुस्कुरा दिया।

मौलवी साहब कनखियों से उनकी ओर देखते हुए धीरे-धीरे बाहर निकल गए।

* * *

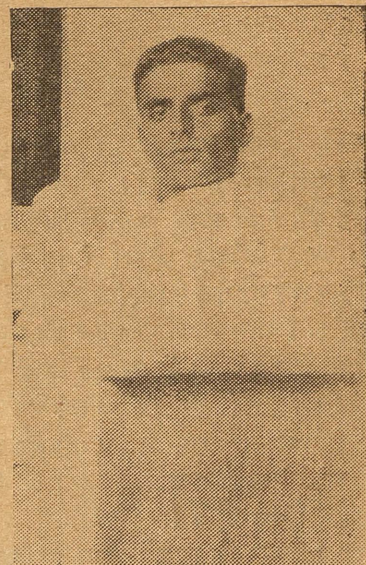
शहर के लोग एक तीव्र उत्कण्ठा के आवेग में तालाब के उस लम्बे-चौड़े घाट की ओर दौड़े जा रहे थे, जहाँ आए दिन सार्वजनिक सभाएँ हुआ करती हैं और जहाँ कर्त्तव्य की पुकार जल की लोल-लहरों पर नाचने लगती है। आज की सभा अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। गवर्नमेण्ट हाई-स्कूल के कुछ मनचले देश-भक्त विद्यार्थियों ने हाई-स्कूल के विशाल-भवन पर राष्ट्रीय झण्डा फहरा दिया था। जब हेडमास्टर साहब ने नाराज़ होकर, एक भङ्गी के हाथों राष्ट्रीय ध्वजा नीचे उतरवा दी और विद्यार्थियों को बुरी तरह डाँटा, तब बहुत से स्वाभिमानी विद्यार्थी स्कूल से बाहर निकल आए। शहर में क्षोभ की बाढ़ आ गई। कुछ समझदार लोगों ने इस बात की चेष्टा की कि किसी तरह मामला शान्त हो जाय, पर अधिकारी अपनी ज़िद



वर्धा-निवासी सुविख्यात रेलवे-सत्याग्रही—श्री० पोपतलाल शाह, जिन पर ३ बार चलती हुई गाड़ी को चेन खींच कर रोकने का अभियोग चल चुका है। जब कभी गाड़ी में भीड़ के कारण मुसाफ़िरों को तकलीफ़ होती है, आप चेन खींच कर गाड़ी रोक देते हैं। तीसरे केस में आप छोड़ दिए गए हैं।

रखना चाहते थे, विद्यार्थी राष्ट्रीय ध्वजा का सम्मान रत्ती भर भी घटाने के लिए प्रस्तुत न थे। आज की सभा का विचारणीय विषय यही था कि अब इस सम्बन्ध में नागरिकों और विद्यार्थियों का कर्त्तव्य क्या है?

हज़ारों आदमियों की भीड़ थी, पर सभा का कार्य अब तक शुरू न हुआ था, केवल एक व्यक्ति की प्रतीक्षा हो रही थी, और वह व्यक्ति थे हमारे मौलवी रौशनअली साहब। मौलवी साहब शहर और ज़िले के नेताओं में सर्व-श्रेष्ठ समझे जाते हैं। वह एक मशहूर हकीम और अरबी, फ़ारसी तथा उर्दू के धुरन्धर पण्डित हैं। परन्तु उनके मुख्य गुण हैं—हृदय की सरलता, वाणी की मधुरता, मिलनसारी और अनन्य देश-भक्ति। जनता उन्हें हकीम की अपेक्षा देश-भक्त के रूप में ही अधिक पहचानती है। वह उन्हें आरम्भ से ही देश-भक्त के रूप में देखती आ रही है। लोगों ने कभी उनके या उनके बच्चों के शरीर पर विदेशी तार नहीं देखे।



नगरपरकार ताल्लुक़ा (गुजरात) के देश-सेवक-मण्डल के प्राण—श्री० ए० जी० चैनानी। आप विद्या-प्रचारक सभा के भी प्रधान हैं।

असहयोग आन्दोलन में मौलवी साहब ने नगर और ज़िले के बच्चे-बच्चे को देश-प्रेम का पाठ पढ़ाने की चेष्टा की थी। उस समय, देश का काम करते हुए वह परिश्रम को परिश्रम, दिन को दिन और रात को रात नहीं समझते थे। असहयोग आन्दोलन के बाद जब देश में हिन्दू-मुस्लिम-विग्रह का तूफ़ान आया, और दोनों जातियों के बड़े-बड़े ज़िम्मेदार नेता निरन्तर विष-वमन करने लगे, तब मौलवी साहब अपने नगर और ज़िले में हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य दृढ़ बनाए रखने की चेष्टा करते थे। वह दोनों को बार-बार यही समझाते थे, कि तुम्हारे विग्रह में ही भारत का सर्वनाश और हुकूमत का स्वार्थ निवास करता है। फलतः दोनों जातियों में न गाली-गलौज हुआ और न उन्हें धींगा-मुश्ती करने का ही अवसर मिला। मौलवी साहब जनता के हृदय में बैठ गए। सभी उन पर विश्वास और प्यार करने लगे।

वर्तमान स्वाधीनता आन्दोलन आरम्भ होते ही मौलवी साहब की सिंह-गर्जना से नगर, ज़िले और प्रान्त के कोने-कोने काँप उठे। लोगों ने देखा कि यह युद्ध लड़ने के लिए हमें मौलवी साहब से बढ़ कर सिपहसालार नहीं मिल सकता। बस, वह नगर और ज़िला-काँङ्ग्रेस कमेटी के 'डिक्टेटर' बना दिए गए। उनका डिक्टेटर बनना था कि सम्पूर्ण ज़िले में एक नवीन प्राण-प्रतिष्ठा हो गई, वर्षों का काम दिनों में और दिनों का मिनटों में होने लगा। अस्तु—

थोड़ी ही देर में दो-चार मित्रों के साथ मौलवी साहब ने मुस्कुराते हुए सभा में प्रवेश किया। अपने प्यारे नेता को देखते ही सब लोग खड़े हो गए और उसके सम्मान में उन्होंने अपने हृदय की समस्त पुण्य-प्रेरणाएँ निछावर कर दीं। 'भारतमाता की जय, महात्मा गाँधी की जय, मौलवी साहब की जय' आदि की सम्मान-पूर्ण ध्वनियों से आसमान गूँज उठा। मौलवी साहब धीरे-धीरे चल कर मञ्च पर जा विराजे। सभा का कार्य आरम्भ हो गया।

कुछ नेताओं के भाषण हो जाने के बाद मौलवी साहब खड़े हुए। सम्पूर्ण सभा निस्तब्ध हो गई, हज़ारों

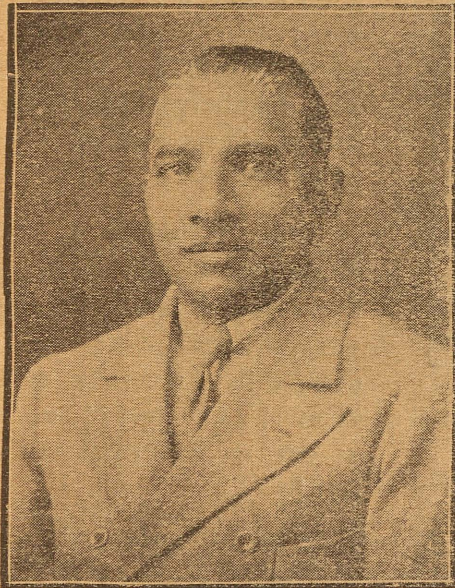
(१६वें पृष्ठ का शेषांश)

इसी आदर्श से प्रोत्साहित होकर महात्मा गाँधी तथा उनके अनुयायी इस महान कार्य में लगे हुए हैं और इसीसे वे विजयी भी होवेंगे। जो यह कहते हैं कि सत्याग्रह का उद्देश्य किसी जाति-विशेष या धर्म-विशेष की सहायता करना है, वे झूठे हैं; जो यह कहते हैं कि सत्याग्रह आन्दोलन केवल मज़दूरों या पूँजीपतियों का पक्षपाती है, वे ग़लती कर रहे हैं। जो मनुष्य सत्य तथा अहिंसा का व्रत धारण करता है, वह किसी तरह के भी अन्याय को नहीं देख सकता। प्रत्येक मनुष्य के जीवित रहने के, उन्नति प्राप्त करने के तथा अपने जीवन को स्वतन्त्रतापूर्वक चलाने के अधिकार की रक्षा करना ही सत्याग्रही का धर्म है। प्रत्येक देश की स्वतन्त्रता तथा उसकी उन्नति की रक्षा करना ही उसके जीवन का सब से बड़ा उद्देश्य है। किसी देश-विशेष की परतन्त्रता ही सम्पूर्ण मनुष्य जाति की उन्नति को रोक सकती है। स्वतन्त्रता ही सब दोषों को दूर करने वाली है। इसी भाव से हमें अपने कार्य में जुटे रहना चाहिए। हम संसार की बेड़ियाँ काटेंगे, हम अपने आत्म-बलिदान की अग्नि में सारे संसार को तपा कर उसके हिंसा, दमन तथा अन्याय रूपी सम्पूर्ण मल को जला देंगे। क्रिसमस के समय में यही हमारा सन्देश है।

* * *

नेत्र मौलवी साहब के प्रफुल्ल मुखड़े पर जा अटके। मौलवी साहब के भाषण में जादू हुआ करता है, उनकी जिह्वा से शब्द नहीं, तीर निकला करते हैं, जो सीधे जाकर श्रोताओं के हृदय छेद डालते हैं। सभा में सदा बहुत से लोग तो केवल मौलवी साहब के इसी जादू से मुग्ध होने के लिए आया करते हैं। झण्डे की महिमा और अन्य देशों के लोगों के झण्डा-प्रेम का वर्णन करते हुए मौलवी साहब ने विद्यार्थियों से कहा—"मेरे छोटे-छोटे भाइयो! हम लोगों से सलाह-मशविरा किए बग़ैर यह झगड़ा उठा कर तुमने सख़्त ग़लती की है। कॉङ्ग्रेस कमेटी की हरगिज़ यह मन्शा न थी, कि तुम लोग इस झगड़े में पड़ते। पर इसके लिए मैं तुम्हारी लानत-मलामत न करूँगा। हमें इस बात का फ़ख़्र है, कि तुम्हारे छोटे-छोटे कलेजों में इतनी जान है, तुम्हारे दिलों में मुल्क की मोहब्बत का इतना हौसला और अरमान है, और तुम अपने क़ौमी झण्डे की इज़्ज़त करना जानते हो। जब तुम्हारे हौसले इतने बढ़े-चढ़े हैं, तुम्हारे दिलों में ऐसे-ऐसे जज़बात भरे हैं, तब हम तुम्हारा साथ देंगे। हर एक तालिब-इल्म से मेरा यही कहना है, कि जब तक हाई-स्कूल पर हमारा क़ौमी झण्डा न फहराया जाए, तब तक वह स्कूल के भीतर पैर रखने का भी ख़्याल न करे।"

इसके बाद मौलवी साहब जनता से बोले—"और भाइयो, इस मामले में आपको हमारा और लड़कों का साथ देना पड़ेगा। इससे ज़्यादा और कुछ कहना फ़िज़ूल है, आप लोग ख़ुद अपने झण्डे की इज़्ज़त करना जानते हैं। हाँ, कुछ भाई ऐसे ज़रूर हैं, जो अब तक अपने मुल्क की और अपने झण्डे की इज़्ज़त करना नहीं जानते। उनसे मेरी यही इल्तजा है, कि वह अपने को हिन्दोस्तान से बाहर न समझें; इसमें केवल झण्डे



श्री० विडमन ए० भुवाराहम

आप एक टैमिल छात्र हैं, जिनकी प्रतिभा से प्रसन्न होकर मद्रास विश्वविद्यालय ने आपको १,०००) रु० की थैली भेंट की है।

की ही नहीं, उनकी भी बेइज़्ज़ती है। उम्मीद तो यही है, कि वह हमसे जुदा न रहेंगे, फिर भी अगर वह अपने लड़कों को स्कूल भेजेंगे, तो हमें दर्जे-लाचारी पिकेटिङ्ग करना पड़ेगा।"

इसी समय एक आवाज़ आई—"और पढ़ाई बन्द रहने से लड़कों का जो नुक़सान होगा, वह?"

मौलवी साहब ने जवाब दिया—"हमें उसकी परवाह नहीं। मैं समझता हूँ, कि थोड़े से पढ़ने के पेश्तर आप अपनी और अपने मुल्क की इज़्ज़त का ख़्याल करेंगे। इज़्ज़त के लिए अपना ख़ून भी मानिन्द पानी के बहा देना पड़ता है, पढ़ने-लिखने की तो बात ही क्या। इस मामले में आपको उन व्यापारियों से सबक़ लेना चाहिए, जो आज मुल्क की ख़ातिर विलायती माल की बिक्री बन्द कर, करोड़ों का नुक़सान बर्दाश्त कर रहे हैं! फिर हम लड़कों का नुक़सान नहीं चाहते। ऐसी कोशिश की जायगी जिससे लड़कों का थोड़ा-बहुत पढ़ना-लिखना जारी रहे।"

लाट साहब को बड़े दिन में भी डाली न गई!

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

वक़्त पर तेग़ सितमगर से सँभाली न गई!
सरे-मक़तल मेरी हसरत भी निकाली न गई!!
ग़म है क्या, ग़म को समझता हूँ ख़ुशी से बढ़ कर!
मेरे चेहरे की मुसीबत में बहाली न गई!!
क्या करें, हो गए मजबूर, कुछ ऐसे मिस्टर!
मिसे-लन्दन की कोई बात भी टाली न गई!!
सामने बैठ गया उनके झुकाए हुए सर!
किस लिए म्यान से तलवार निकाली न गई?
राय-साहब भी हुए, ख़ान-बहादुर भी हुए!
क्या मुबारक घड़ी आई थी, जो ख़ाली न गई!!
फिर भी समझे हैं, कि मिल जायगा उनसे सब कुछ!
न गई हाँ, न गई ख़ाम-ख़्याली न गई!!
फूल फल सकते नहीं बाग़े-जहाँ में "बिस्मिल"
लाट साहब को बड़े दिन में भी डाली न गई!!

सहसा हथियार-बन्द पुलिस का एक दस्ता सभा के चारों ओर बिखर पड़ा। कई कॉन्स्टेबिलों को साथ लिए हुए चार पुलिस-ऑफ़िसर मञ्च की ओर बढ़े। उन्होंने मौलवी साहब को और उनके साथ ही अन्य तीन नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया। जहाँ जादू की वर्षा हो रही थी, वहीं क्षोभ की उत्ताल तरङ्गें उठने लगीं। मौलवी साहब तथा अन्य बन्दी सज्जनों के सम्मान में अपना हृदय बिछाती हुई जनता पुलिस-दल के पीछे चल पड़ी। संसार में कितनी अस्थिरता है।

* * *

मौलवी साहब ने अगर ग़ौर से देखा होता, तो उन्हें मालूम हो जाता कि ज़ोहरा की उस मुस्कुराहट में वेदना का कैसा विराट संसार छिपा हुआ है, परन्तु उस समय वह कर्तव्य की धुन में इस प्रकार मस्त हो रहे थे कि उतनी बड़ी चीज़ न देख सके, और झूमते हुए बाहर निकल गए।

मौलवी साहब के पीठ फेरते ही ज़ोहरा के बड़े-बड़े नेत्रों से आँसू बाहर निकलने लगे—मानो हृदय की वेदना आँखों की राह बाहर निकल जाना चाहती हो। वह एक बड़े सरकारी ऑफ़िसर की बेटी हैं। उनके पिता मौलवी साहब के आचार-विचार से अपरिचित नहीं हैं, अतः वह मौलवी साहब को हमेशा राजनैतिक झगड़ों से दूर रहने के लिए लिखा करते हैं। परन्तु जब इतने से ही स्नेह-वत्सल हृदय को सन्तोष नहीं होता, तब वह कभी-कभी ज़ोहरा को भी ख़त में लिख दिया करते हैं, कि बेटी, ज़रा अक्खड़ मौलवी साहब पर नज़र रक्खा करो। ख़ुदा न करे, अगर कभी वह जेल भेज दिए गए, तो हम लोगों को बड़ी ज़िल्लत उठानी पड़ेगी। अगर वह शामिल न होंगे, तो स्वराज्य वालों का कुछ बनने-बिगड़ने वाला नहीं। हज़ारों-लाखों आदमी काम कर रहे हैं, एक रौशनअली के दूर रहने से कुछ हर्ज न होगा।

* * *

जेल! उफ़! जेल कैसी ख़ौफ़नाक चीज़ है। ज़ोहरा ने सुना था कि जेल दोज़ख़ का ही एक हिस्सा है। जेल में जाना और दोज़ख़ में जाना—दोनों के मानी एक ही हैं। ज़ोहरा को मालूम था, और अख़बार उन्हें रोज़-रोज़ बतलाया करते थे, कि आजकल सियासती मामलों में सड़ी-सड़ी सी बातों पर बड़े-बड़े आदमी जेल में भेज दिए जाते हैं। मौलवी साहब भी सियासती मामलों में शामिल रहते हैं। अगर कहीं वह भी जेल भेज दिए गए तो? यह विचार आते ही ज़ोहरा की आँखों के सामने अँधेरा छा जाता था, उनके प्राण इस तरह काँप उठते थे, जैसे छोटा सा बच्चा अपने सामने मास्टर की भयङ्कर मूर्ति और उसके लपलपाते बेत को देख कर काँप उठता है!

केवल इसी काल्पनिक भय के कारण ज़ोहरा बार-बार मौलवी साहब को राजनैतिक मामलों में पड़ने से रोका करती थीं। मौलवी साहब उनकी इस कमज़ोरी को जानते थे, पर प्रिया के सजल नेत्र देख कर कर्त्तव्य-पथ से पीछे हट जाना उन्होंने नहीं सीखा था। वह ख़ुद हँस कर, ज़ोहरा को हँसा-मुसकुरा कर अपने कार्य में व्यस्त हो जाते थे। आज जब मौलवी साहब ज़ोहरा को ज़बर्दस्ती हँसा कर बाहर चले गए, तब ज़ोहरा का नारी-सुलभ स्वाभिमान जाग्रत हो उठा। इतनी मग़रूरी—इतनी ख़ुदपरस्ती—जैसे मैं इनकी कोई नहीं हूँ—इन पर मेरा कुछ भी अख़्तियार नहीं है। परन्तु दूसरे ही क्षण जेल के ख़्याल से वह काँप उठीं। "आह! मैं क्या करूँ?" कहती हुई वह रो पड़ीं।

बुढ़िया हमीदन अभी तक आँगन के एक कोने में बैठी हुई बर्त्तन मल रही थी। वह मौलवी साहब के घर की पुरानी दासी थी। उन्हीं के घर में उसकी जवानी बीती थी, उन्हीं के घर में उसके बाल सफ़ेद हुए



श्री० सी० बी० तारपोरवाला, बी० ए०, बी० एस-सी०; सी० ए० आई० बी० (लन्दन)

जो हैदराबाद स्टेट के अर्थ-विभाग के सहायक मन्त्री नियुक्त हुए हैं।

थे। वह विधवा थी, बाल-बच्चे उसके थे नहीं। मौलवी साहब का परिवार ही हमीदन का परिवार था। मौलवी साहब को ही वह अपना पुत्र समझती थी। मौलवी साहब का शैशव हमीदन की गोद में ही व्यतीत हुआ था। वह कहने को तो दासी थी, पर मौलवी साहब और ज़ोहरा पर उसका प्रभाव उसी प्रकार था, जैसा कि माता का अपने बच्चों पर होता है।

ज़ोहरा की सिसकियाँ सुन, वह उनके पास आ पहुँची। अपने दुपट्टे से उनके आँसू पोंछती हुई बोली—दुलहिन! मत रो! आजकल के लौंडे ऐसे ही होते हैं।

जो उन्हें अच्छा लगता है वही करते हैं। मैंने भी उसे कितना मने किया, पर वह माने तब न! जब वह मेरी नहीं सुनता, तो तेरी क्या सुनेगा! मत रो—रो-रोकर अपने जी को न जला।

ज़ोहरा और भी रोने लगी। बोली—अम्माँ! तुम नहीं जानतीं। वह बड़े ख़तरनाक रास्ते पर चल रहे हैं। वह चाहते हैं कि हुकूमत हिन्दोस्तानियों को भी उनके वाजिब हुक़ूक़ दे। इस बात से सरकार नाराज़ होती है। इसी बात पर उसने बड़े-बड़े लोगों को जेल में डाल दिया है। उनकी फ़िक्र से मेरा कलेजा जला जाता है—मैं कहाँ तक उन्हें समझाऊँ।

हमीदन बड़बड़ा कर बोली—बेवक़ूफ़ है बेवक़ूफ़। उस नालायक़ को कौन समझावे, कि तू क्या खाकर सरकार से लड़ेगा। मैंने तो अब उससे कुछ कहना-सुनना ही छोड़ दिया है। जो उसे अच्छा लगे, वही करे। किसी दिन रगड़े में आ जायगा, तो आप ठीक हो जायगा। पर तू अपने जी को क्यों जलाती है?



बम्बई के गिरगाँव पुलिस-कोर्ट का दृश्य

यह चित्र उस समय लिया गया था, जब कुछ राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को सज़ा की आज्ञा सुनाने के बाद पुलिस वाले जेल ले जा रहे थे। ऊपर के घेरे में पाठक बम्बई के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता श्री० मेहरअली तथा प्रोफ़ेसर जौहरी को खिड़की में से झाँकता हुआ देखेंगे।

ज़ोहरा ने आँसू पोंछ लिए। कहा—अम्माँ! तुम उन्हें बेवक़ूफ़ न कहा करो! वह काफ़ी अक़्लमन्द हैं। वह भी जानते हैं कि सरकार हमारे कामों से नाराज़ होती है, पर मुल्क के करोड़ों ग़रीबों की हालत देख कर, लाखों लोगों के दिलों में जो आग लग गई है, वही आग उनके कलेजे को भी जला रही है। फिर वह सरकार से लड़ते कहाँ हैं? केवल लोगों से यही कहते हैं, कि अपने मुल्क का बना कपड़ा पहनो, अपने मुल्क की बनी चीज़ें काम में लाओ, नशीली चीज़ों से नफ़रत करो।

ज़ोहरा का चेहरा चमक उठा। आवाज़ में तेज़ी आ गई।

बुढ़िया चमक उठी। बोली—तभी वह इतना बेहाथ हो गया है। जब तू ख़ुद इन बातों को अच्छा समझती है, तब रोती क्यों है? अगर तू इन बातों को बुरा समझती, इन बातों से नफ़रत करती, तो मेरा रौशन कभी इन ख़ुराफ़ाती बातों में न पड़ता!

"अम्माँ! तुम मुल्क की ख़िदमत को ख़ुराफ़ात समझती हो—यह तुम्हारी ग़लती है।"

ज़ोहरा के कण्ठ में कम्पन और ओज था।

अभी इन लोगों में यह बातें हो ही रही थीं, कि हाँफते-हाँफते कल्लू वहाँ आ पहुँचा। वह घबराया हुआ था, आते ही बोला—हुज़ूर! ग़ज़ब हो गया! पुलिस सरकार को गिरफ़्तार कर ले गई। हज़ारों आदमी उनकी जय बोलते हुए, उनके पीछे गए हैं।

ज़ोहरा पर बिजली गिर पड़ी। वह एक चीख़ मार कर बेहोश हो गई।

*   *   *

सवेरा हुआ। शहर में ज़बर्दस्त हड़ताल थी। कुछ दिन चढ़ते ही हाई-स्कूल पर पिकेटिङ्ग करने की तैयारियाँ होने लगीं। नौ बजते-बजते एक विशाल दल हाई-स्कूल की ओर चल पड़ा। आगे-आगे राष्ट्रीय झण्डा लिए हुए बालिकाएँ और महिलाएँ थीं, उनके पीछे स्वयंसेवक और विद्यार्थी थे तथा उनके पीछे उत्तेजित तमाशबीनों की एक बहुत बड़ी भीड़ चल रही थी।

मौलवी साहब का मकान रास्ते में ही पड़ता था। महिलाओं और स्वयंसेवकों की राय हुई, कि मौलवी साहब की बेगम साहबा को बधाई देनी चाहिए। बस, उनके मकान के सामने पहुँचते ही राष्ट्रीय आत्माओं का वह वीर दल रुक गया। विजय-ध्वनि से रह-रह कर आसमान काँपने लगा।

ज़ोहरा उस समय उदास बैठी थी। कोलाहल सुन कर उन्होंने हमीदन से कहा—अम्माँ, ज़रा बाहर जाकर तो देखो, यह कैसा शोरो-ग़ुल है।

हमीदन ने ज्योंही किवाड़ खोले, त्योंही घोर विजय-ध्वनि के साथ आँगन महिलाओं, स्वयंसेवकों और विद्यार्थियों से भर गया! तेज़ मुस्कुराहट के साथ ज़ोहरा के चेहरे का एक-एक अणु उद्दीप्त होने लगा। वह आगत महिलाओं के स्वागतार्थ उठ कर खड़ी हो गई। दूसरे ही क्षण असंख्य पुष्प-वर्षा नगर के हृदय की ओर से उनका स्वागत कर रही थी। एक भद्र-महिला ने आगे बढ़ कर और हाथ जोड़ कर ज़ोहरा से कहा—आपके ज़रिए हमारे नगर ने नई ज़िन्दगी पाई है। आपके ज़रिए हमारे नगर की गौरव-वृद्धि हुई है। हम आपको किस मुँह से धन्यवाद दें, किस मुँह से आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करें। आपके दुःख में हमारा हृदय आपके साथ है।

ज़ोहरा ने मुस्कुरा कर कहा—इसमें अफ़सोस की क्या बात! शुक्रिया अदा करने की भी ज़रूरत नहीं। मुल्क के ख़ातिर इन्सान का जो फ़र्ज़ होना चाहिए, वही उन्होंने अदा किया है।

हमीदन एक ओर खड़ी-खड़ी बड़बड़ा रही थी। उसकी समझ में नहीं आता था, कि यह सब क्या हो रहा है। इसी समय स्वयंसेवकों की ओर से आवाज़ आई—"हम भी अपनी माता का दर्शन करेंगे।" ज़ोहरा ने महिलाओं से कहा—"आप लोग मिहरबानी कर उन लोगों को आगे आने दीजिए।"

हमीदन का मुँह तमतमा उठा। वह बिगड़ कर बोली—"तेरे सामने ग़ैर-मर्द आएँगे?" ज़ोहरा ने मुस्कुरा कर कहा—"नहीं, वह मेरे बच्चे हैं। बच्चों के सामने..."

ज़ोहरा की बात अभी पूरी भी न होने पाई थी, कि बीसों स्वयंसेवक और विद्यार्थी 'माता की जय' करते हुए ज़ोहरा के चरणों में लेट गए। ज़ोहरा के नेत्रों से आँसू बहने लगे, जैसे हृदय की समस्त शुभ्र आकांक्षाएँ आशीर्वाद-रूप से उन बच्चों पर बरस पड़ीं। स्वयंसेवकों ने हाथ जोड़ कर कहा—"माँ, तुम्हारा आशीर्वाद पाकर, हमारा बल सौगुना बढ़ गया है। अब हम लोगों को ऐसा आशीर्वाद और दो, कि हम भी अपने पूज्य मौलवी साहब का अनुकरण कर सकें।"

ज़ोहरा ने हमीदन से कहा—"अम्माँ! तुम बच्चों को सँभाले रहना, मैं इन लड़कों के साथ जाऊँगी।" हमीदन रोकर बोली—"बेटी, तुझे क्या हो गया है! क्या तू पर्दा तोड़ कर बाहर जाएगी? या ख़ुदा! यह कहाँ का क़हर तूने हम ग़रीबों पर पटक दिया!"

ज़ोहरा के नेत्रों से भी अश्रुधारा बहने लगी। उन्होंने हमीदन को जवाब दिया—अम्माँ! रोओ नहीं! आज मुझ पर ही नहीं, सारे मुल्क पर यह ख़ुदाई क़हर बरस रहा है। वह अपने भाइयों को नसीहत की बातें सिखलाने के क़ुसूर में चोर-डाकुओं की नाईं पकड़ लिए गए हैं। वही मेरी इज़्ज़त और अस्मत हैं। जब वही मुझसे छीन लिए गए, तब मेरा पर्दा कहाँ रहा? जब शरीफ़ज़ादे जेलों में जा रहे हैं, तब शरीफ़ज़ादियाँ कैसे पर्दे में रह सकती हैं?

इसके बाद ज़ोहरा एक राष्ट्रीय झण्डा लेकर बाहर निकल गई। संसार में कितनी अस्थिरता है। अस्थिरता परिवर्तन की जननी और परिवर्तन नव-जीवन का उत्पादक है, इसमें भला कौन सन्देह करेगा?

*   *   *

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर



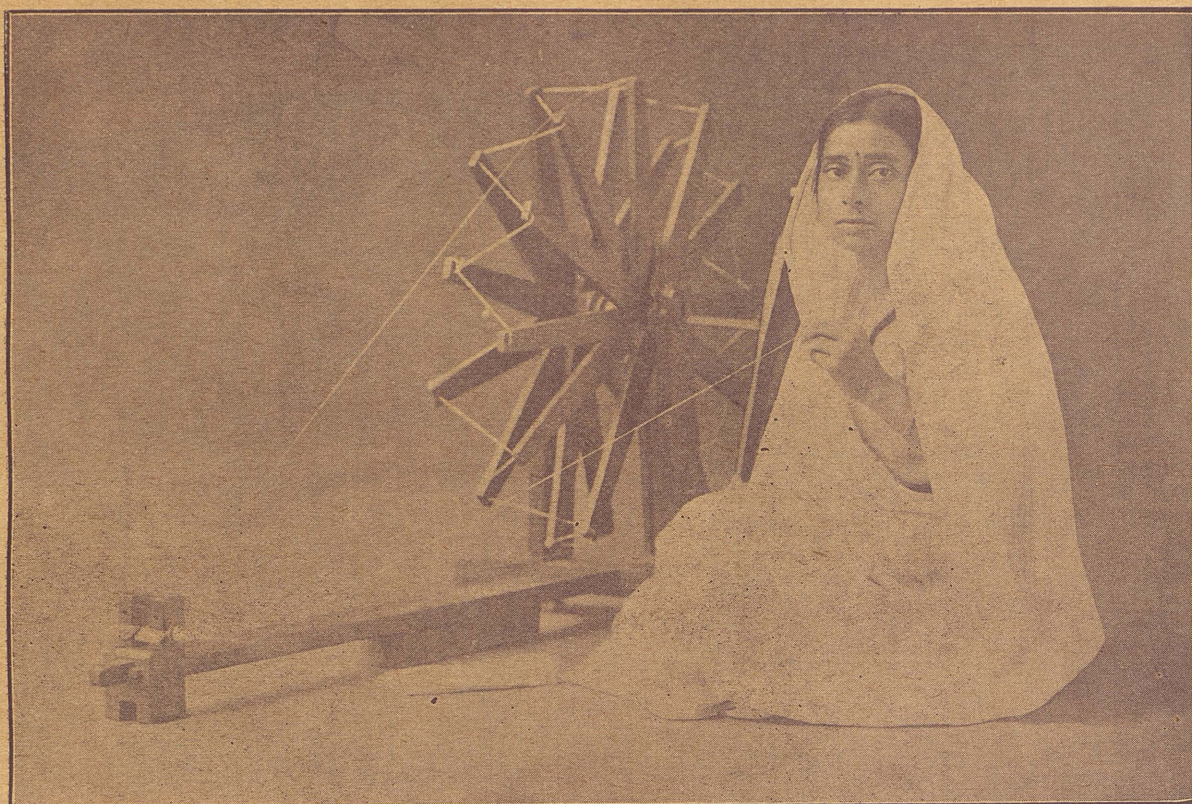
वर्धा के ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री—श्री० बलवन्त-राव पिञ्जारकर, जो हाल ही में ४ मास का कठिन कारावास-दण्ड भुगत कर छूटे हैं।



बगलकोट (करनाटक) स्त्री-सेविका-सङ्घ की नेत्री—कुमारी सीताबाई बलबल्ली, जो हाल ही में राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के कारण गिरफ़्तार हुई हैं।

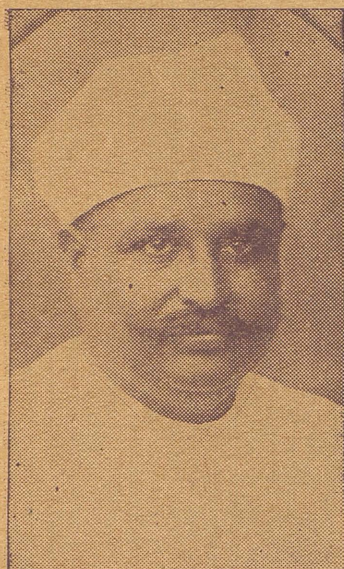


कराद (सूरत) के ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रधान—श्री० पन्दुअन्ना शिरालकर, जिनकी गिरफ़्तारी बम्बई-हाईकोर्ट ने क़ानून के विरुद्ध बतलाया था, आप हाल ही में जेल से रिहा हुए हैं।



श्रीमती रानी विद्यादेवी

(आपका विस्तृत परिचय अन्यत्र देखिए)

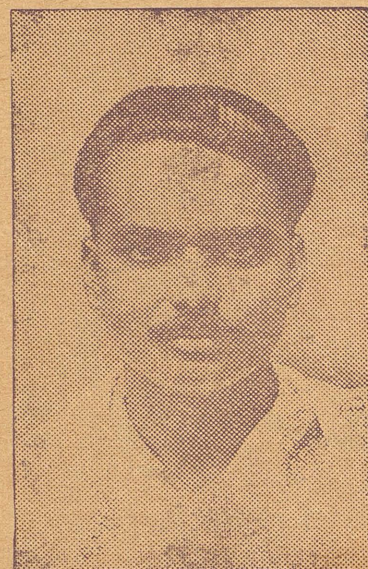


कोयम्बटूर कॉङ्ग्रेस कमिटी के 'डिक्टेटर'—श्री० वेलप्पा नायडू, जो हाल ही में पकड़े गए हैं।



कराची की 'डिक्टेटर'

श्रीमती कीकीबेन छबीलदास

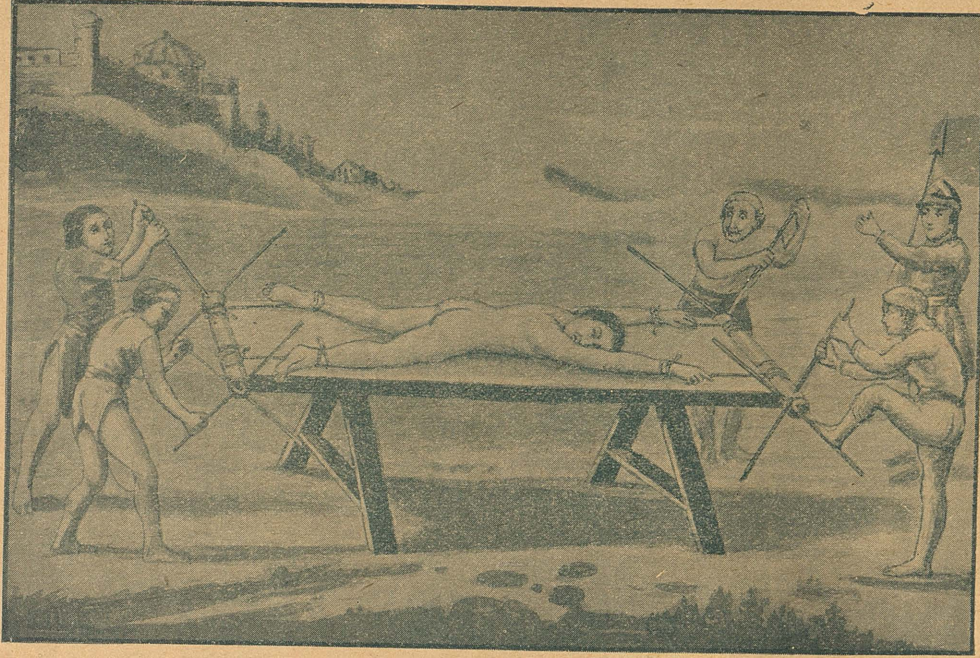


श्री० सी० ए० अय्यामूथू

आप दक्षिण-भारत में स्वदेशी का प्रचार कर रहे हैं।

सभ्यता, शान्ति और क़ानून के नाम पर

[विस्तृत परिचय नम्बर के हिसाब से



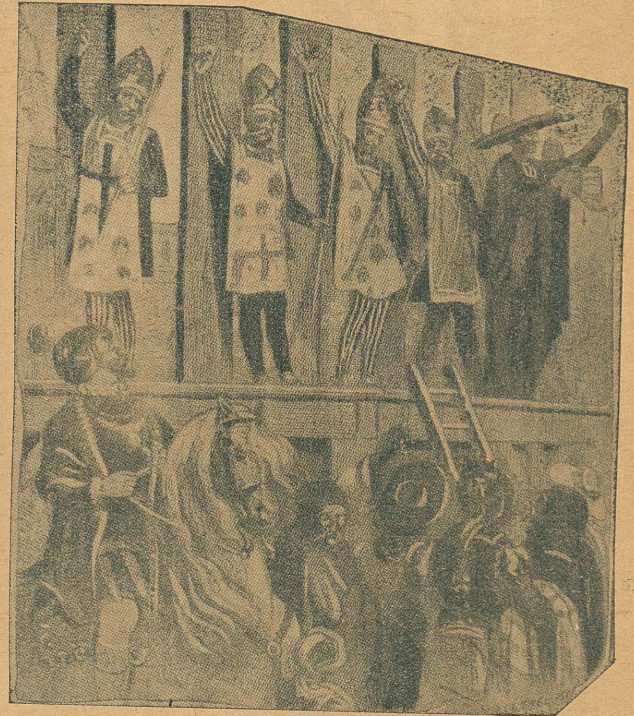
चित्र-नम्बर ८



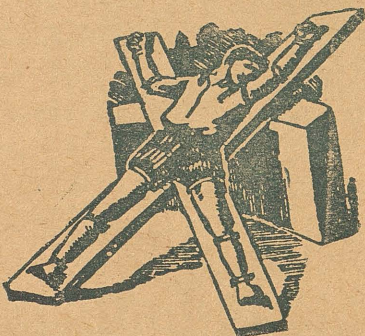
चित्र-नम्बर १४



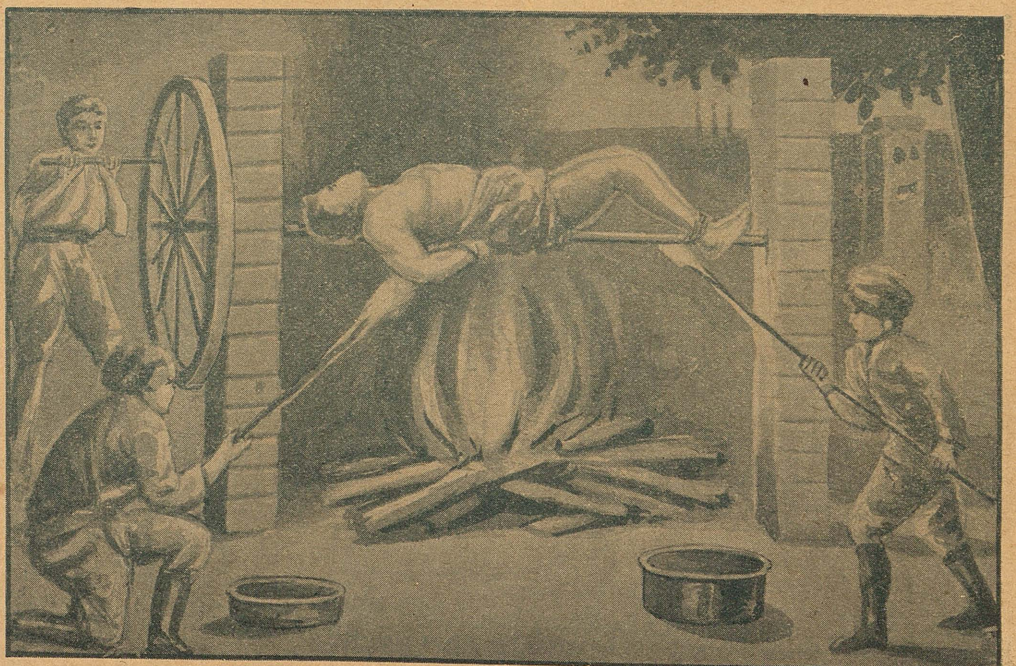
चित्र-नम्बर ५



चित्र-नम्बर १०



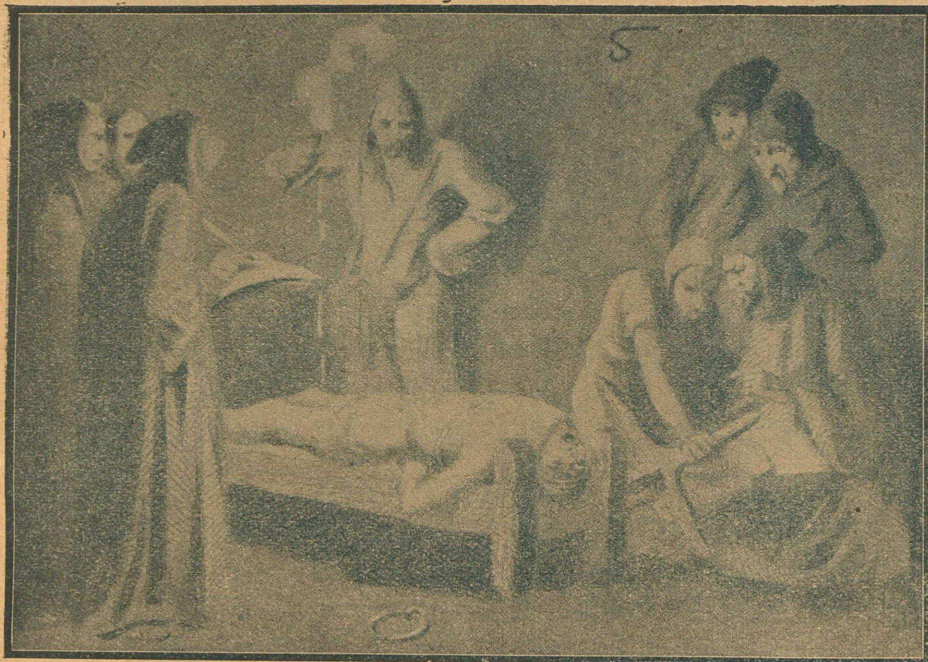
चित्र-नम्बर ११



चित्र-नम्बर ६

विभिन्न देशों में प्राण-दण्ड के भिन्न-भिन्न तरीक़े

अन्यत्र प्रकाशित लेख में देखिए]



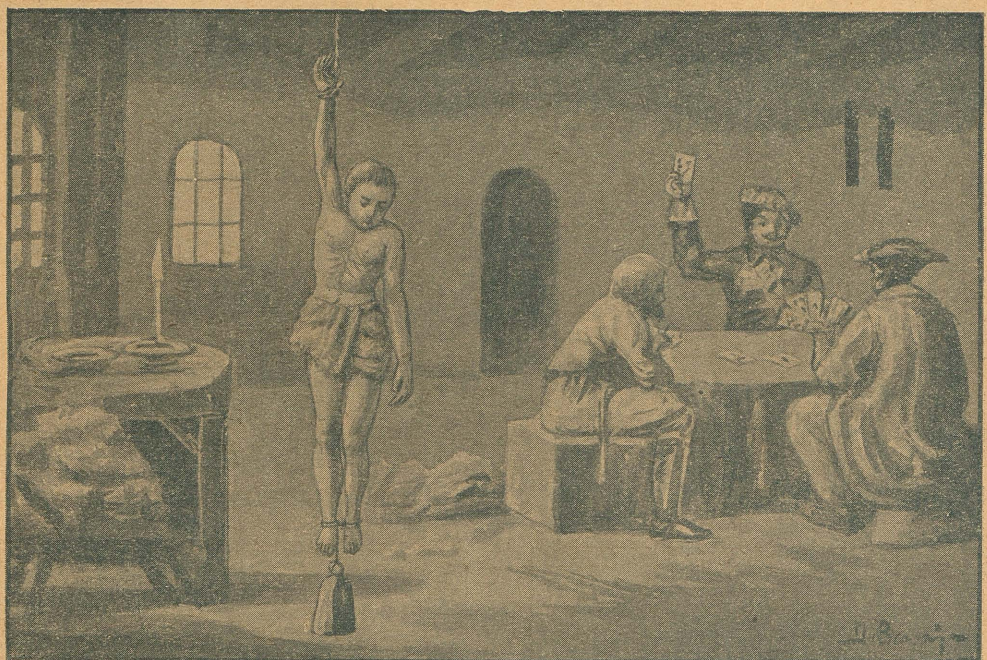
चित्र-नम्बर १२



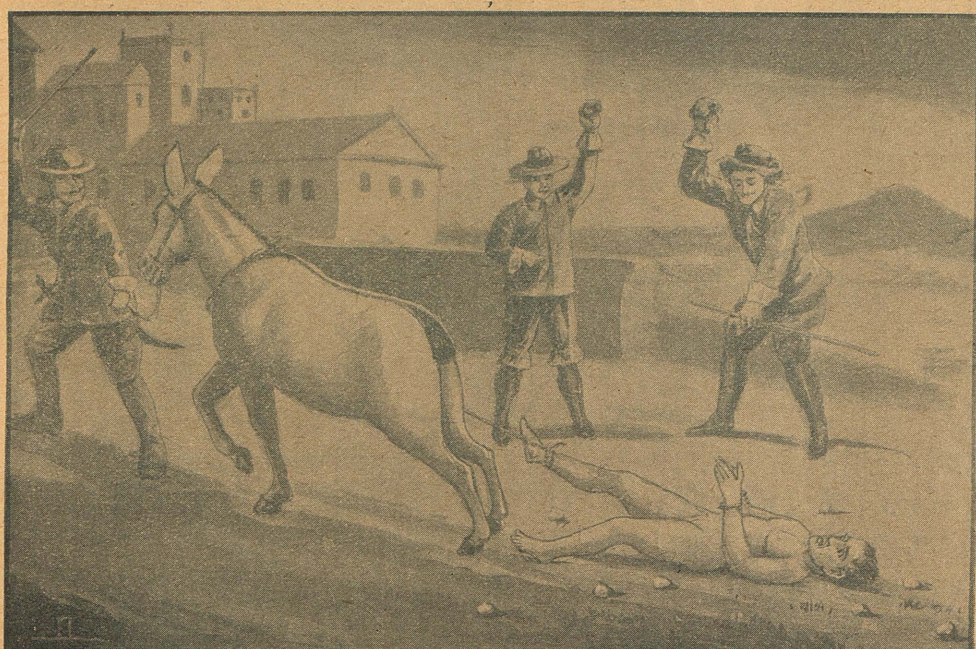
चित्र-नम्बर २



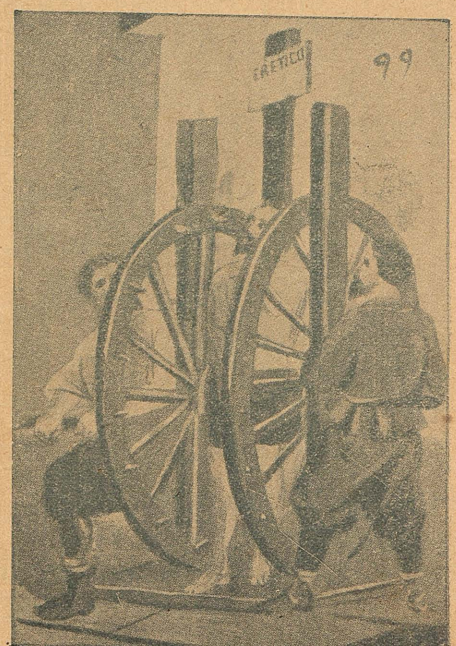
चित्र-नम्बर १३



चित्र-नम्बर १



चित्र-नम्बर ६



चित्र-नम्बर ७

लखनऊ-स्कूल के कुछ प्रतिभाशाली कवि



मौलाना "हसरत" मोहानी

नहीं आती, तो याद उनकी महीनों तक नहीं आती,
मगर जब याद आते हैं, तो अक्सर याद आते हैं !
कौन उस निगहे-नाज़ के क़ाबू में नहीं है,
फिर दिल की ख़ता क्या ? जो पहलू में नहीं है !

बैठे हैं उन पे सब निसार किए;
दिल से कुछ काम है, न जी से ग़रज़ !
कुछ नहीं जानते वफ़ा व जफ़ा !
जिनको है आपकी ख़ुशी से ग़रज़ !

—"हसरत"

एक ज़माना सुन रहा है, फिर 'कोई' सुनता नहीं,
किस क़दर ख़ामोश है, दुनिया मेरे फ़रयाद की !
दिल का हर एक ज़र्रा है, आलमे-इन्तशार में,
जाना पड़ा कहाँ-कहाँ आरके इन्तज़ार में !

—"बहार" लखनवी



जनाब "बहार" लखनवी

वतन का ज़र्रा-ज़र्रा
जाने वालों से यह कहता है
जहाँ तक देख सकते हो,
ठहर कर देखते जाओ !

—"शौकत" थानवी



जनाब "शौकत" थानवी

जिगर में दर्द है, और
दर्द में है एक कशिश-पिनहा
खिंचे आते हैं दोनों हाथ—
दिल पर, देखते जाओ !!

—"शौकत" थानवी



जनाब "वस्ल" लखनवी

हाय जवानी दीवानी कैसी ज़ालिम होती है,
जाकर दुख दे जाती है, आकर काँटे बोती है !
मेरी तुम्हारी हालत में, फ़र्क़ इतना है ग़ौर करो !!
तुम पर दुनिया हँसती है, मुझको दुनिया रोती है !!

—"वस्ल" लखनवी



हज़रत "रयाज़" ख़ैराबादी

लौ दिल का दाग़ दे उठे, ऐसा न कीजिए;
है डर की बात, आइना देखा न कीजिए !
वह क्या हमसे ऐसी बुराई हुई है !
कि दुश्मन हमारी ख़ुदाई हुई है ?

—"रयाज़" ख़ैराबादी



जनाब "अज़ीज़" लखनवी

कोई दुनिया की क़ूवत अब मिटा सकती नहीं तुझको;
ज़मीने-दिल ! तुझे हम इस तरह आबाद करते हैं !
मर गया बीमारे-उल्फ़त उनसे इतना कह के बस—
जाइए, अब आपसे कोई गिला बाक़ी नहीं !!

—"अज़ीज़" लखनवी

केसर की क्यारी

साक़ी तो मुझको चाट लगा कर अलग हुआ, धो-धो के पी रहा हूँ प्याला शराब का !
पीरी में सब को रञ्ज हुआ इनक़िलाब का, मैंने किया शबाब में मातम शबाब का !

चरचा है उनके घर में मेरे इज़तिराब[1] का,
देखा सलूक़ इस दिले ख़ाना-ख़राब का !
यह बात है बहारे-चमन ही के वास्ते,
आता नहीं पलट के, ज़माना शबाब का !
साक़ी तो मुझको चाट लगा कर अलग हुआ,
धो-धो के पी रहा हूँ, प्याला शराब का !
मैं एक सवाल करके, पशेमान[2] हो गया,
लच्छा बँधा हुआ है हज़ारों जवाब का !
उट्ठा है ख़्वाबे-नाज़ से, कोई जो दिन-चढ़े,
चमका हुआ है आज नसीब आफ़ताब का !
रोज़ा रखें, निमाज़ पढ़ें, हज अदा करें;
अल्लाह ! यह सवाब भी है, किस अज़ाब का !
जब मैं करूँ सवाल तो, कहते हैं चुप रहो !
क्या बात है ? जवाब नहीं इस जवाब का !
ख़ुशबू वही, वही है नज़ाकत, वही है रङ्ग,
माशूक़ क्या है, फूल है तू भी गुलाब का !

—महाकवि "दाग़" देहलवी

पीरी[3] में सब को रञ्ज हुआ इनक़िलाब[4] का,
मैंने किया शबाब में मातम शबाब[5] का !
इतने गुनाह मैंने किए, इस ख़याल से,
लेना था जायज़ा करमे बे-हिसाब का !
दुनिया से बे-सबातिए[6] दुनिया को पूछिए,
सुनिए ज़बाने मौज[7] से, क़िस्सा हबाब[8] का !

—"नूह" नारवी

मैं और जलवागाह तेरी ऐ ख़ुशनसीब[9] !
ज़र्रे को आज रुतबा मिला, आफ़ताब का !
आलम में हम तो वक़्फ़े ग़मोयास ही रहे,
चरचा बहुत सुना किए, गो इनक़िलाब का !

—"महरूम" लाहौरी

वायज़[10] दिखा रहा है, यह जन्नत का डर किसे ?
आलम मेरी नज़र में है, दौरे-शबाब का !
है अब पयामे[11] मौत की हर वक़्त आरज़ू,
हर ज़र्रा मुन्तिज़र[12] है मेरा, इनक़िलाब का !

—"शर्मा" माछारवी

१—बेचैनी २—लज्जा ३—बुढ़ापा ४—परिवर्तन ५—जवानी ६—न ठहरने वाला ७—लहर ८—पानी का बुलबुला ९—अच्छी क़िस्मत वाला १०—नसीहत करने वाला ११—सन्देश १२—राह जोहना।

मैं, और मेरे हाथ में साग़र शराब का,
कितना बड़ा सबूत है, यह इनक़िलाब का !
बदले न बदले रङ्गे-सितम वह जफ़ाशआर[13],
रुकना मुहाल[14] है, मगर अब इनक़िलाब का !

—"आज़ार" जालन्धरी

सोज़े शबे फ़िराक़ है, आलम अज़ाब का,
दोज़ख़ है एक नाम, मेरे इज़तिराब का !
कहते हैं वह शिकायते दर्दे-फ़िराक़ पर,
क्यों सब्र नाम रखते नहीं, इज़तिराब का !

—"अरमान" देहलवी

तसवीर उनकी सारे मुरक़्क़े[15] की जान है,
गोया चमन में फूल खिला है गुलाब का !
मुद्दत हुई, वही है ज़माने का इनक़िलाब,
नक़शा खिंचा हुआ है, मेरे इज़तिराब का !
सहने-चमन में ज़ब्ह न कर अन्दलीब[16] को,
ऐ बाग़बान ख़ून है, हलका गुलाब का !

—"जलील" मानिकपुरी

आज़ादियों की [17]दह्र में अल्लाह रे धूम-धाम !
फीका है रङ्ग सर्व के आगे गुलाब का !!

—"मुनौअर" लखनवी

सुनता हूँ, आज ग़ैब से आवाज़े-इनक़िलाब,
लेता हूँ ज़र्रे-ज़र्रे से [18]दर्स इनक़िलाब का !
मुझको नहीं है ख़ौफ़ ज़रा उनकी ज़ात से,
और उनको डर नहीं, ज़रा रोज़े-[19]हिसाब का !

—"दीनानाथ" लाहौरी

पीरी को है क़याम, कि आकर न जायगी,
था इनक़िलाब के लिए, आलम शबाब का !

—"अमरसिंह" लाहौरी

तेरी सितमगरी, मेरी मज़लूमे-बेकसी,
दोनों बनेंगी मिल के वजूद इनक़िलाब का !

—"अज़हर" अमृतसरी

पिनहाँ[20] नज़र, नज़र में है रङ्ग इनक़िलाब का,
नक़शा बदल गया है, जहाने-ख़राब का !

—"रौनक़" देहलवी

१३—ज़ालिम १४—मुशकिल १५—साँचा १६—बुलबुल १७—संसार १८—सबक़ १९—क़यामत का दिन २०—छुपा हुआ।

फन्दे में है [21]नसीम के जोशे बहारे-गुल,
पकड़ा गया है, चोर किसी के शबाब का !

—"क़ैसीम" बुलन्दशहरी

पुर-जोश गो बहुत था, ज़माना शबाब का,
लेकिन खुला यह अब, कि फ़िसाना था ख़्वाब का !
ऐ [22]अब्र माहताब को परदे में ढाँक ले,
जलता है [23]मैकदे में चराग़ आफ़ताब का !

—"अज़हर" लाहौरी

ऐ आफ़ताब अपनी [24]शुआओं को थाम ले,
मैं तो जला हुआ हूँ, किसी आफ़ताब का !

—"अख़्तर" देहलवी

कहता है रङ्ग फूट के जोशे-शबाब का,
ज़ेरे नक़ाब फूल खिला है गुलाब का !
तसकीन से, जिगर की तड़प और बढ़ गई,
सच है, कोई इलाज नहीं इज़तिराब का !
छेड़ेंगे उनको दावरे [25]महशर के सामने,
कुछ देर लुत्फ़ होगा, सवालो-जवाब का !

—"जोश" मुज़फ़्फ़रपुरी

क़ुदरत के कारख़ाने में दख़ले-सबब नहीं,
बे-तेल जल रहा है, चराग़ आफ़ताब का !

—"तसलीम" लखनवी

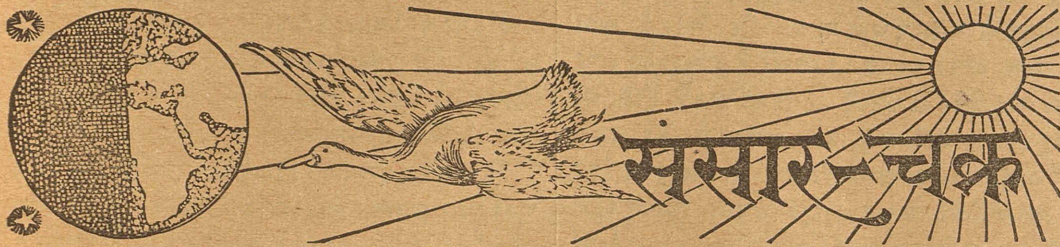
दिल ख़ूँ है, हिज्रे-यार में रङ्गा है, ज़ख़्म-ज़ख़्म,
[26]मायूसियों में रङ्ग भरा है शबाब का !

—"शैदा" देहलवी

झगड़ा लगाया उसने सवालो-जवाब का,
आलम बदल गया, दिले-नाकामयाब का !
साक़ी मनाऊँ मैं भी, तेरे मैकदे की ख़ैर,
मिल जाय, मुझको एक प्याला शराब का !
तारे करेंगे क्या रुख़े-रौशन से [27]सरकशी,
झुकता है तेरे सामने, सर आफ़ताब का !
उम्मीद पर जो [28]यास मेरी ग़ालिब आ गई,
नक़शा बदल गया, दिले पुर इज़तिराब का !
मशहूर हूँ जहान में "बिस्मिल" के [29]नाम से,
कुशता हूँ मैं किसी निगहे-बर्क़ताब का !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

२१—हवा २२—बादल २३—शराबख़ाना २४—किरनें २५—प्रलय २६—निराशाएँ २७—सर उठाना २८—निराशा २९—बिजली की-सी चमक।



ईरान का स्वाधीनता-संग्राम

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

ज़मीने-चमन गुल खिलाती है क्या-क्या, बदलता है रङ्ग आसमाँ कैसे-कैसे !
न गोरे सिकन्दर, न है क़ब्रे दारा, मिटे नामियों के निशाँ कैसे-कैसे !!

संसार-चक्र के उलट-फेर तथा उत्थान और पतन के करिश्मे ईरान ने भी ख़ूब ही देखे हैं। एक दिन वह संसार का सभ्य-शिरोमणि देश था। उसके डङ्के से ज़मीन-आसमान गूँज उठते थे। भारत से लेकर एशिया के अन्तिम छोर तक ईरान की सभ्यता की धाक थी। न्याय-निपुण ख़लीफ़ा हारूँरसीद की जन्मभूमि होने का गौरव उसे प्राप्त था। वहीं वह क़ारूँ पैदा हुआ था, जो दक्षराज कुबेर की तरह धनवान था और जिसके ख़ज़ाने की चाबियाँ, कहते हैं, हज़ारों (?) ऊँटों पर लदा करती थीं। ईरान की सभ्यता का इतिहास, उसका प्राचीन साहित्य, महाकवि हाकिम, फ़िरदौसी, शेख़-सादी और उमर ख़य्याम का ललित काव्य-सौरभ आज भी साहित्यिकों तथा इतिहास-प्रेमियों के दिलों में अपूर्व आनन्द का सञ्चार कर देता है। ईरान के गुलो-बुलबुल की हृदयग्राहिनी कहानी, बुतों की बेनियाज़िया, लैला और मजनूँ की प्रेम-कथा, ज़ुलेख़ा के इश्क़ की दास्तान ; ईरान की अलौकिक सौन्दर्य-सम्पदा, उसकी शिक्षा-दीक्षा, धर्म और शिल्प-वाणिज्य का इतिहास आज भी हमें आश्चर्य-चकित कर डालता है। ईरान उस समय सभ्य और स्वतन्त्र था। वे ईरान के उत्थान के दिन थे।

इसके बाद पतन के दिन आए। ईरान की वह प्राचीन शोभा-सम्पद काल के गाल में समा गई। उसका समस्त विभव, शिल्प-वाणिज्य, और कला-कौशल नष्ट-भ्रष्ट हो गया। भारत की तरह वह भी पाश्चात्य सभ्यता का शिकार बन कर अपना सब कुछ खो बैठा ! इतने में रज़ाख़ाँ पहलवी का जन्म हुआ और उसने अपने अध्यवसाय और परिश्रम से ईरान की रक्षा की।

कहते हैं, किसी समय ईरान में 'ईरज' और 'तूरज' नाम के दो राजे रहते थे और अपने नामों के अनुसार इन्होंने 'ईरान' और 'तूरान' नाम के दो राज्यों की स्थापना की थी। परन्तु कुछ इतिहासकार कहते हैं कि 'आर्य' शब्द से भी ईरान का सम्बन्ध है। बादशाह होशङ्ग के पुत्र 'पारस' के नाम से इसका दूसरा नाम 'फ़ारिस' भी पड़ गया। अस्तु।

ईरान के उत्तर की ओर कास्पियन सागर, पश्चिम में तुर्किस्तान, दक्षिण में उमान और फ़ारिस की खाड़ियाँ हैं, पूर्व में बिलोचिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान तथा पश्चिम में एशियाई रूम हैं। कुछ दिन पहले गुर्जिस्तान, आर्मीनिया और कुर्दिस्तान के कुछ हिस्से भी ईरान में शामिल थे, परन्तु आजकल उससे अलग हो गए हैं। ईरान की भूमि उपजाऊ है। समस्त देश की पञ्चमांश भूमि पर खेती-बारी होती है। सिंचाई के काम के लिए नहरें हैं, जिन्हें वहाँ वाले 'फ़ताल' कहते हैं। ख़रबूज़े और अङ्गूर यहाँ ख़ूब होते हैं। यहाँ की खानों से फ़ीरोज़ा, गन्धक और नमक निकलता है। ईरान के कई पर्वतों से शिलाजीत की तरह एक प्रकार का तेल टपकता है, जिसे 'मोमयाई' कहते हैं। यह शिलाजीत ही की तरह कई रोगों की दवा है। बूशहर के पास मिट्टी के तेल का भी स्रोत है। तेहरान ईरान की राजधानी और प्रधान नगर है। प्राचीन काल में स्फ़हाम यहाँ का प्रसिद्ध नगर और राजधानी था। हमदाम हकीम बूअली सीना की, तूस फ़िरदौसी की, शीराज़ शेख़-सादी की और बूशहर प्रसिद्ध ईरानी पहलवान रुस्तम की जन्मभूमि है। यज़्द में आज भी अग्निपूजक पारसी मौजूद हैं। मशहद शीया मुसलमानों का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है। उस्तख़र के खँडहरों में एक मकान है, जिसे 'तख़्ते-जमशेद' कहते हैं। इसका दूसरा नाम 'चेहल-मीनार' भी है। यहाँ सङ्गमर्मर पर खुदाई का काम बहुत बढ़िया बना है। कहते हैं, एक बार शराब के नशे में सिकन्दर ने इसे फुँकवा दिया था, नहीं तो इसकी शोभा आज भी अपूर्व होती। ईरान में प्रधानतः ईरानी, तुर्क, यहूदी, कुर्द, अर्मन और तुर्कमान जाति के लोगों का निवास है। इस्लाम-धर्म के प्रभुत्व-विस्तार से पहले ईरानियों का वेश, भाषा और सभ्यता भी आर्यों के समान थी। वे पुरानी लिपि भी हमारी देवनागरी के समान ही है।

ईसा के पूर्व छठीं शताब्दी में ईरान एसिरियनों के अधीन था। उस समय यहाँ एक वीर पुरुष का आविर्भाव हुआ। उसका नाम 'साइरस' था।

साइरस स्वदेश-प्रेमी था। देश की पराधीनता उसे अच्छी नहीं लगती थी। उसने अपने देशवासियों को जाग्रत किया। परन्तु उसे सफलता नहीं प्राप्त हुई। देश अविद्या के अन्धकार में भटक रहा था। स्वतन्त्रता का महत्त्व हृदयङ्गम करना उसके लिए मुश्किल था। इधर साइरस भी उन्हें खुल्लमखुल्ला राजद्रोह के लिए उभाड़ नहीं सकता था, इसलिए राजा एस्टिया, जिसके हाथ उसने अपने को बेंच दिया—उसका ज़रख़रीद ग़ुलाम बन गया।

एस्टिया के राज-दरबार में रह कर साइरस ने बड़े मनोयोग के साथ विदेशियों की रीति-नीति तथा उनकी सभ्यता का अध्ययन किया, साथ ही उनकी भीतरी कमज़ोरियों का भी अनुभव किया। इसके बाद उनके धनबल, बाहुबल और नीति-ज्ञान का भी पता लगाया। इसके साथ ही राजद्रोह और देशभक्ति का भी प्रचार आरम्भ कर दिया। राज-दरबार का आदमी होने के कारण किसी को उसकी नीयत पर सन्देह करने का मौक़ा नहीं मिलता था। राज-दरबार में भी उसका यथेष्ट सम्मान था। राजा स्वयं उसे अपना शुभचिन्तक समझते थे। अगर कोई राज-कर्मचारी उस पर सन्देह करता और उसकी शिकायत राजा के कानों तक पहुँच जाती, तो वह उन्हें समझा देता कि मैं जो कुछ करता हूँ, केवल राज्य की भलाई के लिए ही करता हूँ। राजा को उसकी बातों पर विश्वास हो जाता और शिकायत करने वाले को मुँह की खानी पड़ जाती।

अन्त में एक दिन भीषण दावानल की भाँति राज-द्रोह की आग सारे देश में फैल गई। सुअवसर देख कर वीर साइरस ने खुल्लमखुल्ला राजद्रोह का झण्डा ऊँचा कर दिया। राजशक्ति ने विद्रोहियों को कुचल डालने की ख़ूब चेष्टाएँ कीं। हज़ारों देशभक्त शूली पर चढ़ा दिए गए। हज़ारों निर्दोष-निरीह कुपित राजसत्ता के शिकार बन गए। परन्तु अन्त में विजय-श्री राजद्रोहियों को प्राप्त हुई। वीरवर साइरस के स्वयं-सेवकों ने विदेशियों को मार भगाया। साइरस ने स्वाधीनता की घोषणा की। उसका आत्मत्याग सार्थक हुआ।

इसके बाद इस्लाम-धर्म के उत्थान तक किसी विदेशी शक्ति ने ईरान की ओर नज़र नहीं उठाया। अन्त में हज़रत मुहम्मद का आविर्भाव हुआ। अरबों ने ईरान पर चढ़ाई कर दी। ईरान की धार्मिक स्वतन्त्रता सदा के लिए छिन गई। उसे वाध्य होकर इस्लाम-धर्म स्वीकार करना पड़ा। अग्नि-पूजकों को मुसलमान बनाने के लिए उन पर भीषण अत्याचार हुए। धर्म और ईश्वर के नाम पर ख़ून की नदियाँ बह गईं। परम दयालु, समदर्शी (!!!) अल्लाहताला के हुक्म से 'काफ़िरों' के रक्त से धरित्री का आँचल लाल हो गया ! जान जाने के भय से ईरानियों ने अपना पैतृक धर्म छोड़ कर इस्लाम के रक्त-रञ्जित दामन में पनाह ली और कुछ कट्टर धर्मभीरु अपनी प्यारी जन्मभूमि को सदा के लिए 'अलविदा' कह कर भारत की शरण में चले आए ! तब से आज तक ईरान पर इस्लाम का अखण्ड प्रताप मौजूद है। इस्लाम ने उसकी सूरत ही बदल दी। ईरान का आर्यत्व और उसकी प्राचीन गौरव-गरिमा केवल इतिहास की सामग्री रह गई है।

विगत अट्ठारहवीं शताब्दी के अन्त में यूरोपियन जातियों ने ईरान को अपना राजनीतिक क्रीड़ा-क्षेत्र बनाया, साथ-साथ भौगोलिक अवस्थान के कारण उसका महत्त्व भी अधिक बढ़ गया। इसलिए एक साथ ही कई यूरोपियन जातियों की लोलुप दृष्टि ईरान पर पड़ी। जिस समय का ज़िक्र हम कर रहे हैं, उस समय ईरान के तख़्त पर फ़तहअली शाह नाम का एक बादशाह था। राजनीतिक अपटुता के कारण उसे गोरों के हाथ का खिलौना बन जाना पड़ा। गोरों के पारस्परिक स्वार्थ-सङ्घर्ष के कारण ईरान की अवस्था बड़ी ही विचित्र हो गई। इतिहास-पण्डितों का कथन है कि दूरदर्शी सम्राट नेपोलियन की साम्राज्य-गठन प्रतिभा के कारण ही पाश्चात्य जातियों की दृष्टि में ईरान का महत्त्व बढ़ गया। नेपोलियन की इच्छा, ब्रिटिश साम्राज्य की प्रधान शक्ति भारत को हस्तगत करने की थी, इसलिए वह अफ़ग़ानिस्तान के अमीर को भारत पर चढ़ाई करने के लिए उत्तेजित करने लगा। ठीक उसी समय लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह तथा कतिपय हिन्दू-नरेश अफ़ग़ानिस्तान से मिल कर अङ्गरेज़ों के विरुद्ध साज़िश करने में लगे थे। चतुर अङ्गरेज़ इस साज़िश का हाल जान गए और, इसे विफल कर डालने की इच्छा से उनके ईरानी रेज़ीडेण्ट ने फ़तहअली शाह को अफ़ग़ानिस्तान के ख़िलाफ़ उभाड़ा। साथ ही शाह से प्रतिज्ञा करा ली गई कि फ़्रान्स को ईरान से दूर ही रखना होगा, अफ़ग़ानिस्तान और ईरान में मित्रता न हो सकेगी और ब्रिटिश वाणिज्य के लिए ईरान में काफ़ी सुविधा कर दी जाएगी।

शाह ने अङ्गरेज़ों की उपर्युक्त शर्तें स्वीकार कर लीं। परन्तु अधिक दिनों तक उनका निर्वाह न कर सके। सन् १८०४ में, जार्जिका नामक स्थान के लिए ईरान और रूस में झगड़ा छिड़ा तो अङ्गरेज़ तटस्थ रहे, परन्तु फ़्रान्स ने शाह की सहायता की। इसलिए वह अङ्गरेज़ों

को छोड़ कर फ़ान्स के मित्र बन गए। सन् १८०७ में फ़ान्स और ईरान में एक सन्धि हुई। निश्चय हुआ कि फ़ान्स और ईरान मिल कर रूस का विरोध करेंगे। फ़ान्स के एक रण-पण्डित महोदय ईरानी सिपाहियों को सामरिक शिक्षा प्रदान करने के लिए ईरान आए। इसी समय से ईरान के राजनीतिक रङ्ग-मञ्च पर नित्य नए पट-परिवर्त्तन होने लगे। यूरोपियनों ने ईरानियों के दिलों में कितनी ही नवीन आशाओं का सञ्चार किया। इस समय ईरान की विचित्र दशा थी, वह अपने को भूल कर सम्पूर्ण रूप से यूरोपियनों के हाथ का खिलौना बन गया था। ब्रिटेन ईरान को अपनी मुट्ठी में करने का मौक़ा ताक रहा था और फ़ान्स उसे अपनी मुट्ठी में कस रहा था। इसी खींचातानी में सात वर्ष बीत गए। सन् १८१७ में अङ्गरेज़ों ने ईरान को पन्द्रह लाख रुपए वार्षिक कर देना स्वीकार किया और बदले में उससे प्रतिज्ञा कराई गई कि वह अपने देश में किसी भी गोरी जाति को अपनी सामरिक शक्ति न बढ़ाने देगा।

इसके बाद सन् १८२५ ईस्वी में रूस ने ईरान का गोकूचा नामक स्थान छीन लिया। ईरान और रूस में भयङ्कर समर छिड़ा और तीन वर्षों तक चलता रहा। इस संग्राम में ईरान को भयङ्कर रूप से क्षतिग्रस्त होना पड़ा। बहुत से ईरानी योद्धा मारे गए। आर्थिक हानि भी उठानी पड़ी। अन्त में सन्धि-सभा बैठी। ईरान को तीस लाख पौण्ड क्षति-स्वरूप देना पड़ा। इरेवान और नाकचीवान आदि कई प्रदेशों से भी हाथ धोना पड़ा। इसके सिवा रूस-सरकार को कितनी ही अभ्यन्तरीय सुविधाएँ भी मिलीं। अभागा ईरान सैकड़ों वर्षों के लिए निर्वीर्य हो गया। ईरान में रूस के ज़ार की तूती बोलने लगी। रूस के आधिपत्य के कारण इङ्गलैण्ड और फ़ान्स को ईरान से अपना बोरिया-बँधना समेट लेना पड़ा। रूस की सरकार ने ईरान की सरकार को भारत-सरकार के विरुद्ध ऐसा पाठ पढ़ाया कि वह लगातार पच्चीस वर्षों तक अफ़ग़ानिस्तान के साथ झगड़ता रह गया। इसका परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे ईरान को अपनी सारी शक्ति खो देनी पड़ी।

सन् १८३३ ईस्वी में ईरान के फ़तहअली शाह ने अफ़ग़ानिस्तान के हिरात प्रदेश पर आक्रमण किया। परन्तु थोड़े दिनों के बाद ही उनकी मृत्यु हो गई, इसलिए इस आक्रमण का कोई नतीजा नहीं निकला। फ़तहअली के बाद महम्मद शाह ईरान का बादशाह हुआ। उसने १८३७ में फिर हिरात पर चढ़ाई की। अङ्गरेज़ों ने बाधा दी और रूस उत्साह प्रदान करने लगा। परन्तु अन्त में महम्मद को विफल मनोरथ होकर लौट जाना पड़ा। महम्मद और उसके मन्त्री की निर्बुद्धिता के कारण ईरान की बड़ी क्षति हुई। जिस समय वह मरा उस समय समस्त ईरान में भयङ्कर विशृङ्खलता फैली हुई थी। ख़ज़ाना ख़ाली पड़ा हुआ था, फ़ौज की तनख़्वाह तीन महीने से लेकर पाँच वर्ष तक की बाक़ी पड़ी थी, घुड़सवार सेना इस्तीफ़ा देकर घर चली गई थी। और विद्रोह का धुँआ सारे देश में छा गया था।

महम्मद शाह की मृत्यु के बाद उसका सोलह वर्ष का लड़का नसीरुद्दीन ईरान के तख़्त पर बैठा। उसी समय 'बाबी' सम्प्रदाय वालों ने विद्रोह की घोषणा कर दी। नसीरुद्दीन की सरकार ने उन्हें निर्दयतापूर्वक कुचलना आरम्भ किया। सारे देश में असन्तोष फैल गया। परन्तु इससे ईरानियों का उपकार भी हुआ। सैकड़ों वर्षों के बाद ईरान में एक बार फिर जाग्रति के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे। गोरों की चालबाज़ियों ने भी इसे मदद दी, ईरानी धीरे-धीरे अपनी परिस्थिति को समझने लगे।

सन् १८५० में यूरोपियन राजनीति में विशेष रूप से परिवर्त्तन हुआ। रूस ने ईरान को तुर्किस्तान के विरुद्ध अस्त्र धारण करने की सलाह दी, किन्तु मन्त्रियों की सलाह से नसीरुद्दीन ने फ़ान्स और ब्रिटेन के साथ मेल रखना उचित समझा। मन्त्रियों ने बताया कि अगर फ़ान्स और ब्रिटेन से दोस्ती रहेगी तो रूस ने ईरान का जो भू-भाग हड़प लिया है, उसे भविष्य में फिर उसके हाथों से छीन लेने का अवसर मिल सकेगा। परन्तु अङ्गरेज़ों और फ़ान्सीसियों ने उसे सम्पूर्ण रूप से निरपेक्ष रहने का ही परामर्श दिया। अपनी कमज़ोरी के कारण ईरान को भी यही सलाह मान लेनी पड़ी। परन्तु यह दोस्ती केवल पाँच ही वर्ष तक रह सकी। सन् १८५५ में तेहरान को लेकर अङ्गरेज़ों और ईरान में फिर मतान्तर हो गया। अङ्गरेज़ों ने ख़फ़ा होकर बूशहर में सेना एकत्र करना आरम्भ कर दिया, और थोड़े दिनों के बाद ही ईरान के एक भू-भाग पर अपना क़ब्ज़ा भी कर लिया। इस समय अङ्गरेज़ों को भारत की रक्षा की बड़ी चिन्ता थी। इसलिए उन्होंने शीघ्र ही ईरान से सन्धि भी कर ली। फ़ान्स और इङ्गलैण्ड ने दया करके ईरान को स्वाधीन राज्य स्वीकार किया। इसके बदले में अङ्गरेज़ों को अफ़ग़ानिस्तान और ईरान के बीच मध्यस्थ बनने का अवसर प्राप्त हो गया। इतिहासकारों का कहना है कि इस सन्धि से अङ्गरेज़ों का विशेष उपकार हुआ। क्योंकि इसके कुछ दिन बाद ही भारत में सन् १८५७ के सिपाही-विद्रोह की आग धधक उठी थी और इस विद्रोह को दमन करने के लिए उन्होंने ईरान से अपनी सारी सेना वहाँ बुला ली थी। उस समय अगर अफ़ग़ानिस्तान और ईरान में पारस्परिक मनमुटाव न होता और अङ्गरेज़ इस झगड़े में पड़े न होते, तो भारत के सिपाही-विद्रोह का कुछ और ही परिणाम होता।

शाह नसीरुद्दीन की मृत्यु से पहले समस्त मध्य एशिया पर रूस की प्रधानता थी। इसी समय उसने काकेशिया पर दख़ल जमाया था। इसके बाद वह सनीचर की भाँति अफ़ग़ानिस्तान की खोपड़ी पर आ धमका। अङ्गरेज़ घबरा उठे। कहीं यह सनीचर एक दिन उनकी सोने की चिड़िया—भारत को न फाँस ले।

इस समय ईरान की हीनावस्था पराकाष्ठा तक पहुँच चुकी थी। सुअवसर देख कर रूस ने उसके उत्तरी प्रदेश पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया। अङ्गरेज़ भी निश्चिन्त न थे, उन्होंने दक्षिणी ईरान को अपने चङ्गुल में दबाया। भारत की रक्षा के लिए ईरान को मुट्ठी में रखने की उन्हें सख़्त ज़रूरत थी। रूस की अनधिकार चेष्टा के उत्तर में अङ्गरेज़ों ने ईरान में अपने लिए काफ़ी सुविधा कर ली। ईरानियों के प्रबल प्रतिवाद की परवाह न कर, ईरान और भारत के बीच तारबर्क़ी जारी हो गई। फ़ारस की खाड़ी में उनका जहाज़ी बेड़ा रहने लगा, 'कोरन' (Kaurn) नदी में जहाज़ चलाने का अधिकार मिल गया और मिल गया ईरान में ब्रिटिश व्यापार के विस्तार का अलभ्य अवसर। इसके बाद 'मालपुए पर चीनी' के अनुसार शाह नसीरुद्दीन ने अङ्गरेज़ों को अपना बैङ्क स्थापित करने और 'नोट' चलाने का भी अधिकार दे दिया।

परन्तु इसका परिणाम बहुत अच्छा न हुआ, ईरान में अङ्गरेज़ों के विरुद्ध असन्तोष का सञ्चार होने लगा। सन् १८९० में, जब शाह ने अङ्गरेज़ों को तम्बाकू की खेती का अबाध अधिकार दे दिया, तो यह असन्तोष की आग और भी धधक उठी। ख़ास करके 'हुक़्क़ेबाज़' बहुत ही नाराज़ हो गए। धर्माचार्य हाजी मिर्ज़ा हसन शीराज़ी ने 'फ़तवा' दिया कि 'काफ़िरों' का पैदा किया हुआ तम्बाकू पीना 'हराम' है। सारे देश में बहिष्कार आन्दोलन आरम्भ हो गया। इसके साथ ही स्थान-स्थान पर ख़ून-ख़राबी और मार-पीट होने लगी। शाह ने विद्रोहियों के भय से अङ्गरेज़ों का बहुत सा अधिकार छीन लिया। परन्तु अङ्गरेज़ों ने इसके बदले में पाँच लाख पौण्ड शाह से वसूल कर लिए। उस समय ईरान के लिए यह अर्थदण्ड अतीव कठोर साबित हुआ। देश ने मानो पाँच लाख पौण्ड देकर अपने लिए दरिद्रता ख़रीद ली।

इसके बाद ईरान, रूस और इङ्गलैण्ड की चक्की में दिन-रात पिसने लगा। नसीरुद्दीन की बादशाहत के वे अन्तिम दिन थे; बुढ़ौती का ज़माना था। शासन-शक्ति क्षीण हो चली थी। वह अपने दरबारियों के हाथ का खिलौना बन गया था। इसलिए समस्त राज्य में विषम विशृङ्खलता उपस्थित हो गई। ठीक समय पर वेतन न मिलने के कारण फ़ौज के सिपाहियों ने घर की राह ली। धनागार और अन्नागार शून्य होने लगे। राज-कर्मचारियों की उच्छृङ्खलता के कारण प्रजा भी विद्रोही हो उठी। किसी गुप्त-घातक ने एक दिन नसीरुद्दीन को गोली मार दी।

अत्याचार जब अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है, तो उसका परिणाम यही होता है। उस समय एक साधारण रस्सी भी सर्प बन जाती है। शाह नसीरुद्दीन की हत्या इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। उसे मारा था एक साधारण—निरीह दूकानदार ने। जब अत्याचार से उसकी आत्मा खलबला उठी तो एक दिन दूकान-दौरी उठा कर वह राजद्रोही बन गया। जिस शहर में उसकी दूकान थी, वहीं एक क्रान्तिकारी सरदार रहता था। दूकानदार ने उसका शिष्यत्व स्वीकार किया और देश को अत्याचार के हाथों से मुक्त करने के लिए जान पर खेल गया! उसका नाम मिर्ज़ा रज़ा था, उसे फाँसी की सज़ा दी गई थी।

[अगले अङ्क में समाप्त]

* * *

पढ़ के कॉलेज में दीन खो बैठे !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

उन्हें बेतरह मुझसे अब दुशमनी है,
मुसीबत में दिल और ज़हमत में जी है !
तकल्लुफ़ ने रङ्ग अपना आकर जमाया,
कहाँ अब वह पोशाक में सादगी है !
सुनाऊँ अगर हो कोई सुनने वाला,
बड़ी लम्बी-चौड़ी मेरी हिस्टिरी है।
कहे कौन दुनिया में "बिस्मिल" को अच्छा,
जो दुनिया कहे, यह बुरा आदमी है !

* * *

तङ्ग आकर उन्हीं के हो बैठे,
हम गुलामी में सबको रो बैठे।
वेद से वास्ता नहीं "बिस्मिल",
पढ़ के कॉलिज मे दीन खो बैठे !

* * *

ख़्याल आता है दिल में कब हमारा,
सुनें क्यों हमसे वह मतलब हमारा।
हमें है उन्स हर मज़हब से "बिस्मिल",
नहीं है कोई भी मज़हब हमारा !

* * *

विभिन्न देशों में प्राण-दण्ड के भिन्न-भिन्न तरीके

[श्री० रमेशप्रसाद जी, बी० एस्-सी०]

यह कहना ज़रा कठिन है कि फाँसी देने की प्रथा कब से चली। इतिहासज्ञों के लिए भी इसका ठीक समय बतलाना कठिन हो जायगा, किन्तु यह बात सभी मानेंगे कि फाँसी देने की प्रथा सब समय एक सी नहीं थी। फाँसी देने का अर्थ है मनुष्य का किसी न किसी प्रकार प्राण-हरण करना। चाहे गले में रस्सी डाल कर, चाहे कुत्तों से नुचवा कर, चाहे पत्थरों से मार कर—किसी भी रूप में मनुष्यों को फाँसी दी जा सकती है। यह विषय बड़ा विस्तृत है और यूरोपीय भाषाओं में इस पर बहुत सी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं।



सूली द्वारा प्राण-हरण

प्राण-हरण के अन्य अमानुषिक उपायों में सूली की प्रथा भी कम घृणित नहीं थी! अभियुक्त को गुदा द्वारा लोहे की एक नुकीली—भाले जैसी—छड़ पर बिठा दिया जाता था, जो पेट तथा हृदय को बेधती हुई सिर से निकलती थी! न जाने कितने लालों के इस प्रकार प्राण-हरण किए जा चुके हैं!!

प्राचीन काल में लोगों की धारणा थी कि जब तक कोई मनुष्य अपना अपराध स्वयं स्वीकार न कर ले, तब तक उसे दण्ड न दिया जाय। सन्देहजनक व्यक्तियों को अपराध स्वीकार कराने के लिए भी भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्ट दिए जाते थे और अक्सर देखा जाता था कि प्रायः इस क्रिया में उनकी जीवन-लीला भी समाप्त हो जाती थी। ख़ैर, हमें इन बातों से प्रयोजन नहीं है, फाँसी देने के यन्त्र भिन्न-भिन्न समयों में भिन्न-भिन्न होते आए हैं। तारीफ़ करनी चाहिए उन लोगों की, जिन्होंने ऐसे यन्त्रों का आविष्कार किया था। कहा जाता है कि प्रायः ६०० प्रकार के फाँसी देने के यन्त्र आविष्कृत हुए हैं और उनमें कई तो बड़े विचित्र हैं। प्राचीन काल में अङ्गरेज़ों में फाँसी देने की एक प्रथा यह थी कि अपराधी फाँसी पर लटका दिया जाता था और जब उसका आधा प्राण निकल जाता था, तो उसे उतार कर ज़मीन पर लिटा देते थे। इस समय उसका सिर किसी औरत की जङ्घा पर रख दिया जाता था, जिससे उसके कष्ट में उसे शान्ति मिले, और तब उसका पेट चीर कर उसकी आँतें निकाल ली जाती थीं।

इङ्गलैण्ड में फाँसी देने की एक प्रथा चली थी, जिसका नाम लोगों ने Scavenger's daughter रख दिया था। यह और कुछ नहीं, सिर्फ़ एक लोहे का तार होता था, जिससे अपराधी को मोड़ कर बाँध देते थे और उसे मरने के लिए छोड़ देते थे!

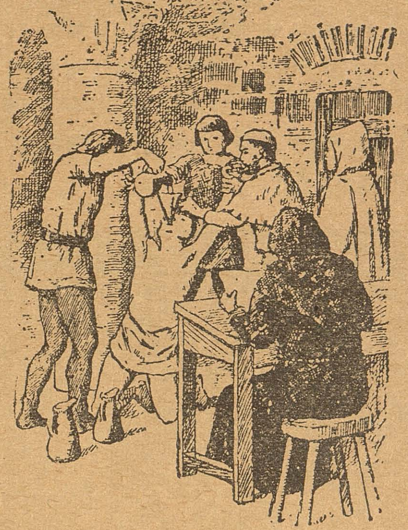
'स्ट्रॉपेडो' नामक प्राण-दण्ड देने का तरीक़ा यह था कि अपराधी के पैर में कोई तीन मन का पत्थर बाँध दिया जाता था और उसके एक या दोनों हाथ बाँध कर लटका दिया जाता था। इस प्रकार अपराधी बिना भोजन और जल के मर जाता था! (देखिए चित्र नं० १)

फाँसी के तरीक़ों में "रशिया की गाँठ" (Russian knot) एक प्रसिद्ध तरीक़ा है। यह एक चमड़े का चाबुक होता था, जिसमें केवल एक ही गाँठ रहती थी। चमड़े को पानी में भिगो कर और फिर सुखा कर कड़ा बना लेते थे और फिर इस चाबुक से अपराधी की पीठ का चमड़ा उधेड़ डालते थे, जिसकी पीड़ा से मृत्यु ही त्राण देती थी!

न्यूयार्क के औबर्न जेल में सन् १८९८ ई० तक अपराधी के सिर पर पानी की धार डाल कर प्राण-दण्ड दिया करते थे। (चित्र नं० २ देखिए) अपराधी का हाथ एक पलने में बाँध देते थे और ऊपर से उसके सिर पर अनवरत पानी की धार गिराते थे। इससे अपराधी को स्वाँस लेने के लिए हवा नहीं मिल सकती थी और दम घुट कर उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो जाती थी।

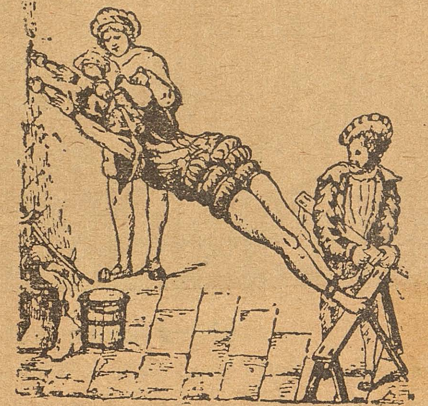
किन्तु पानी से फाँसी देने की यही एक प्रथा नहीं है। सब से आसान तरीक़ा है पानी में डुबा कर मारना। इङ्गलैण्ड में एक समय डायनों को पानी में डुबा कर फाँसी दी जाती थी। ऐसे भी उदाहरण अनोखे नहीं हैं, जहाँ लोगों को खौलते हुए पानी के कड़ाह में डाल कर मारा गया हो। भारतवर्ष ही में इसके कई उदाहरण मिलेंगे।

चित्र नं० ३ देखिए। इसमें अपराधी के गले के नीचे तक एक टीप (Funnel) घुसेड़ दिया गया है। इस क्रिया



चित्र-नम्बर ३

से अपराधी के पेट में इतना पानी उड़ेल दिया जाता था कि अपराधी का प्राणान्त हो जाता था। एक तो गिलोय यों ही कड़वी होती है, दूजे यदि वह नीम पर चढ़ जाय तो क्या पूछना! चित्र नं० ४ में अपराधी का प्राण निकालने के लिए काफ़ी साधन है, किन्तु इससे सन्तुष्ट न होकर आविष्कारक ने उसके गले के नीचे पानी पहुँचाने का भी प्रबन्ध कर दिया है।



चित्र-नम्बर ४

"Ducking Stool" प्रायः स्त्रियों को फाँसी देने के काम में आता था (चित्र नं० ५ देखिए)। एक कुर्सी पर अपराधी बैठा दिया जाता था। इसे अपराधी सहित पानी में डुबाते और निकालते थे। पानी में अपराधी को रखने का समय धीरे-धीरे बढ़ाते जाते थे और अन्त में उसे जल-समाधि लगाने के लिए पानी में हमेशा के लिए छोड़ देते थे। अपराधी का दम फूल जाता था और वह मर जाता था।

अपराधी के प्राण-हरण करने के लिए अग्नि भी बहुत दिनों तक काम में लाई जाती थी। अग्नि में जला कर या आग पर गरम किए हुए पानी या तेल के कड़ाह में अपराधी को डाल देना तो प्राण-हरण के ऐसे तरीक़े हैं, जिन्हें सब कोई जानता है। किन्तु कुछ पत्थर के हृदय वाले अधिकारियों को यह सह्य नहीं हुआ कि अपराधी अपना प्राण इतनी आसानी से गँवाये, इसलिए उन्होंने कई ऐसे तरीक़े आविष्कार किए, जिनसे अपराधियों की तकलीफ़ बढ़ जाय। अपराधी के हाथ-पैर बाँध दिए जाते थे और उसे भालों की नोकों से उठा कर आग में धीरे-धीरे झुलसा जाता था। कैसा हृदय-विदारक दण्ड है? (देखिए चित्र नं० ६)

कभी-कभी एक लोहे के पहिए में अपराधी को बाँध देते थे, पहिए के नीचे आग जला देते थे और पहिए को चारों तरफ़ घुमाते थे, जिससे कि प्राण धीरे-धीरे और कष्ट से निकले।

रोम में एक सीज़र के विषय में कहा जाता है कि वे अपराधियों को मोम से लपेटवा देते थे और रात में उनमें आग लगवा देते थे, जिससे उनका राज-भवन रात में प्रकाशित होता था। नहीं कहा जा सकता कि यह बात कहाँ तक सच है, किन्तु एक पुराने चित्र में यह बात दिखलाई गई है।



कवि गङ्ग का प्राण-दण्ड

मृत्युदण्ड की अनेक अमानुषिक प्रथाओं में हाथी के पैर तले अभियुक्त को रौंदवा कर उसका जीवन नष्ट करना भी एक घृणास्पद प्रथा थी, जिसका अस्तित्व मुग़ल-शासन के अन्त तक पाया जाता है! इस चित्र में कवि गङ्ग के मृत्यु-दण्ड का दृश्य अङ्कित है। अमानुषिकता का कितना नग्न प्रदर्शन है !!

बुरा हो चर्ख़ी का, जिसने न मालूम कितने हज़ार मनुष्यों के प्राण लिए होंगे। पाठक चित्र नं० ७ देखें और विचार करें। इसमें दो पहिए हैं, जिनके बीच में अपराधी को खड़ा कर देते हैं। प्रत्येक पहियों से तेज़ धारदार छुरियाँ निकलती रहती हैं। ये अपराधी के शरीर से लग-लग कर उसे क्षत-विक्षत कर देती हैं। इस यन्त्र द्वारा अपराधी कुछ ही मिनटों में मार डाला जा सकता है, किन्तु उसे तकलीफ़ बहुत ज़्यादा होती है।

घोड़े और गाड़ी के पीछे अपराधी को बाँध कर मार डालने की प्रथा ऐसी नहीं है, जिसे लोग न जानते हों, किन्तु यदि अपराधी का 'टग ऑफ़ वार' (Tug of war) हो तो उस पर कैसा बीतेगा। 'टग-ऑफ़-वार' में जैसे रस्सी काम में लाई जाती है, वैसे ही इसमें मनुष्य काम में लाया जाता था। नतीजा यह होता था कि मनुष्य के दो टुकड़े हो जाते थे !! (देखिए चित्र नं० ८)। एक समय अपराधियों को फाँसी देने के लिए उन्हें रस्सी के सहारे बाँध देते थे और घोड़े से उस रस्सी को बाँध कर खिंचवाते थे। और ऊपर से उन्हें पत्थरों से मारते थे (देखिए चित्र नं० ९)

'क्रॉस' पर लटका कर फाँसी देने का तरीक़ा बहुत पुराना नहीं है। इसके विषय में प्रायः सभी कुछ न कुछ जानते हैं (चित्र नं० १०-११ देखिए)।

'मृत्यु-सेज' नामक दण्ड-विधान बड़ा दारुण है। इसका दृश्य चित्र–नं० १२ में देखिए। एक तख़्ते पर तेज़ कीलें जड़ी रहती है। उसी पर अपराधी को सुला कर बाँध देते हैं और फिर शिकन्जे से इस प्रकार कसते हैं कि अपराधी के शरीर में कीलें गड़ जायँ। अपराधी असह्य कष्ट भोग कर प्राण छोड़ देता है। इसीसे मिलता-जुलता हुआ फाँसी देने का वह तरीक़ा है, जिसमें अपराधी को तेज़ कील लगे हुए तख़्ते पर खड़ा करा कर कोड़े लगाते हैं। (देखिए चित्र-नं० १३)

फाँसी के पिंजड़े का व्यवहार अब तक काबुल में होता है। इस पिंजड़े में अपराधी को बन्द कर देते हैं और धूप में रख देते हैं या किसी ऊँचे मचान या पेड़ पर टाँग देते हैं। अपराधी बिना अन्न-जल और असह्य गरमी आदि के कारण कुछ दिनों में दूसरे लोक की यात्रा कर देता है (चित्र नं० १४ देखिए)

दीवार में चुनवा देना, कुत्ते से नुचवाना, ऐसे हिंसक पशुओं के पिंजड़े में छोड़ देना, जो कई दिनों से भूखे रक्खे गए हों; पत्थर से मरवाना आदि और भी कितने प्रकार के फाँसी देने के तरीक़े हैं। आजकल भारतीय जेलों में फाँसी देने की जो प्रथा प्रचलित है, उसे सभी जानते हैं। बिजली से फाँसी देने के तरीक़े का भी आविष्कार हो चुका है। अपराधी को एक कुर्सी पर बैठा देते हैं और उसका सम्बन्ध बिजली पैदा करने वाली एक मशीन से करा देते हैं। बस, दो सेकेण्ड में सारा काम तमाम हो जाता है।

फाँसी देने के सारे तरीक़ों का यदि वर्णन किया जाय तो एक बड़ा सा पोथा तैयार हो जाय। पाठकों की जानकारी के लिए जो कुछ दिया गया है, उसीसे वे अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि फाँसी कितनी निर्दयतापूर्वक दी जाती है। इसलिए आजकल कुछ ऐसे लोग उठ खड़े हुए हैं, जिनका कहना है कि जब मनुष्य, मनुष्य की सृष्टि नहीं कर सकता तो उसे किसी का प्राण हरण करने का क्या अधिकार है? इसलिए इस प्रथा को एकदम उठा देना चाहिए। ईश्वर अधिकारी वर्गों को ऐसी सुमति दे कि संसार से फाँसी का लोप हो जाय। तथास्तु—

* * *

रजत-रज

[संग्रहकर्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

विजय पाकर परास्त शत्रु को मुँह चिढ़ाना परले सिरे की नीचता है।

❀

स्त्री के लिए सतीत्व से बढ़ कर क्या वस्तु हो सकती है; उसका नाश किसी सामान्य कारण से नहीं होता।

❀

कुत्ते की पूँछ कभी सीधी नहीं होती; स्वभाव कभी नहीं बदलता।

❀

न्याय करना उतना ही कठिन है, जितना अन्याय का दमन करना।

❀

कौन कह सकता है कि चिड़ियों के सङ्गीत अर्थ-विहीन हैं?

चिड़ियों के सङ्गीत पर आकाश में वृक्षों की पत्तियाँ नर्तन करती हैं।

इस साज को लख कर आज का प्रभात मुदित है।

❀

जिसका कोई नहीं होता, उसके सब होते हैं।

❀

आँसू हृदय से निकल कर दुःख प्रकट कर देते हैं। जिसे घर से निकालोगे वह भेद अवश्य बता देगा।

❀

अतीत चाहे दुःखद ही क्यों न हो, उसकी स्मृतियाँ मधुर होती हैं।

❀

हे नाथ! मैं तो तुमसे मिलने को सर्वस्व त्याग कर बैठा हूँ। तुम मेरे पास सब कुछ लेकर क्यों आते हो? क्या तुम्हें भी दिखावा पसन्द है?

❀

नियमों से सुधार नहीं होते; सुधारों से नियम बनते हैं।

❀

मेरे नेत्रों में जो नींद रेंगने लगती है, क्या कोई बता सकता है वह कहाँ से आती है?

❀

नीरद, सन्तप्तों को शीतल करने के हेतु अपने आपको बरस देता है। इससे हमें क्या शिक्षा मिलती है?

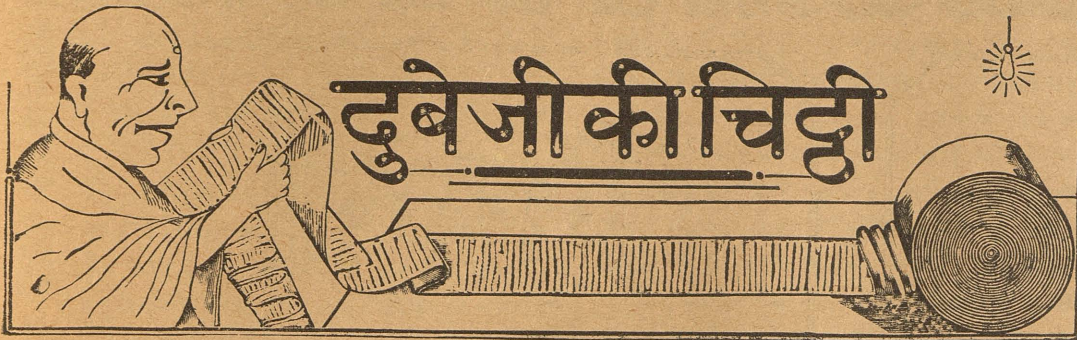
❀

असम्भव का नाम न लो। इस सम्भव-विश्व में असम्भव कहाँ?

❀

ईश्वर, हमें अपने भविष्य में विश्वास होवे।

* * *



अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

अच्छा सुनिए, आपको एक बड़ी आवश्यक बात सुनाता हूँ। हमारे मुहल्ले में एक वृद्ध महाशय रहते हैं। यह महाशय कट्टर सनातनधर्मी हैं, और जितने यह वृद्ध हैं उतने ही वृद्ध इनके विचार हैं। एक दिन की बात है कि मैं शाम को ठण्ढाई-बूटी छान कर झूमता हुआ घर से निकला। इच्छा थी कि पार्क में जाकर बैठूँगा, परन्तु ज्योंही द्वार के बाहर निकल कर दस क़दम चला कि वृद्ध महाशय से ठोकर खाई। वृद्ध महाशय की सूरत देखते ही आधा सुरूर तो वहीं ठण्ढा हो गया ; क्योंकि यह महाशय वह बला हैं कि ईश्वर बचावे। रास्ते में कहीं मिल गए तो समझ लीजिए कि दो घण्टे के लिए बेकारी से छुट्टी मिल गई। मैंने चाहा कि कतरा कर निकल जाऊँ, पर उन्होंने भी शिकार देख लिया था। मुस्कुरा कर बोले—"अजी दुबे जी, ऐसे अलग-अलग जाइएगा—किधर के इरादे हैं ?" मैंने मन में कहा—"इरादे तो बहुत-कुछ थे, पर आपकी सूरत देखते ही सबों को लक़वा मार गया।" प्रकट में मैंने उनसे कहा—"कुछ नहीं, ज़रा योंही घूमने के लिए निकला था ; परन्तु अब इच्छा होती है कि घर लौट जाऊँ।" वह बोले—"क्यों-क्यों, घर लौटने की कौन बात है ? चलिए मैं भी तो उधर ही चल रहा हूँ।"

यह शुभ-समाचार सुनते ही दम ख़ुश्क हो गया। समझ लिया कि आज बेगार में धर लिए गए। अच्छा, ईश्वर की इच्छा—योंही सही, असन्तोष की एक दीर्घ-निश्वास छोड़ कर मैंने कहा—"अच्छी बात है, चलिए।" ख़ैर साहब, दोनों आदमी चले। चार क़दम चलते ही वृद्ध सज्जन ने पूछा—"कहिए, आप सनातनधर्म के वार्षिक अधिवेशन में गए थे ?" मैंने कहा—"नहीं, मैं तो नहीं जा सका।" वृद्ध विस्मित होकर बोले—"ऐं, नहीं गए ?" मैंने पुनः धड़कते हुए कलेजे से कहा—"जी नहीं !" वृद्ध—"यह तो आपने बड़ा बुरा किया। इस वर्ष अधिवेशन देखने योग्य था। वह-वह स्पीचें हुईं कि मैं आपसे क्या तारीफ़ करूँ। विधवा-विवाह इत्यादि के तो वह धुर्रें उड़ाए गए कि कुछ न पूछिए। जवाब देते न बना। आप तो बस थाँव के टर्रे हैं—घर में बैठे दुलत्तियाँ झाड़ा करते हैं। सभा में जाते तो मालूम पड़ता।"

यह सुनते ही मैंने भी ज़रा कान फटफटाए और सिर उठा कर कहा—"हाँ साहब, आप क्या फ़र्माते थे ?" वह बोले—"मालूम होता है कि आज गहरी छन गई। मैं इतनी बातें कह गया, आप कहते हैं कि क्या फ़र्माते थे।" मैंने कहा—"जी नहीं, गहरी-वहरी तो कुछ नहीं छानी, और चाहे जितनी गहरी छानूँ, पर आपके सामने आते ही सब हलकी हो जाती है। हाँ, तो आप यह कह रहे थे कि विधवा-विवाह के ख़ूब धुर्रें उड़ाए गए, क्यों न ?"

वृद्ध सज्जन बोले—"हाँ !" मैंने पूछा—"भला आप यह बता सकते हैं कि विधवा-विवाह के खण्डन में क्या कहा गया ?" वृद्ध महाशय मुँह बना कर बोले—"यह पूरे तौर से तो मैं नहीं बता सकता ; क्योंकि मैं बहुत पीछे बैठा हुआ था और बुढ़ापे के कारण कुछ ऊँचा भी सुनने लगा हूँ।" मैंने कहा—"तब तो आप जो भी कहें, मैं सब मान लेने को तैयार हूँ। चलिए, मैं भी कहता हूँ कि वाक़ई ख़ूब कहा गया—ऐसा और इतना कहा गया कि लोगों को याद नहीं कि क्या कहा गया !" वृद्ध महाशय बोले—"तो क्या आप विधवा-विवाह ठीक समझते हैं ?" मैंने कहा—"मान लीजिए कि मैं ठीक समझता हूँ।" वृद्ध महाशय—"तो आप सख़्त ग़लती करते हैं। विधवा-विवाह को कोई भला आदमी ठीक न कहेगा।"

मैंने कहा—"क्यों ?" वह बोले—"विधवा-विवाह का पक्ष किसी भले आदमी को नहीं लेना चाहिए। यदि आप भले आदमी हैं तो विधवा-विवाह का पक्ष कभी न लेंगे।"

मैंने कहा—यह आप बहस करते हैं या पाठ पढ़ा रहे हैं ?

वह—अच्छा, तो आप बहस करना चाहते हैं ? अच्छी बात है, चलिए। मैं कहता हूँ, विधवा-विवाह बुरा है।

मैंने उनके स्वर में स्वर मिला कर कहा—मैं कहता हूँ, विधवा-विवाह अच्छा है !

वह—अच्छा क्यों है ?

मैं—बुरा क्यों है ?

वह—आप बहस करते हैं या मज़ाक़ ? जो मैं कहता हूँ, वही आप कहते हैं ! आप साबित कीजिए कि विधवा-विवाह अच्छा है।

मैं—आप साबित कीजिए कि विधवा-विवाह बुरा है !

वह—अभी तक विधवा-विवाह नहीं होता था, इसलिए वह बुरा है।

मैं—अब विधवा-विवाह होने लगा, इसलिए वह अच्छा है।

वह—आप तो मज़ाक़ करते हैं।

मैं—आपकी उम्र तो इस योग्य रही नहीं कि कोई आपसे मज़ाक़ करे, वैसे जो आप समझें, वह सर्वथा उचित है।

वह—विधवा-विवाह से वर्णसङ्कर पैदा होंगे—यह आप जानते हैं ?

मैं—बिलकुल नहीं, जब विवाह होगा तब वर्णसङ्कर कैसे उत्पन्न होंगे—यह आप जैसे अनुभवी मनुष्य जान सकते हैं।

वह—विधवा-विवाह से व्यभिचार बढ़ेगा।

मैं—अभी दिन-प्रतिदिन घट रहा था और विधवा-विवाह से बढ़ेगा ? यह तो निस्सन्देह घाटे की बात है।

वह—जहाँ विधवा-विवाह प्रचलित हुआ कि स्त्रियाँ पुरुषों को फूस समझने लगेंगी।

मैं—अभी तक सुवर्ण समझती थीं ?

वह—बेशक ! अभी तक तो यह समझती थीं कि यदि पति मर गया तो जन्म भर के लिए राँड हो जायँगी। विधवा-विवाह के प्रचलित हो जाने पर तो कोई डर नहीं रह जायगा—समझ लेंगी कि यदि यह मर गया तो दूसरा विवाह हो जायगा।

मैं—इसलिए वह पति को विष दे दिया करेंगी ; क्यों न ?

वह—क्या ताज्जुब है। जब यह स्वतन्त्रता है कि दूसरा विवाह हो जायगा, तब विष देना कोई आश्चर्य है ?

मैं—आपने अपनी इतनी आयु में कितनी स्त्रियों को विष दिया है ?

इस पर वृद्ध महाशय कुछ चकरा कर बोले—इसका क्या तात्पर्य है ?

मैं—जब आपको यह स्वतन्त्रता थी कि दूसरा विवाह तो हो ही जायगा, तब आपको उचित था कि कम से कम दस-बारह स्त्रियों को तो ज़हर देते।

वह—राम ! राम !! आप भी क्या बातें करते हैं, मैं क्या हत्यारा हूँ ?

मैं—नहीं, आप तो महादयालु हैं—हत्यारी तो केवल स्त्रियाँ ही हैं।

इसी समय हम लोग पार्क में पहुँच गए। पार्क में एक ख़ाली बेन्च पर बैठ कर पुनः वार्त्तालाप होने लगा। वृद्ध महाशय बोले—दुबे जी, सच-सच बताइएगा, क्या आपको यह अच्छा मालूम होता है कि आपके मर जाने पर आपकी स्त्री दूसरे पुरुष के पास चली जाय ?

मैंने कहा—एक दिन लल्ला की महतारी ने भी मुझसे यही प्रश्न किया था। इसका उत्तर मैंने यही दिया था कि नहीं। इस पर उसने कहा कि फिर हम स्त्रियाँ कैसे यह अच्छा समझेंगी कि हमारे मरने पर हमारा पति दूसरी स्त्री का होकर रहे ?

वह—तो इससे क्या मतलब निकला ?

मैं—इससे यह मतलब निकला कि यदि विधवा-विवाह बुरा है तो विधुर-विवाह भी बुरा है। विधवा-विवाह पुरुषों की दृष्टि से बुरा है, विधुर-विवाह स्त्रियों की दृष्टि से।

वह—ओफ़ ओह ! यह कलिकाल का प्रभाव है, जो आप ऐसी बातें करते हैं।

मैं—ख़ूब सोचे सत्ययुगी जी महाराज !

वह—हम सत्ययुगी न सही, पर विचार हमारे सत्ययुगी ही हैं।

मैं—बाबा आदम के समय के सब लोग ऐसे ही हैं।

वह—अच्छा, विधवा-विवाह को जाने दीजिए, स्त्री-शिक्षा के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ?

मैं—स्त्री-शिक्षा पर आप पहले अपने विचार बताइए।

वह—नहीं, आप बताइए।

मैं—मैं तो आपके विचार सुन कर अपने विचार बनाऊँगा। आप अनुभवी आदमी हैं, पहले आप अपना अनुभव बताइए।

वह—मेरा विचार है कि स्त्री-शिक्षा महा ख़राब है।

मैं—यह तो आपने कोई नई बात नहीं कही, यह तो आपकी उम्र के सब लोग कहते हैं।

वह—(प्रसन्न होकर) देखिए, जो सब लोग कहते हैं, वही मैंने भी कही।

मैं—हाँ-हाँ, आप कुछ उनसे ज़्यादा बेवक़ूफ़ तो हैं नहीं, जो कुछ और अण्ट-शण्ट बकने लगते।

वह—बेशक, मैं इतना बेवक़ूफ़ नहीं हूँ कि अण्ट-शण्ट बकूँ। मैं तो जो कहूँगा, सो पक्की बात कहूँगा। भई दुबे जी, स्त्री-शिक्षा से मेरा नाकों दम आ गया। मेरी दो पोतियाँ स्कूल में पढ़ती हैं। आप जानिए, आजकल के आदमी तो हम बूढ़ों की बात सुनते नहीं। मैंने मना किया था कि स्कूल में न पढ़ाओ, पर हमारे सपूत न माने। सो जनाब, वे लड़कियाँ स्कूल में पढ़ाने बिठा दी गईं। अब मैं क्या बताऊँ कि उनकी क्या दशा है। घर की अपढ़ स्त्रियों को, जैसे अपनी दादी तथा माता को, तो वे कूड़ा-करकट समझती हैं। घर के काम-काज में हाथ लगाना उनके लिए महा-पाप है। भोजन

वीरबाला

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता? सन् १८५७ के स्वातन्त्र-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीत, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सजिल्द एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य ४) ; स्थायी ग्राहकों से ३)

निर्मला

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं; किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है।

यह वही क्रान्तिकारी उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में खलबली पैदा कर दी है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र!

लम्बी दाढ़ी

"दाढ़ी वालों को भी प्यारी है बच्चों को भी,
बड़ी मासूम, बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी।
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है,
लाख दो लाख में, बस एक है लम्बी दाढ़ी॥"

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र।

चुहल

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ॥।); केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

मनमोदक

यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए सुन्दर खिलौना है। जैसा पुस्तक का नाम है, वैसा ही इसमें गुण भी है। इसमें लगभग ४५ मनोरञ्जक कहानियाँ और एक से एक बढ़ कर ४० हास्यप्रद चुटकुले हैं। एक बार हाथ में आने पर बच्चे इसे कभी नहीं भूल सकते। मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञान-वृद्धि की भी भरपूर सामग्री है। एक बार अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ॥।) स्थायी ग्राहकों से ॥-); नवीन संस्करण अभी-अभी प्रकाशित हुआ है।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

बनाना वे केवल स्कूल का पाठ-सा समझती हैं। हाँ, उपन्यास या नाटक मिल जाय तो रात भर बैठे बैठे भोर कर दें। बात-बात में बड़े-बूढ़ों से बहस करने को तैयार रहती हैं। ऐसी शिक्षा से तो हमारी पुरानी अशिक्षित स्त्रियाँ कहीं अच्छी हैं।

मैं—यह शिक्षा का दोष नहीं है, वरन शिक्षा-पद्धति का दोष है। आजकल जिस ढङ्ग से लड़कियों को शिक्षा दी जाती है, उससे लड़कियाँ यह समझने लगती हैं कि दुनिया में उनके लिए पढ़ने-लिखने के अतिरिक्त और कोई काम है ही नहीं। पुस्तकें पढ़ने के अतिरिक्त और सब काम व्यर्थ हैं। उनको शिक्षा इस ढङ्ग से दी जानी चाहिए, जिससे वह गृह-कार्य में कुशल होना और गृहस्थी को सञ्चालित करना अपना पहला कर्त्तव्य समझें।

वह—यह सब कुछ नहीं, मैं तो कहता हूँ कि लड़कियों को शिक्षा देना ही न चाहिए।

मैं—तो क्या उन्हें बिलकुल मूर्ख रक्खा जाय?

वह—नहीं, उन्हें भोजन बनाना, कपड़े सीना सिखाया जाय; घर का काम-काज करना, गृहस्थी चलाना बताया जाय।

मैं—तो यह हुआ क्या, यह शिक्षा नहीं है?

वह—नहीं, शिक्षा पढ़ाने को कहते हैं।

मैं—तो आपका क्या यह मतलब है कि और सब सिखाया जाय, ख़ाली पढ़ाया न जाय?

वह—हाँ।

मैं—क्यों?

वह—जहाँ स्त्रियाँ पढ़ने लगीं, बस वह पुस्तकें पढ़ती हैं, घर का धन्धा बिलकुल भूल जाती हैं।

मैं—ओफ़ ओह! तब तो पुस्तकें मानो घर का धन्धा भुलाने वाली हैं।

वह—निस्सन्देह!

सम्पादक जी, कहाँ तक कहूँ—वे महाशय इसी प्रकार की बातें करते रहे। दिमाग़ के लिए तो वह वैसे ही हैं, जैसे गुड़ के लिए चींटी। उनसे बातचीत करने के पश्चात कम से कम १२ घण्टे के लिए दिमाग़ बेकार हो जाता है। इन बूढ़ों के मारे कोई सुधार का काम शीघ्र नहीं होने पाता। नई बातों से, वह चाहे कितनी ही लाभदायक क्यों न हों, ये लोग ऐसे भड़कते हैं जैसे बेवक़ूफ़ घोड़ा अपने साए से। कोई व्यक्ति चाहे जितना भी विद्वान क्यों न हो, चाहे जितना ज्ञानवान हो, परन्तु जहाँ उसने कोई बात ऐसी कही, जो इनके विरुद्ध पड़ी, बस झट उसके लिए यह कह दिया जाता है—"आख़िर लौंडा ही है न! अनुभव तो क़तई है ही नहीं। हम लोगों ने दुनिया देखी है।" इन लोगों के लिए बालों का श्वेत हो जाना इस बात का प्रमाण है कि तमाम ज़माने भर की बुद्धि इन्होंने समेट कर अपने दिमाग़ में भर ली है। इसीलिए बाल सफ़ेद पड़ गए।

दाँतों का गिर जाना इस बात का प्रमाण-पत्र है कि इनके अन्दर जितनी बेवक़ूफ़ी और बुद्धि की कमी थी, वह सब दाँतों के साथ निकल गई। पार्क में इन बूढ़ों की एक टुकड़ी जमा होती है। इस टुकड़ी में कोई बूढ़ा ऐसा नहीं होता, जिसकी वयस ६० से कम हो। उस समय इन लोगों की बातें सुनने में बड़ा आनन्द आता है। एक इधर से लम्बी साँस छोड़ कर कहता है—"अजी अब तो ज़माना ही बदल गया। हमारे सामने इन बातों की कहीं छाया भी नहीं थी।" दूसरा कहता है—"हम लोगों के समय में किसी की मजाल नहीं थी कि ये बातें ज़बान पर ले आए।" तीसरे सज्जन सिर हिला कर फ़र्माते हैं—"तो जनाब, जैसी नियत है वैसी बरकत भी तो है। हम लोगों ने जितना खा-पी डाला, उतना आज लोगों को देखने तक को नसीब नहीं।" इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपनी समझ में वेद-वाक्य ही कहता है। इन भले आदमियों से कोई पूछे कि ज़माना तो सदा बदलता ही रहता है, यदि आपके बुढ़ापे में बदल गया तो कौन सी बड़ी भारी क्रान्ति हो गई? जी हाँ, आपके समय में तो आपके नाती-पोते भी नहीं थे, फिर यह कहाँ से आ गए? यदि आप प्रत्येक नई बात और नई चीज़ को इसलिए अच्छा या बुरा समझते हैं कि वह आपके समय में नहीं थी, तब तो बेड़ा पार है। एक दिन मैंने एक बूढ़े को कहते सुना—"अजी हमें क्या, हमारी तो बीत गई, हम तो दो-चार बरस के मेहमान हैं—आगे जैसा समय आ रहा है, वह जो जिएँगे, वह देखेंगे।" उनके कहने के ढङ्ग से मालूम होता था कि आगे कोई बड़ा बुरा समय आ रहा है, जिसके कारण सारी पृथ्वी उलट-पलट हो जायगी। यदि वह इस दृष्टि से कहते थे कि आगे जो समय आ रहा है, उसमें वह नहीं रहेंगे, तब तो निश्चय ही उनके लिए वह बुरा समय आ रहा है। इस प्रकार इनकी बातें चुपचाप सुनें तो आपको मालूम होगा कि संसार में चारों ओर अनर्थ और अत्याचार ही हो रहा है। संसार में बूढ़ों के अतिरिक्त और कोई समझदार आदमी नहीं है। ये बूढ़े जब पैदा हुए थे, तब पूरा सतयुग था, अब घोर कलियुग है, और जब ये न रहेंगे, तब प्रलय हो जायगा। मैं यह नहीं कहता कि सब ऐसे ही हैं, परन्तु अधिक संख्या ऐसों की ही है। विशेषकर कुछ तो ऐसे हैं कि उन्हें पिंजरे में बन्द करके रक्खे और उनकी बोलियाँ सुना करे। फिर देखिए, वह भूत, वर्तमान, भविष्य—तीनों युग का हाल किस सुन्दरता से बताते हैं। जो घोर आशावादी हो, उसे कुछ दिनों तक किसी बूढ़े के साथ कर दीजिए, फिर देखिए, वह कितना निराशावादी हो जाता है। बात भी पक्की है। मृत्यु के निकट पहुँच कर मनुष्य निराशावादी बना ही चाहे, उस समय वह आशावादी रह ही कैसे सकता है? इस दृष्टि से तो उनकी सारी बातें क्षम्य हैं। अच्छी बात है, मैं अपनी सब बातें वापस लेता हूँ, क्योंकि मुझे भी एक दिन बूढ़ा होना है। सम्पादक जी, आपको भी एक दिन बूढ़ा होना है, इस कारण आप उनके विरुद्ध कुछ न कहें, आपको मेरे सर की क़सम है!!

भवदीय,

विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

आगामी अंक में

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के एक रिसर्च-स्कॉलर द्वारा लिखित

पैलेस्टाइन की समस्या

शीर्षक एक महत्वपूर्ण लेख 'भविष्य' के १७वें अङ्क में प्रकाशित होगा और १८वें अङ्क में आप ही द्वारा लिखा हुआ

लन्दन की नेवल कॉन्फ्रेन्स (१९३०)

पर एक गवेषणात्मक लेख प्रकाशित होगा। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विद्यार्थियों को इस प्रकार के लेखों द्वारा समुचित लाभ उठाना चाहिए। 'भविष्य' के पिछले अङ्कों में भी इस प्रकार के कई महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हो चुके हैं। हिन्दी में आज तक यह अमूल्य सामग्री हमारे दुर्भाग्य से दुर्लभ थी!

रानी विद्यादेवी

[श्री॰ त्रिवेणीप्रसाद जी, बी॰ ए॰]

आज अनेकों महिलाएँ वर्तमान राष्ट्रीय आन्दोलन में जी-जान से भाग ले रही हैं। कुछ समय पहले लोगों का यह ख़याल था कि वे महिलाएँ, जो लक्ष्मी की गोद में पली हैं, जिन्होंने कभी सर्दी और गर्मी का अनुभव नहीं किया है, वे ऐसे आन्दोलनों में भाग नहीं ले सकतीं। किन्तु रानी विद्यादेवी-जैसी महिला-रत्नों ने कार्यक्षेत्र में पदार्पण कर इस धारणा को निर्मूल एवं सर्वथा निराधार सिद्ध कर दिया है; अस्तु।

पाठकों को विदित होगा कि उक्त रानी साहिबा ने गत २७वीं सितम्बर को ७ माह के लिए कृष्ण-मन्दिर की ओर पैर बढ़ा कर, किस प्रकार अपने त्याग का परिचय दिया है।

आप बेरूआ (हरदोई) के ताल्लुक़ेदार के छोटे भाई श्रीयुत जङ्गबहादुर सिंह जी की धर्मपत्नी हैं। गिरफ़्तार होने के पहले आप हरदोई कॉङ्ग्रेस-कमिटी की प्रथम अध्यक्षा थीं। आपने अपने पति को भी नमक-सत्याग्रह में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया था।

आप महात्मा जी के साथ, साबरमती आश्रम में भी रह चुकी हैं। महात्मा जी ने आपके त्याग-भाव की बड़ी प्रशंसा की थी। जिस समय महात्मा जी हरदोई गए हुए थे, उस समय आपने अपने त्याग और देश-भक्ति का अच्छा परिचय दिया था। गाँधी जी को वहाँ दान स्वरूप जितने द्रव्य मिले थे, उनमें अधिकांश रानी साहिबा के दिए हुए थे।

रानी साहिबा पर्दे की कट्टर विरोधिनी हैं। आपने स्वयं तो इसे त्यागा ही है, दूसरों को भी वे ऐसा करने के लिए सदा उत्साहित करती रही हैं।

आप चर्ख़े की भी बड़ी शौक़ीन हैं। नियमित रूप से चर्ख़ा कातना, आपकी निश्चित दिनचर्या है!

इस समय आप जेल में हैं। सम्भवतः आगामी अप्रैल मास तक आप कारागार से मुक्त हो सकें। आपका चित्र अन्यत्र दिया गया है।

* * *

लाहौल बिलाक़ूवत

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

(गताङ्क से आगे)

३

चिराग़ जलने के समय हमारी गाड़ी उन्नाव स्टेशन पर पहुँची। ख़्याल था कि तार पाकर शायद ससुर जी मेरे लिए पहिले स्टेशन ही पर आना मुनासिब समझें। क्योंकि उनके वास्ते यह ज़्यादा आसान था। मगर वहाँ कोई भी ससुराली आदमी न देख कर मैं ज़रा चकराया, मगर बाद को सोचा कि लॉजीशियन ने मेरे रवाना होने का वक़्त तार में थोड़े ही लिखा होगा। उसने सिर्फ़ इतनी ही सूचना दी होगी कि बारात में गए हैं। इसलिए ससुर जी का यहाँ न आना कोई अचरज की बात नहीं मालूम हुई।

मुझे विश्वास था कि पण्डित जी ने इस गाड़ी से आए हुए बारातियों को मधनगरा पहुँचाने के लिए स्टेशन पर सवारियाँ और आदमी तैनात कर रक्खे होंगे। मगर पिछड़े हुए बारातियों में अकेला मैं ही निकला टुटरूँ टूँ। और मुसीबत यह कि स्टेशन पर बड़ी देर तक मैं टापता रहा, मगर किसी कम्बख़्त ने मुझसे बात तक न पूछी कि तुम कौन हो। किराए के एक्के, गाड़ी-ताँगे, जो इस गाड़ी के मुसाफ़िरों के लिए जमा थे, वे भी सब हुर्र हो गए। अकेले तीन कोस जाना, वह भी नहीं मालूम किस तरफ़, इस अँधेरी रात में, उस पर न कोई सवारी न शिकारी। बड़ी तबीयत घबड़ाई। इधर श्रीमती जी की मुहब्बत दिल में अलग उधम मचाए हुए थी। उनके इतने पास पहुँच कर भला वह कब क़ाबू में रह सकती थी। बार-बार यही जी में आता था, सब ख़्याल छोड़-छाड़ कर एकदम सरपट दौड़ता हुआ सीधे ससुराल ही में जाकर दम लूँ। मगर न जाने क्या सोच कर टाँगें जवाब दे देती थीं। इतने में एक फ़ीलवान "चै मल" करता हुआ अपने हाथी को स्टेशन के पिछवाड़े खड़ा किया और वहीं से हाँक लगाई—"अरे कोऊ मधनगरा बरात में चलइया है हो ?"

मेरी जान में जान आई। मैंने लपक कर जवाब दिया—हाँ हाँ, हैं हैं हैं, हम हैं हम।

फ़ीलवान—का कहत हो ? तनि जोरे से बोलो। हम ऊँच सुनित है।

मैं—अरे ! हम जायँगे।

फ़ीलवान—का बिलार अस मेंव-मेंव करत हौ ? गटई में छेर नाहीं है ? अउर जोरे से बोलो।

मुझे गला फाड़ कर कहना पड़ा कि हम जाएँगे।

फ़ीलवान—कै जने हौ ?

मैंने इशारे से बताया कि अकेले ही।

फ़ीलवान—तू हीं हौ ? अकसरे ? बाट पड़ो। तब का जहाज अस हमार हाथी भिजवाइन ? नहके तो।

मैं—तब हम किस पर जाते ?

फ़ीलवान—तू तो फिर मेमियाय लाग्यो। मुँह से बक्कुर नाहीं फूटत है ?

मैं झुँझला कर चिल्ला उठा—अबे तो हम जाते कैसे ?

फ़ीलवान—गोड़ नाहीं रहा ? चला अउतो पैदल। एक आदमी के लिए ससुर एतत बड़ा हाथी के साँसत दिहिन। अभी दुपहरिया के हींया से खैंचियन मनई मुर्दा अस ढोए लेए गैन है। इनाम-बकसीस भाड़े में गवा, किछौं दमो नाहीं लेवे पाएन कि तुरतिन रपटाए दिहिन। हाथी नाहीं जानौ गद्दहा होय। दौड़ौते तो आयन हैं, नाहीं पहुँचबो न करित।

जला हुआ तो मैं था ही, उस पर उसकी बड़बड़ाहट से और बदन में आग लग गई। बस मैं मारे ग़ुस्से के उबल पड़ा—क्यों बे हरामज़ादे, सुअर के बच्चे ? यह क्या बेहूदा बक रहा है ? साले मारे जूतों के अभी फ़र्श कर दूँगे।

फ़ीलवान—अरे सरकार ! हम आपका थोड़े कुछू कहेन हैं। हम तो आपन दुखड़ा रोवत रहेन। का करी सरकार, दिन भर भूखन मर गएन ? अउर कौनो ससुर एक छेदामो बकसीस नाहीं दिहिस। यही लिए तो हम कब्बौं बरात के सवारी नाहीं चढ़ाइत है। मुल का करी, हम अपने मालिक का। जेही माँगत है वही का हथिया दे देत हैं।

ज़माने में क्या था ज़माना वतन का !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

न वह ज़र, न वह है ख़ज़ाना वतन का,
मिला ख़ाक में, सब ज़माना वतन का !
क़फ़स में भी मञ्ज़ूर, रहना है मुझको,
जो सय्याद हो आबो-दाना वतन का !
हमीं क्या, इसे जानती है ख़ुदाई,
ज़माने में क्या था, ज़माना वतन का !
वतन वाले सुन लें, कभी गोशे-दिल से,
असर में है डूबा, फ़िसाना वतन का !
ज़माना इसे ख़ूब दिल में समझ ले,
कभी आएगा, फिर ज़माना वतन का !
कभी थी, कभी था, ज़माने के लब पर—
कहानी वतन की, फ़िसाना वतन का !
ज़माने की सर पर बलाएँ भी आईं,
हुआ जब से दुशमन, ज़माना वतन का !
यह बिस्मिल से कहते हैं अहबाबे "बिस्मिल"
लिखा ख़ूब तुमने तराना वतन का !

ख़ैरियत हो गई कि इस वक़्त ग़ुस्से में मैं डाँट-डपट कर गया। नहीं तो यह बेहूदा न जाने मुझे कितना परेशान करता। सच है, नीच नीचता ही से ठीक रहते हैं। लात के देवता कभी बात से मानते नहीं। एक ही घुड़की में हज़रत कैसे ढीले पड़ गए ? फिर भी मेरी तबीयत इससे घबराती ही रही। बदमाश तो बदमाश, कहीं बदमाशी किसी वक़्त कर ही बैठे, कौन ठिकाना ? इसी ख़्याल से मैं हाथी पर सामने की तरफ़ मुँह करके आगे नहीं बैठा। क्योंकि उस जगह हाथी की सूँड़ पहुँचने का बहुत अन्देशा रहता है। दूसरे यह भी खड़का था कि फ़ीलवान का इशारा पाकर हाथी अपनी सूँड़ में पानी भर कर मुझ पर न छोड़ दे। यही सब सोच-विचार कर मैं दुम के पास पीछे की ओर मुँह करके उकड़ूँ बैठा और हर क़दम के झोंके में लट्टू की तरह इधर-उधर लुढ़कने लगा। ईश्वर जाने उस जगह पर कोई बिजली का तार लगा हुआ था या हाथी ही कम्बख़्त अपना पिछला धड़ नचाता हुआ चलता था कि मैं किसी तरह अपने को सम्हाल ही नहीं पाता था। उस पर वह बदमाश फ़ीलवान अपने हाथी की बदमाशी का जो हाल बयान करने लगा तो मेरे प्राण सूख गए। कहने लगा—"बाबू जी जानयो बीस बरस से हम यू हाथी पर हन। हम ही एका चलाय पाइत है। अउर कौनो के मान के नाहीं है। एक दाँईं एक साहब सिकार के लिए एका जबरदस्ती मँगवाए पठइन। हम रहेन नाहीं। चरकटा का लेइ जाय के पड़ा। बस बीच ढर्रे में तो हथिया बिगड़ा। चरकटा का अपने गरदन पर से टाँग पकड़ के खींच लिहिस। और साहब झट पेड़े से लटक गए। नाहीं उनहूँ के अचार निकारत। तब्बे से कोऊ एकरे किनारे नाहीं जात है। मल मल चै !"

मैं सिकुड़ कर ईश्वर का नाम लेता हुआ दुम की तरफ़ और सरक गया। और इस डरावने प्रसङ्ग को बदलने के लिए उससे पूछा—"अब कितनी दूर है ?" मगर उसने सुना कुछ और ही। और लगा अपना राग अलापने—"का पूछेयो बरात कहाँ टिकी है। टिकिहै कहाँ, बस बगिया में। देहात में एतिक मनई के लिए कहूँ महल बना होत है ? दुई-चार जने होंय तो कौनो दुरवाहे के बखरी खाली कराय दीन जाए। मुल सैकड़न मनई के लिए बस बगिए सहारा जानो। मल ! मल ! ठोकर ! हाँ गउवाँ में आज एक अउर बरात आई है। ठकुरन के होय। भया बुद्धूसिंह के हीयाँ। तौन बरगदवा वाला पेड़ वही लोग छेकाए हैं। मुल ऊ बरात नीक। गावँ के होय तो का ? उनके हीयाँ सुनित है नाचो होई। पतुरिया बुलावे के लिए लढ़िया पठइन हैं। अउर पाँड़े के हीयाँ बस टिड्डी अस सहर के मनई फाट पड़े। न नाच न फाच, न इनाम न एकराम। बात अलबत्ता पसेरी-पसेरी भर के सुन लो। अउर लड़ाई के हवाल न पूछो। छिन-छिन भर पर आफ़त। अवते सो हुकुम जनाइन कि छे-छे सेर के हिसाब से दस घोड़ा के दाना पठै दो। पाँड़े कहिन कि घोड़ा के कहे एक गदहो तो नाहीं लायो है। दाना का करिहो लैके। यही पर भवा उलझन। यह लोग कहिन नाहीं लायन नाहीं सही। हमरे हीयाँ दाना लीन जात है। हम बिना लिहे मानब न। पाँड़े कहिन अच्छा लाहो। जब ताँईं भाँवर न होए जाई, दमड़ी के चीज न देब। भल किहिन। पानी तक पिए के नाहीं दिहिन। अब भले भूखन फटकत होइहैं। ओह पर सहर के मनई बगिया में रहे के हवाल का जानें ? कइयू जने के कमला लाग गा। तौन खजुआवत-खजुआवत देहियाँ भर आपन नोच डारिन। सुथन्ना-उथन्ना उनके सब ढोल होइगा। ई नाहीं जानत रहे कि देहाते में जूता धरे काँधे पर, पैजामा बाँधे मूँड़े पर, तब गुजर होत है। मल ! मल ! मल ! का कह्यो ? तू तो अस भिन्न से बोलत हो, अउर ओहपर ओहर मुँह किए हो, सुनी का हम आपन मूँड़ ? पानी ? हाँ आज बरसा है। बरसत में तो अउर छीछालेदर भवा। सभै भीग गए। कइयू जने धारी अउर भुसैला में घुसर गए। एक जने के बैल मारिस तौन पड़ा चिल्लात रहे। सोय गयो बाबू जी का ?"

मैं चुप रहा। इस बेहूदे के मुँह लगना ठीक नहीं मालूम हुआ। उस पर जब कलेजे में चिल्लाने का दम हो तब तो कोई इस बहरे से बात करे। वह कम्बख़्त इसी तरह रास्ते भर बड़बड़ाता रहा। रस्सा पकड़े-पकड़े मेरा हाथ कला गया। और झकझोरों से सारा बदन टूटने लगा। मारे सुस्ती के आँख अलग बन्द होने लगी। एकाएक मेरी पीठ पीछे की तरफ़ झुकी, और हाथी के पैरों से चभाचभ की आवाज़ आने लगी। अँधेरे में एक दफ़ा ग़ौर से देखा तो मालूम हुआ कि हाथी एक नाले में उतर रहा है। दूसरे किनारे के चढ़ाव पर मैं हाथी की दुम की तरफ़ झुक पड़ा। झोंके में हाथ का रस्सा छूट

गया। हाथी की चाप के चभाचभ के साथ एक भचाक सी आवाज़ और हुई। और वैसे ही जाना कि हाय! हाय! दलदल के कीचड़ में मैं खोपड़ी के बल एकदम उल्टा खूँटे की तरह ग़प से गड़ गया।

४

आँख खुली तो ठीक अपनी नाक की सिधाई में आसमान के तारे दिखाई पड़े और अपने को नाले में चित्त लेटा हुआ पाया। सिर्फ़ सर पानी के बाहर ज़रा किनारे पर था और बाक़ी समूचा धड़ पानी के भीतर। समझ में नहीं आया कि मैं ऐसी जगह इस फ़ैशन से क्यों लेटा हुआ हूँ। मगर जब कुछ होश ठिकाने हुए तो याद पड़ा कि ओ हो! मैं तो हाथी पर से गिरा था। यही ग़नीमत हुई कि पानी से ज़रा ही हट कर दलदल में मेरी खोपड़ी धँस गई थी, नहीं तो वह बेचारी भी इस वक़्त पानी के नीचे ही आराम करती। और बेहोशी में उसीके भीतर दम घुट कर मैं हमेशा के लिए ठण्ढा हो जाता। यों तो कीचड़ में भी यही बात हो सकती थी। मगर मालूम होता है कि गिरने के झोंके में शायद मैं बाद को कलाबाज़ी खा गया या मेरे सारे बदन का बोझ टाँगों की तरह मेरी खोपड़ी सम्हाल न सकी, इसीसे वह दलदल से उखड़ गई और इस तरह बेसहारे का होकर मेरे धड़ को पानी में लेट जाना पड़ा है। मगर मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि यह बातें मेरे अनजाने हुई होंगी। क्योंकि होश में मुझसे कभी ऐसी बेवक़ूफ़ी हो नहीं सकती थी।

पानी से किसी तरह निकला तो। मगर चेहरे और खोपड़ी पर एक अजब कनटोप चढ़ा हुआ पाया। टटोला तो जाना कि कीचड़ है। लाहौल बिलाक़ूवत! ख़ैरियत थी कि अँधेरा इतना था कि हाथ तक सुझाई नहीं देता था, वरना देखने वालों का ख़्याल तो अलग रहा, मुझे ख़ुद ही बीच धारा में जाकर कपड़े पहने डुबकियाँ लगाते शर्म मालूम होती। न जाने किस अक़्ल के दुश्मन ने हाथी की सवारी ईजाद की है। चढ़ते ही प्राण आसमान को चला जाए। बैठो तो बैठना आफ़त। बदन की चूल-चूल बिखर जाए। हौलदिल हो जाए, दिमाग़ चकरा जाए। जो कहीं चढ़ाव-उतार मिल जाए तो बस सीधे मौत के मुँह में। न एक इञ्च इधर और न एक इञ्च उधर। भला ऐसा जानवर सवारी के लिए रखना चाहिए? हरगिज़ नहीं; इसे तो फ़ौरन मार कर खा जाना चाहिए।

अब लीजिए, हाथी का कहीं भी पता नहीं। अँधेरे में जिसे हाथी समझ कर पास जाता था वह कोई न कोई पेड़ ही निकलता था। यह बड़ी मुसीबत हुई। क्योंकि मेरा असबाब उसी पर था और भीगे कपड़े पहने रहना मेरे लिए अब ग़ैर-मुमकिन हो गया। ईश्वर जाने इतनी देर तक पानी में पड़े रहने से मेरे बदन की नस-नस में ठण्ढक समा गई थी या सफ़र की थकान और हाथी के झकझोरों से मुझे सचमुच जूड़ी आ गई कि मैं बजते हुए तार की तरह एकाएक थरथराने लगा। हाथी पर मुझे अब भूल कर भी चढ़ने का शौक़ नहीं था, मगर कपड़े बदलने के लिए उसका ढूँढ़ना तो ज़रूरी था। पर ढूँढ़ता किधर? हर तरफ़ अँधियारा। ज़रा सी बाइसिकिल जो होती है उसमें अगर रात में लम्प न हो तो चालान हो जाए, मगर इतने बड़े पहाड़ ऐसे जानवर की दुम में लालटेन भी नहीं बाँधी जाती। सरासर अन्धेर है कि नहीं? एक तो हाथी साला योंही काला, उस पर उसके पैरों में नाल भी नहीं कि उसकी कुछ आहट ही मिले, तीसरे फ़ीलवान भी मिला तो बदमाश, बहिरा और बेवक़ूफ़ तीनों। जिसे हाथी पर से आदमी लुढ़क जाने की ख़बर न हो सकी तो वह अब चिल्लाने से कहाँ सुन सकता था? चिल्लाने के लिए दम भी तो चाहिए। और यहाँ सारा ज़ोर बदन की कँपकँपी में घुसा हुआ था। ऐसे ही गाढ़े वक़्त पर ईश्वर याद आते हैं और वह भी ऐसे मौक़ों पर अपनी ईश्वरीय मदद पहुँचा कर अपने ईश्वरपन का झट सबूत दे देते हैं। बड़े उस्ताद हैं, ताकि दुनिया में उनका मान रहे। इसीलिए मुझे इधर-उधर कटे हुए कनकौवे की तरह भटकते-भटकते एक तरफ़ चूँ-चूँ की आवाज़ सुनाई दी, उसके बाद आदमियों की भनक मालूम हुई। गिरता-पड़ता पास पहुँचा तो एक बैलगाड़ी जान पड़ी। धन्य भाग! पूछने पर पता चला कि ठाकुर साहब की बरात में नाचने के लिए उस पर बी नसीबन मखनगरा ही जा रही हैं। मगर अफ़सोस, पाँच रुपए देने पर भी साज़िन्दों के पास कोई फ़ालतू जोड़ा मर्दाने कपड़े का न निकला। आख़िर बी नसीबन को दया आई। उसके नाचने वाले कपड़े अलग बँधे थे। उस बेचारी ने उसी को मुझे देकर उस वक़्त मेरी जान बचाई। मरता क्या न करता? इस जूड़ी में मेरे भीगे हुए कपड़ों से वे लाख दर्जे अच्छे थे। अब जाकर कलेजे में थोड़ी सी गर्माहट पहुँची। और जाना कि मुझ पर सचमुच बुख़ार चढ़ा हुआ है। इसीसे सिर-दर्द के मारे मुझसे गाड़ी पर बैठा न रहा गया। सिकुड़ कर किनारे लेट गया। कुछ ही देर में मुझे दीन-दुनिया का कुछ भी होश नहीं रहा।

एकाएक हल्ले-गुल्ले से मेरी आँख खुली। मगर 'किरसन लाइट' की रोशनी में मेरी आँखें चौंधिया गईं। मालूम हुआ कि कोई मुझे ज़बरदस्ती गाड़ी पर से उतार कर एक तरफ़ घसीटे लिए जा रहा है। मेरे चारों तरफ़ आदमियों की भीड़ लगी हुई है। और सभी जोश में चिल्ला रहे हैं कि—"ठाकुरों की ऐसी-तैसी! उनके यहाँ के बाराती नाच देखें और हम लोग मक्खी मारें?" "वाह! ऐसा नहीं हो सकता। यहाँ भी नाच होना चाहिए।" "दो रण्डियाँ तो आई हैं। एक उन लोगों के लिए छोड़ दो और एक को यहाँ नचाओ।"......"हाँ-हाँ, ज़रूर नाच होगा।"......"बारात में पण्डिताई नहीं चल सकती।" "......आख़िर हम लोगों को बुलाया क्यों?" "हम तो ज़रूर नाच देखेंगे।"...... "बस-बस इसी को ले चलो।" "......हाँ-हाँ, यह उससे अच्छी है। अच्छे कपड़े पहने हुए है। अजी ज़बरदस्ती ले आओ।"......

इतने में कोई बोला—"अरे! यह तो रण्डी नहीं, कोई मेहरा मालूम होता है।"

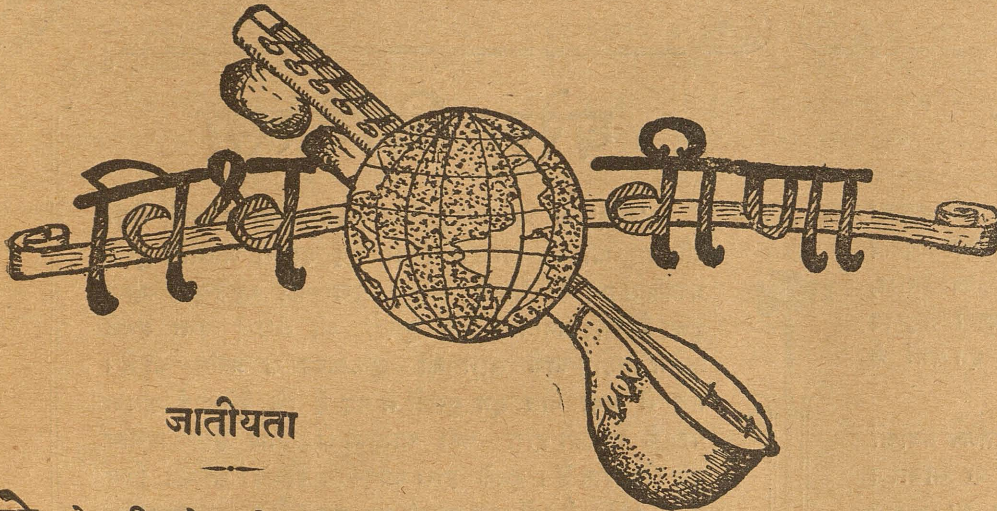
तब तक मेरे सर से चादर किसी ने खींच ली। वैसे ही सामने ससुर जी पर नज़र पड़ी। क्योंकि नाच देखने वालों में इस समय अगुवा वही हो रहे थे। फिर तो बौखलाहट में मेरे और उनके दोनों के मुँह से एक-दूसरे के स्वागत के लिए एक ही शब्द निकला :—

"लाहौल बिलाक़ूवत!"

भला ऐसा भी शुभागमन किसी ने सुना होगा?

(क्रमशः)

*   *   *



जातीयता

गोलमेज़ परिषद ने जातीयता के भावों को ख़ूब प्रोत्साहित किया है। गोलमेज़ में भेजे गए जातीयता के समर्थकों को भारत में तो कोई पूछता भी न था, पर अब इसके ज़रिए उन्होंने भारत के राजनैतिक गगन में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। आज भारत तथा अन्य देशों की जनता उनके कार्यों की ओर बड़े ग़ौर से देख रही है। इन महाशयों ने भी ख़ूब रङ्ग दिखलाया है। इन्होंने जातीय माँगों को इतना बढ़ा दिया है, कि यदि उन्हें पूरा कर दिया जावे, तो राष्ट्रीयता का पता भी न चलेगा। जिन जातीय नेताओं को लॉर्ड इर्विन ने बड़ी खोज के बाद इस अवसर के लिए चुना है (और उनके कुछ सहयोगी जो भारत में मौजूद हैं) वे अपना काम बख़ूबी कर दिखा रहे हैं। और अभी तक विपत्ती दल ने इस आक्रमणकारी जातीयता का विरोध नहीं किया है। इसमें शक नहीं, कि यदि लॉर्ड इर्विन अपने ख़रीते में जातीयता की माँगों के सामने सर न झुकाते, तो यह जातीयता का आन्दोलन इतना ज़ोर न पकड़ता। जातीयता को तो जितना ही सन्तुष्ट करने का प्रयत्न किया जावे उतनी ही वह बढ़ती है।

ज़रा अखिल भारतवर्षीय मुस्लिम लीग की वार्षिक बैठक के अवसर पर दिए हुए सर मुहम्मद इक़बाल के व्याख्यान पर ध्यान दीजिए। जातीयता के भावों को भड़काने के लिए आपने अपनी सारी कल्पना-शक्ति ख़तम कर दी है। "इस्लाम का सङ्गठन" ही उनका आदर्श है। और इस आदर्श को कार्य-रूप देने के लिए वे पञ्जाब, पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त, सिन्ध तथा बलूचिस्तान में एक सुदृढ़ मुस्लिम राज्य की स्थापना करना चाहते हैं। वे कहते हैं कि "चाहे हम स्वराज्य की स्थापना ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर करें, चाहे साम्राज्य से अलग होकर; पर एक बात निश्चित है, वह यह कि भारत के मुसलमानों को पश्चिमोत्तर में एक मुस्लिम राज्य की स्थापना करनी पड़ेगी।"

ऐसे लोगों से साफ़-साफ़ कह देना चाहिए, कि भारत में आज ऐसा कोई स्वदेश-प्रेमी नहीं है, जो आपके विचारों पर ज़रा भी ध्यान देगा। स्वदेश-प्रेमी हिन्दुस्तान के अन्दर न "मुस्लिम राज्य" की स्थापना होने देंगे, न "हिन्दू-राज्य" की। "सङ्गठित मुस्लिम राज्य" का आदर्श वर्तमान प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों के विरुद्ध है, आधुनिक संसार के राजनैतिक विचारों के विरुद्ध है और सब से बड़ी बात तो यह है, कि वह भारत के राष्ट्रीय विचारों के विरुद्ध है। आज भारतवर्ष स्वाधीनता चाहता है, आज वह राष्ट्रीय तथा व्यक्तिगत स्वाधीनता के लिए लड़ रहा है। आज वह उस स्वाधीनता का भूखा है, जिसमें वह आत्मोन्नति कर सके और स्वच्छन्दता से अपने भावों को प्रकट कर सके। जहाँ तक आत्मोन्नति और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का सम्बन्ध है, स्वाधीन भारत प्रत्येक हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, जैन, पारसी तथा ईसाई की माँग का समर्थन करेगा, जिससे वे भारत में रह कर अपनी संस्कृति की उन्नति कर सकें। पर यदि सर मुहम्मद इक़बाल कहें, कि इसके लिए एक "सङ्गठित मुस्लिम राज्य" स्थापित किया जावे तो यह तो असम्भव है। इस मत-विशेष के समर्थन में उन्हें आज भारत की सारी राष्ट्रीय शक्तियों का सामना करना पड़ेगा। और उन्हें यह मालूम होना चाहिए, कि उन्हीं के धर्मावलम्बी भी इस विरुद्ध-दल में काफ़ी संख्या में मौजूद हैं, इसके प्रमाण के लिए बङ्गाल के मुसलमानों द्वारा निकाला हुआ घोषणा-पत्र मौजूद है। इसमें वे कहते हैं कि "कुछ धनी मुस्लिम भारत की ग़रीब जनता को बहकाने का प्रयत्न कर रहे हैं। हम इसे चुपचाप नहीं देख सकते। मुस्लिम जनता जातीय चुनाव के विरुद्ध है। वह जातीय चुनाव कभी नहीं चाहती, इसमें उसका नुक़सान है।" यह राष्ट्रीयता का सिंहनाद है, इसका मतलब यह नहीं कि हम लोगों को हिन्दू-मुस्लिम समस्या हल न करनी पड़ेगी। जातीयता तथा अल्प-संख्यक जातियों के प्रश्न को हमें ठीक अवश्य



"सङ्गठित मुस्लिम राज्य" का स्वप्न देखने वाले, सर मोहम्मद इक़बाल, बार-ऐट-लॉ; एम० एल० सी०

करना पड़ेगा, पर इस कार्य को सफलता से करने के लिए भारत के सच्चे प्रतिनिधि राष्ट्रीय भाव वाले हिन्दू तथा मुस्लिम नेताओं की आवश्यकता है। इस कार्य को पराधीन भारत की सरकार द्वारा बने हुए जातीयता के समर्थक हिन्दू या मुस्लिम सज्जन नहीं कर सकते। इन प्रश्नों को हल करने के लिए सब से पहिले स्वाधीनता प्राप्त करने की आवश्यकता है। और सब प्रश्न तो इसके बाद तय होंगे। सर मुहम्मद इक़बाल को यह याद रखना चाहिए, कि स्वाधीनता प्राप्त करने का केवल एक मार्ग है। वह है आत्म-बलिदान ! स्वाधीनता पर प्राण देने वाले देश के विरुद्ध यदि साम्राज्य तथा जातीयता की सारी शक्तियाँ लगा दी जावें, तब भी वे उसे अपने क़ाबू में नहीं रख सकतीं !!

—'लिबर्टी' (अङ्गरेज़ी)

* * *

'भीरु तथा तिरस्कृत'

गत तीसरी जनवरी के सहयोगी 'इण्डियन सोशल रिफ़ॉर्मर' में एक पत्र छपा है, जिसका भावानुवाद इस प्रकार है :—

महाशय,

आपने पञ्जाब गवर्नर पर किए गए आक्रमण के सम्बन्ध में जो आलोचना की है, उसको पढ़ कर मुझे बहुत दुःख हुआ है। यह बहुत ठीक है कि "यह एक दुःखार्द्र नवयुवक का पागल कृत्य है, जिसको कि ठीक निशाना लगाना भी नहीं आता था।" परन्तु आप इसे "भीरु तथा तिरस्कृत" कैसे समझते हैं ? सो मेरी समझ में नहीं आया। क्या आपका आशय यह है, कि यह कार्य ऑर्डिनेन्सों तथा लाठी-प्रहारों से अधिक "भीरु तथा तिरस्कृत" है ? क्या आपके विचार में लाठी-प्रहार बहुत साहसपूर्ण तथा प्रशंसनीय कार्य है ?

समय तथा स्थान का चुनाव इस कार्य को साधारणतया से अधिक किस प्रकार घृणित कर देता है ? यह दूसरी बात है जो मेरी समझ में नहीं आई। क्या आज़ाद मैदान तथा शरद्-ऋतु का सुहावना प्रभात लाठी-प्रहारों के लिए बहुत उपयुक्त हैं ? क्या शिमले की चोटी तथा बड़े दिनों का शुभ अवसर ऑर्डिनेन्सों के लिए बहुत ठीक है ?

मैं मानता हूँ, कि यह "एक भ्रान्त युवक का पागल कृत्य है।" यह सच है कि यह कॉङ्ग्रेस के धर्म के विरुद्ध है; यह सम्भव है कि यह अपने उद्देश्य की पूर्ति में लाभ से अधिक बाधा पहुँचाएगा; परन्तु क्या इसी कारण से यह 'भीरु तथा तिरस्कृत' हो गया ? दलील के लिए मान लीजिए कि सत्याग्रह असफल हो जाय (ईश्वर ऐसा न करें); फिर क्या कीजिएगा ? अच्छा मान लीजिए कि त्रासवाद (Terrorism) भी बेकार है। परन्तु क्या ऑर्डिनेन्सों, लाठी-प्रहारों, तलवारों, बन्दूक़ों, हवाई जहाज़ों से गिराए गए बमों तथा जेल के अत्याचारों को चुपचाप भेड़ों की नाईं नत-मस्तक होकर सहने की अपेक्षा, दर्प का साहसपूर्ण मुक़ाबला करना, अतीव गौरवमय तथा सुन्दर न होगा ?

मेरा आशय स्पष्ट है। मैं हिंसा का पक्ष समर्थन बिना कारण के नहीं करता हूँ। मैं अत्याचारी को त्रासित करने को "भीरु तथा तिरस्कृत" नहीं समझता। क्या डॉक्टर का ऑपरेशन हिंसा नहीं है ? क्या 'फ़िनाईल' से विषैले जन्तुओं का मारना हिंसा नहीं है ? क्या इसी कारण से उनका भी बहिष्कार करना होगा ? सत्याग्रह भी क्या है ? यह भी एक दलील है, विरोध है। यह विचारवान पर असर करेगी, परन्तु अँधेरी रात के लुटेरों तथा भयानक जङ्गली भालुओं के विरुद्ध निष्फल होगी।

मैं भी इस कृत्य को इतना ही निन्दनीय समझता हूँ, जितना कि आप; परन्तु मेरा विचार यह है और देश—देश नहीं, वरन समस्त संसार गवर्नर पर किए गए आक्रमण से अधिक आक्रमण के कारणों को घृणित समझेगा। अन्त में, इस 'भीरु तथा तिरस्कृत' कार्य का कारण क्या है ? कॉङ्ग्रेस ? जिसके कारण से सैकड़ों सिर प्रति दिन फूटते हैं और सहस्रों मनुष्य चुपचाप नित्य जेलों को भरते हैं ? अथवा महात्मा ? जो कि अहिंसा का ही अवतार है, और जो सम्प्रति पिंजड़े में बन्द हैं ? अथवा अत्याचारी बेलगाम की सरकार ? चाहे इसे जो भी कहो—मनमानी राज्य-पद्धति, ऑर्डिनेन्स, अथवा लूट-मार !!

बम्बई
१ जनवरी, १९३१

आपका
'मैन' (आदमी)

[विशेषण उपयुक्त थे। यूनिवर्सिटियाँ पठन-पाठन का स्थान हैं और चान्सलर उपाधि-वितरण के समय विद्यार्थियों की शुद्ध हृदयता तथा आत्मगौरव पर विश्वास करके ही वहाँ उपस्थित हुआ था। आक्रमण एक स्थान-विशेष पर किया गया। अस्तु, असाधारण घृणा प्रकट करने के लिए वह विशेषण रक्खे गए थे, जिन पर कि पत्र-लेखक ने इतना रोष प्रगट किया है। पुलिस का कॉङ्ग्रेस वालों के प्रति बर्ताव दूसरा प्रश्न है। हमने इस सम्बन्ध में भी अपना मत समय-समय पर प्रकट किया है !

—सम्पादक इ० सो० रि०]

* * *

बर्मा में क्रान्ति की आग

बर्मा से जो समाचार आ रहे हैं, उनसे पता चलता है, कि पिछले सप्ताह में थरावाडी में सरकार के विरुद्ध सशस्त्र क्रान्ति की आग भड़क उठी है। सरकार की ओर से इस सम्बन्ध में जो 'कम्यूनिक' छापा गया है, उससे पता चलता है, कि क्रान्ति बहुत सङ्गठित थी। क्रान्तिकारियों ने यूरोपियन तथा बर्मी राज-कर्मचारियों को मृत्यु के घाट उतारा, जङ्गी शस्त्रालयों को लूटा तथा सरकारी मकानों को आग लगाई।

हमें यह पता लगा कर कुछ इतमीनान हुआ है, कि नई क्रान्ति राजनैतिक नहीं है, तथा उसका देश के राजनैतिक मामलों से रत्ती भर भी सम्बन्ध नहीं है। गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के बर्मी प्रतिनिधि यू बा पे के कथनानुसार बर्मा की क्रान्ति राजनैतिक नहीं, किन्तु आर्थिक है और यह केवल चावल के भाव में असाधारण कमी हो जाने से फूट पड़ी है।

गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के एक दूसरे प्रतिनिधि श्री० घायन ने क्रान्ति का कारण वर्णन करते हुए कहा है, कि क्रान्ति ने जिन विचारों को प्रकट किया है, वह बड़े महत्वपूर्ण हैं। मेरे विचार में "सरकार ने बर्मा में चावल का भाव गिरा देने की जो पॉलिसी चलाई है, वह ग़लत है। क्योंकि इसका अर्थ यह है कि सर्वसाधारण को, थोड़े से यूरोपियन मिल वालों के लाभ के लिए, नीचा दिखाया जाय, ताकि वह थोड़े दाम पर विदेशी व्यापारियों को चावल बेच सकें। चावल के भाव की बागडोर जिनके हाथ में है, वह सरकारी पिट्ठू हैं। आगे चल कर श्री० घायन ने यह भय प्रकट किया है, कि जिस प्रकार से ऑस्ट्रेलिया तथा कैनेडा के गेहूँ के मामले को तय किया गया था, यदि उसी प्रकार से बर्मा में चावल का मामला तय न किया गया, तो झगड़ा बढ़ जाने का भय है।

हमें आशा है कि सरकार के बड़े-बड़े कर्मचारी बर्मा का झगड़ा मिटाने के लिए इन शब्दों पर अवश्य ध्यान देंगे।

—"रियासत" (उर्दू)

* * *

दण्ड या परिशोध

श्रीयुत वल्लभभाई पटेल को बम्बई के प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने कारावास दण्ड दिया है। वह कुछ आश्चर्यजनक नहीं। इस अन्तिम दण्ड-विधान में केवल विचित्रता यह है कि पुलिस ने १७ (२) क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार अपराध सिद्ध करने के लिए रीमाण्ड पर रीमाण्ड लिया। यदि अभियोग एक्ट की धारा १७ (१) के अनुसार चलाया जाता, तो अधिक से अधिक दण्ड छः मास का था। मैजिस्ट्रेट के कथनानुसार जो प्रमाण १७ (२) के अनुसार अपराध सिद्ध करने के लिए पेश किए गए हैं, वे सब खोखले हैं। तो भी उसके विचार में कई ऐसे साङ्केतिक अपराध बम्बई हाईकोर्ट के निर्णय के अनुसार इस बात के लिए पर्याप्त हैं, कि उसकी दूसरी धारा के अनुसार नौ मास तथा पहली के अनुसार छः मास (दोनों कारावास-दण्ड एक साथ आरम्भ) का दण्ड दिया जाय। वर्तमान दशा में श्री० वल्लभभाई पटेल को दण्ड इस कारण से दिया गया है, कि उन्होंने कॉङ्ग्रेस के सभापतित्व का साङ्केतिक भार ग्रहण किया और कॉङ्ग्रेस की कार्य-पद्धति के अनुसार क़ानून-विरुद्ध ठहराई गई कार्यकारिणी समिति (Working Committee) के भी वे सभापति हुए।



सरदार वल्लभभाई पटेल

कॉङ्ग्रेस तथा उसकी सहायक समितियों को वर्तमान समय में इस प्रकार से तङ्ग करने की मूर्खता पर हम कई बार पहले भी आलोचना कर चुके हैं

—"हिन्दू" (अङ्गरेज़ी)

* * *

"कोउ नृप होय हमैं का हानी"

आजकल भारत की जनता तो दूसरे काम में लगी हुई है और उसे भारत के पदाधिकारियों के आने-जाने के विषय में बहुत कम फ़िक्र है। परन्तु जो मनुष्य इस विषय पर ज़रा भी ध्यान देते हैं, उनको लॉर्ड इरविन की जगह पर लॉर्ड वेलिङ्गडन की नियुक्ति का समाचार सुन कर कुछ ताज्जुब होगा। जो लोग इस विषय में कुछ जानकारी रखते थे, उन्होंने इस सम्बन्ध में सर मेलकम हेली से लेकर मिस्टर मैकडॉनल्ड तक का नाम लिया था, पर लॉर्ड वेलिङ्गडन का नाम तो इनमें से किसी को सूझा तक न था। इसका सब से बड़ा कारण तो यह था, कि ब्रिटिश-सरकार ने एक रूढ़ि स्थापित कर दी थी, कि भारत का भूतपूर्व गवर्नर वाइसराय के पद के लिए नियुक्त न किया जावे। पर आख़िर यह रूढ़ि की शृङ्खलता तोड़ी गई और लॉर्ड वेलिङ्गडन भारत के वाइसराय होकर शीघ्र ही यहाँ पधारेंगे। इस नियुक्ति के विषय में कमाण्डर केनवर्दी कहते हैं कि "हमें यह देख कर बहुत अफ़सोस है कि पार्लामेण्ट का सब से बलिष्ठ दल इस पद के लिए अपना प्रतिनिधि नहीं भेज सका।" दूसरी तरफ़ भारत की जनता कहती है, कि "यह बड़े अफ़सोस की बात है कि भारत, जो पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहा है, अभी तक अपने शासन को चलाने के लिए और अपनी नीति का परिपालन करने के लिए अपने वाइसराय की नियुक्ति नहीं कर सकता।" कुछ और भारतवासी श्रीयुत चिन्तामणि की तरह उदास भाव से कहते हैं कि "यह नियुक्ति अच्छी है या बुरी, यह कहना मुश्किल है; क्योंकि लॉर्ड वेलिङ्गडन से बेहतर मनुष्य भी मौजूद हैं, जो इस पद के लिए नियुक्त किए जा सकते थे और इनसे ख़राब भी मनुष्य मौजूद हैं, जो कि सम्भवतः इस पद के लिए चुने जा सकते थे।"

श्रीयुत बी० शिवराव की उक्ति में कुछ तत्व अवश्य है। वे कहते हैं—"इस समय किसी व्यक्ति-विशेष की नियुक्ति पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। लॉर्ड वेलिङ्गडन अपने कार्य में सफल होंगे या नहीं, इस प्रश्न का उत्तर उसी समय दिया जा सकता है, जब यह मालूम हो जावे कि भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य मिलेगा या नहीं।" वे सच कहते हैं। यदि भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य मिल गया, तो यह आशा है कि लॉर्ड वेलिङ्गडन अपने कार्य को ठीक तरह से चला सकेंगे, पर यदि भारत को यह अधिकार न मिला तो लॉर्ड वेलिङ्गडन चाहे अपनी सारी बुद्धि और सारी शक्ति लगा देवें, तब भी भारत की प्रजा उनके शासन-काल में शान्ति से न रहेगी। बम्बई के निवासी लॉर्ड वेलिङ्गडन से पूर्णतया परिचित हैं। इसमें शक नहीं कि और लोगों की तरह उनमें भी कुछ सत्यप्रियता अवश्य है। पर यह भी माना जा सकता है, कि जब वे पहिले भारत में गवर्नर थे तब उन्होंने भारत की दशा सुधारने का प्रयत्न किया हो। पर वे अक्सर ऐसे छोटे-छोटे अधिकारियों के कहने में आ जाते थे, जो कि भारत की उन्नति के विरोधी थे! इसीलिए वे बम्बई की जनता से असन्तुष्ट रहे और बम्बई की जनता उनसे।

अब तो समय ही दूसरा है। इस समय भारत की राष्ट्रीयता की लहर को कोई रोक नहीं सकता। यदि लॉर्ड वेलिङ्गडन न्याययुक्त शासन चलावेंगे तब भी भारत का फ़ायदा है और यदि वे दमन-नीति का सहारा लेंगे, तब भी भारत का फ़ायदा है। क्योंकि उससे अशान्ति की अग्नि और भी भड़केगी। चाहे जो आवे या जावे, अब तो राष्ट्रीयता का धारा-प्रवाह रुक नहीं सकता। वह तो अपने ध्येय को पाकर ही रुकेगा!

इङ्गलैण्ड के लिबरल तथा कन्ज़रवेटिव दल के समाचार-पत्र इस नियुक्ति से बहुत ख़ुश हैं। उन्हें यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई है कि कोई मज़दूर-दल वाला इस पद के लिए नहीं चुना गया है। कुछ भारतवासी भी, जो आजकल इङ्गलैण्ड में हैं, इस नई नियुक्ति से बहुत ख़ुश हैं। पर इससे क्या, वे तो प्रत्येक नए पदाधिकारी की तारीफ़ करने के लिए तैयार रहते हैं। भारत के असली प्रतिनिधि तो जेल में हैं। और असल में उनसे इस नई नियुक्ति से कुछ मतलब भी नहीं है। वे तो जानते हैं, कि अभी उन्हें ऑर्डिनेन्सों का मुक़ाबला करना है। फिर ऑर्डिनेन्स निकालने वाला कोई भी व्यक्ति-विशेष हो, इससे क्या। और जब सन्धि का मौक़ा आवेगा, उस समय भी उन्हें कोई व्यक्ति-विशेष से मतलब नहीं है। वे कोरे शब्दों में कभी विश्वास ही नहीं करते, इसलिए वे ऊपरी सत्य-प्रियता या धार्मिकता के फन्दे में फँस ही नहीं सकते। रही उन लोगों की बात, जो कि कॉङ्ग्रेस के बाहर हैं, सो वे तो अभी से तारीफ़ों के पुल बाँधे दे रहे हैं। श्रीयुत नटेसन कहते हैं कि "लॉर्ड इरविन ने अपने उदार-चरित द्वारा भारत को महान सङ्कट से बचाया है और मैं समझता हूँ कि लॉर्ड वेलिङ्गडन भारत को और उपनिवेशों की उच्च श्रेणी तक पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे।" इस विचार को प्रकट करते समय क्या नटेसन महोदय ने लॉर्ड इरविन के

(शेष मैटर ४० वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

मनोरञ्जन और शिक्षा

तम्बाकू से हानि

तम्बाकू भारत की निजी उपज नहीं है। विदेशियों के पदार्पण के साथ-साथ देश में इसका प्रचार और इसकी उपज बढ़ी है। विदेशों में और विशेष कर यूरोप और अमेरिका जैसे सभ्य देशों में तम्बाकू को जला कर सिगरेट अथवा सिगार के रूप में प्रयोग करते हैं; परन्तु भारत में सूँघ कर, खाकर और पीकर अर्थात् तीन प्रकार से व्यवहृत होता है। वैज्ञानिकों और विशेषकर आयुर्वेदाचार्य तथा डॉक्टरों का कथन है कि तम्बाकू खाने से जितनी हानि करता है, उतनी सिगरेट, हुक़ा और सिगार आदि द्वारा पीने से नहीं करता; क्योंकि अग्नि-स्पर्श से उसका विष अथवा हानिकारक तत्व भस्म हो जाता है। अतः उन व्यक्तियों को, जो तम्बाकू पीने के विरोधी और खाने के पक्षपाती हैं, वैज्ञानिकों के इस सिद्धान्त को मनन करना चाहिए। हमारे इस कथन से यह न समझ लेना चाहिए, कि सिगरेट, सिगार आदि के पीने में कोई हानि ही नहीं है। तम्बाकू चाहे खाया जाय या पिया जाय अथवा सूँघा जाय; हानि प्रत्येक दशा में अनिवार्य है और इसे वैज्ञानिकों, आयुर्वेद-शास्त्रियों तथा डॉक्टरों ने एक स्वर से स्वीकार किया है। परन्तु दुःख के साथ लिखना पड़ता है, कि भारत में इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है और युवक दिन पर दिन इसके अधिक आदी होते जा रहे हैं। अतः इसके प्रचार को रोकने का विशेष प्रयत्न होना चाहिए। संसार-प्रख्यात धनी तथा अमेरिकन कारख़ानेदार मिस्टर फ़ोर्ड धूम्रपान के कट्टर विरोधी हैं। वे "माई फ़िलासॉफ़ी ऑफ़ इण्डस्ट्री" (My Philosophy of Industry) नामक पुस्तक में लिखते हैं, "कि धूम्रपान तम्बाकू में एक ऐसी वस्तु मिश्रित है, जो नवयुवकों के लिए महान घातक है। मेरे कारख़ाने में एक भी कर्मचारी धूम्रपान नहीं करता।" कैसा भी व्यक्ति हो, किसी भी देश का रहने वाला हो और कैसा भी उद्योग-धन्धा करता हो, तम्बाकू उसे निश्चय ही हानिकारक होगा। इसका विष रुधिर में मिल कर उसे निर्बल कर देता है और इसको सेवन करने वाले व्यक्ति की उत्साह-शक्ति नष्ट हो जाती है। इसका जो सुस्पष्ट और सर्व-विदित कुप्रभाव दाँत, ओंठ, हथेली और जिह्वा पर पड़ता है, वह उसके विष की तीव्रता का पूरा-पूरा परिचय दे देता है। धूम्रपान करने वाले अथवा तम्बाकू खाने वाले व्यक्ति के स्वाँसोच्छ्वास से एक बहुत ही अरुचिकर दुर्गन्धि आती है और दाँत काले पड़ जाते हैं। सारांश यह कि इससे देश, जाति और व्यक्ति—किसी को भी तनिक लाभ नहीं है। इससे स्वास्थ्य और धन—दोनों को क्षति पहुँचती है। अतः यह सर्वथा त्याज्य है और इसी में देश का कल्याण है।

परन्तु सब से अधिक आश्चर्य की बात तो यह है, कि भारत की अशिक्षित जनता की कौन कहे; यहाँ शिक्षित और उन्नत विचार के महानुभावों में भी इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है। भारत में केवल खाने और शीरे के साथ मिला कर पीने वाला तम्बाकू पैदा होता है। सिगरेट, सिगार आदि यहाँ विदेशों से आता है; इस प्रकार सन् १९२४-२५ में ४९ लाख रुपए की लागत का ४० लाख ५६ हज़ार पाउण्ड तम्बाकू भारत में विदेशों से आया है। सिगरेट आदि वस्तुएँ आयात-कर अत्यधिक होने से भारत में मँहगी पड़ती हैं, अतः अब चेष्टा की जा रही है कि भारत में ही तदुपयोगी तम्बाकू पैदा किया जाए। यह तो हुई "अशिक्षित" और "असभ्य" भारत की बात। अब ज़रा इङ्गलैण्ड की कथा भी सुन लीजिए। इङ्गलैण्ड धूम्रपान में प्रति वर्ष करोड़ों रुपया ख़र्च करता है। वहाँ पर इस दुर्व्यसन की उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। सन् १९२४ ई० में वहाँ ४३,७२,९३,-०४४ पाउण्ड सिगरेट्स ख़र्च हुई थीं और सन् १९२८ ई० में यह संख्या ४४,२६,८८,५६० पाउण्ड तक पहुँच गई। सिगार पीने वाली स्त्रियों की संख्या भी प्रति दिन बढ़ती जा रही है। पिछले पाँच वर्षों में धूम्रपान करने वाली स्त्रियों की संख्या में ५ प्रति शत वृद्धि हुई है। ब्रिटेन में प्रति दिन ४३,४१,३८४ सिगरेट ख़र्च होती है और प्रति वर्ष ३,८२,९३,९९,९६० सिगार फूँक दिए जाते हैं। इस प्रकार स्त्री-पुरुष सब मिला कर प्रत्येक व्यक्ति पीछे ९१२ सिगार खपत होते हैं। अमेरिका में यह अनुमान ८५६ तक ही पहुँचा है। ब्रिटेन में सिगरेट का धन्धा करने वाले व्यक्तियों की संख्या ४,५८,१७१ है।

—हरेन्द्र याज्ञिक

* * *

चिउँटी की आयु

चिउँटी की पूर्ण आयु औसत से ८ और १० वर्ष होती है, किन्तु बहुत सी चिउँटियाँ, जिनको पकड़ कर क़ैद कर रक्खा गया था, १५ वर्ष की अवस्था तक जीवित रह सकी थीं।

* * *

कभी पानी न पीने वाले पशु

चीन, जापान तथा अन्य पूर्वीय देशों में एक प्रकार का हिरन होता है, जिसे अङ्गरेज़ी में Gazalle कहते हैं। और दक्षिणी अमेरिका में एक पशु होता है, जो ऊँट की तरह होता है, परन्तु उसके पीठ में कूबड़ नहीं होता और इसे अङ्गरेज़ी में Lama कहते हैं। इन प्राणियों को कभी तृषा नहीं सताती। उनके शरीर की रचना ही इस प्रकार की है कि प्यास की उन्हें किञ्चित भी आवश्यकता नहीं होती।

* * *

(२९वें पृष्ठ का शेषांश)

६ ऑर्डिनेन्सों का तथा भारत के अधिकार के सम्बन्ध में दिए हुए भारत-सरकार के ख़रीते का और जेलों में सड़ने वाले ५०,००० सत्याग्रही क़ैदियों का भी कुछ ख़याल किया था? क्या ये सब यह दर्शाते हैं, कि लॉर्ड इरविन भारत को महान सङ्कट से बचा रहे हैं? जब भारतवासी ही ख़ुद ऐसी बातों की तारीफ़ करने को तैयार हैं, तो विदेशी वाइसराय क्यों ऐसी बातें न करें?

—"बॉम्बे क्रॉनिकल" (अङ्गरेज़ी)

* * *

प्रश्नोत्तर

[श्री० रमेशप्रसाद जी, बी० एस-सी०]

दाँत चमकते क्यों हैं?

दाँत एक प्रकार की हड्डी है। बिना कृत्रिम पॉलिश के हड्डियाँ चमकती नहीं हैं। दाँतों का चमकना एक विशेषता रखता है। इनके चमकने का कारण एक विषैला गैस 'फ़्लोरिन' है। 'फ़्लोरिन' बड़ा ही ज़हरीला गैस होता है। इसके संसर्ग में कोई भी पदार्थ अपनी असली अवस्था में नहीं रह सकता। सभी जीवित पदार्थों को यह खा डालता है। तो भी इसका बहुत थोड़ा अंश दाँतों की चमक बनाए रखने के लिए आवश्यक है। रासायनिक संयोग में यह पदार्थ हमारे भोजन पदार्थों से इन्हें मिल जाता है।

* * *

मलाई दूध के ऊपर क्यों उठ आती है?

दूध में तेल और चर्बी के बहुत ही छोटे-छोटे कण मिले रहते हैं। ये पानी से हलके होते हैं, किन्तु ये इतने छोटे होते हैं, कि उन्हें दूध के सतह पर आने में बहुत समय लग जाता है। ये बहुत धीरे-धीरे तैरते हैं। इसी कारण जो दूध कुछ देर तक रख छोड़ा जाता है, उसकी सतह पर मलाई जम जाती है। जब दूध मथा जाता है, तब ये कण एक साथ मिल जाते हैं और मक्खन रूप में परिणत हो जाते हैं।

* * *

साबुन मैल क्यों छुटाता है?

साबुन में एक ऐसा पदार्थ होता है, जो वस्तुओं से जकड़ जाता है। जिस प्रकार तेल पानी के ऊपर फैल जाता है, उसी प्रकार यह पदार्थ भी वस्तुओं पर फैल जाता है। जब आप हाथ धोते हैं, तब इस पदार्थ की एक पतली झिल्ली आपके हाथ के चमड़े पर फैल जाती है। यदि आपके हाथ में किसी प्रकार का मैल लगा हो, तो यह उसके नीचे भी प्रवेश करता है और मैल को ढीला बना देता है, जिसमें वह पानी से धोया जा सके। इसके बाद जब आप पानी से हाथ धोते हैं, तब साबुन की झिल्ली मैल के साथ धुल जाती है और आपका हाथ साफ़ हो जाता है।

Registered No. A—2085

सर्वश्रेष्ठ राजनैतिक एवं सामाजिक (Socio-Political) पत्रिका

हिन्दी-संस्करण :

वार्षिक चन्दा	...	६॥) रु०
छः माही चन्दा	...	३॥) रु०
एक प्रति का मूल्य		॥=)



उर्दू-संस्करण :

वार्षिक चन्दा	...	६॥) रु०
छः माही चन्दा	...	३॥) रु०
एक प्रति का मूल्य		॥=)

के ग्राहक बनिए

हिन्दी-संस्करण के सम्पादक :—श्री० रामरखसिंह सहगल, सम्पादक 'भविष्य'

उर्दू-संस्करण के सम्पादक :—मुन्शी कन्हैयालाल, एम० ए०, एल्-एल्० बी०

नवीन विशेषताएँ

(१) नवम्बर से 'चाँद' में सामाजिक सुधार सम्बन्धी लेखों के अतिरिक्त गम्भीर राजनीति का भी समावेश हो जाने से 'चाँद' में चार चाँद लग गए हैं।

(२) ख़ास मैकेनिकल काग़ज़ का प्रबन्ध हो जाने से लगभग प्रत्येक पृष्ठ पर एक चित्र दिया जाता है। इस प्रकार सैकड़ों चित्र आपको 'चाँद' में मिलेंगे।

(३) तिरङ्गा अथवा रङ्गीन चित्र एक के बजाय दो कर दिए गए हैं।

(४) चुटीले सामयिक कार्टूनों का भी विशेष प्रबन्ध किया गया है।

(५) इतना सब होते हुए भी—केवल प्रचार की दृष्टि से फ़ी कॉपी का मूल्य बारह आने से घटा कर दस आने, इसलिए कर दिया गया है, ताकि जो लोग एक मुश्त चन्दा देने में असमर्थ हों, वे हमारे एजेण्टों अथवा मेसर्स ए० एच० व्हीलर कम्पनी के विभिन्न बुक-स्टॉलों से प्रत्येक मास एक कॉपी ख़रीद कर लाभ उठा सकें।

कुछ चुनी हुई सम्मतियाँ

आज—इस पत्र ने निर्भयता और योग्यता के साथ समाज-सेवा किया है। 'चाँद' ने बहुत घाटा उठाया है। हमें आशा है, स्वतन्त्र विचार के पक्षपाती हिन्दू सज्जन यथाशक्ति उसकी सहायता करेंगे।

मारवाड़ी-अग्रवाल—पत्रिका में यह पढ़ कर हमें अत्यन्त वेदना हुई कि इस विद्वान युगल जोड़ी को अब तक लगभग ८,०००) का घाटा सहना पड़ा है। भारत में अब भी ऐसे-ऐसे देश-भक्त और समाज-सेवी धनी-मानी व्यक्ति हैं, जो चाहें तो इस देशोपकारी पत्रिका के सञ्चालकों का बोझ सहज ही में उतार सकते हैं। हम उनका ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए मारवाड़ी अग्रवाल के प्रत्येक पाठक से अनुरोध करते हैं कि वे 'चाँद' के ग्राहक स्वयं बनें तथा अपने इष्ट-मित्रों को बनाकर इसे आर्थिक कष्ट से मुक्त करें......।

आर्यमित्र—'चाँद' स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी, हिन्दी का सुप्रसिद्ध मासिक पत्र है। चित्र और लेख सब भावपूर्ण रहते हैं। वे समाज के भीषण अत्याचार का दुर्दृश्य हृदय-पट पर अङ्कित कर देते हैं।

माधुरी—ऐसे सुसम्पादित और सुसञ्चालित पत्र को भी घाटा उठाना पड़ रहा है, यह बात हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए लज्जाजनक है। स्त्री-शिक्षा के पक्षपाती हिन्दी-प्रेमियों से हमारा अनुरोध है कि वे अपनी माँ, बेटी-बहू और बहिनों के लिए 'चाँद' अवश्य ख़रीदें।

मतवाला—सरस्वती, मनोरमा और 'चाँद' के विशेषाङ्क इस समय हमारे सामने हैं। प्रयाग के इन तीनों मासिक पत्रों के विशेषाङ्क बड़े सुन्दर हुए हैं, सच पूछिए तो तीनों में पहिला नम्बर 'चाँद' का है। नाम भी प्यार के क़ाबिल, रूप भी वैसा ही; गुण भी उतना ही।

वर्तमान—प्रयाग के प्रियदर्शक सहयोगी 'चाँद' का गौरव और विमल छटा उत्तरोत्तर बढ़ रही है।

अर्जुन—सहयोगी 'चाँद' दिनोंदिन उन्नति कर रहा है। सहयोगी के रङ्ग-रूप ने "सरस्वती" और "माधुरी" के दिल में हलचल पैदा कर दी है; हमें हर्ष इस बात का है कि सहयोगी सुधार का पक्षपाती है और उन्नतिशील विचार को रखता है!

☞ 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.


CSDS
centre for the
study of developing
societies


BRITISH
LIBRARY